

व्यवसायिक तरकारी खेतीले भरतपोखरी बागमाराकामहिलाहरुमा पारेको आर्थिक  
तथा सामाजिक प्रभाव

त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय अन्तर्गत  
ग्रामीण विकास विषयका स्नातकोत्तर तहको दोस्रो वर्षको आशिंकपत्र पुरा गर्ने  
प्रयोजनका लागि तयार पारिएको  
शोधपत्र

शोधार्थी  
सुशीला भण्डारी  
परीक्षा रोल नं. २९८००१९  
त्रि.वि.दर्ता नं. ६-२-२९८-६६-२००८

कलिका बहुमुखी क्यामपस  
पोखरा-१४, काजीपोखरी  
कास्की  
२०७९

## सिफारिस पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कालिका बहुमुखी क्याम्पस, ग्रामीण विकास विषयको स्नातकोत्तर तह उपाधीको आंशिक आवश्यकता परिपूर्तिको निमित्त (दशौँ पत्र) शोधार्थी छात्रा सुशीला भण्डारीले “व्यवसायिक तरकारी खेतीले भरतपोखरी बागमाराका महिलाहरूमा पारेको आर्थिक तथा सामाजिक प्रभाव” शीर्षकमा ग्रामीण विकास विषयमा मेरो निर्देशन तथा सुपरिवेक्षणमा यो शोधपत्र तयार गर्नु भएको छ र निकै परिश्रम पूर्वक तयार पारिएको यस शोधकार्यबाट म पूर्णरूपमा सन्तुष्ट छु रप्रस्तुत शोधपत्रलाई आवश्यक मूल्याङ्कनको लागि सिफारिस गर्दछु ।

मिति : २०७९/१०/१५

.....  
तिलकराज शर्मा  
शोधनिर्देशक  
ग्रामीण विकास विभाग  
कालिका बहुमुखी क्याम्पस, पोखरा, नेपाल

## स्वीकृत पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कालिका बहुमुखी क्याम्पस, ग्रामीण विकास विषयको स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षका विद्यार्थी श्री सुशीला भण्डारीले ग्रामीण विकास तर्फको दशौं पत्रको प्रयोजनका लागि यस विभागमा प्रस्तुत गर्नु भएको “व्यवसायिक तरकारी खेतीले भरतपोखरी बागमाराका महिलाहरूमा पारेको आर्थिक तथा सामाजिक प्रभाव” शीर्षकमा शोधपत्र मूल्याङ्कन समितिवाट ग्रामीण विकास विषयको स्नातकोत्तर उपाधिका लागि उचित ठहरिएकाले स्वीकृति प्रदान गरिएको छ ।

### शोधपत्र मूल्याङ्कन समितिः

तिलकराज शर्मा .....  
शोधनिर्देशक

प्रा.डा. विकास कुमार के.सी. ....  
बाट्य परीक्षक

विरन्जी गौतम .....  
क्याम्पस प्रमुख

मिति : २०७९/१०/१५

## कृतज्ञताज्ञापन

सर्वप्रथम “व्यवसायिक तरकारी खेतीले भरतपोखरी बागमाराका महिलाहरुमा पारेको आर्थिक तथा सामाजिक प्रभाव” शीर्षकमा शोध गर्ने शुभ अवसर र अनुमति दिई मार्ग निर्देशन गर्ने त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कालिका बहुमुखी क्याम्पस, काजीपोखरी, कास्कीप्रति आभार व्यक्त गर्दछु । अति व्यस्ताका बाबजुत पनि पटक पटक आफ्नो अमूल्य समय दिएर शोधकार्यलाई सफल बनाउन आवश्यक सल्लाह, सुझाव र मार्ग निर्देशन गर्नु हुने मेरो आदरणीय गुरु, शोध निर्देशक आदरणीय गुरु श्री तिलकराज शर्माज्यू प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त गर्न चाहन्छु ।

आफ्नो अमूल्य समय दिई मलाई सल्लाह सुझाव तथा मार्ग निर्देशन गर्नुहुने बाह्य परीक्षक प्रा.डा. विकास कुमार के. सी.ज्यू प्रति हृदय देखिनै कृतज्ञता ज्ञापन गर्न चाहन्छु । कालिका बहुमुखी क्याम्पसका मेरो आदरणीय गुरुहरुतथा क्याम्पस परिवार प्रति आभार व्यक्त गर्दछु ।

यो शोधपत्र तयार पार्नका लागि मलाई आजका दिनसम्म आइपुगदा मेरो हरेक काममा हौसला र प्रेरणा दिनुहुने मेरो पूजनिय बुबा विरवहादुर भण्डारी, आमा कमलादेवी भण्डारी, दिदी, बहिनी र भाई जसले अनुसन्धान क्षेत्रमा सँगै गएर सहयोग गर्नुभयो र मेरो काममा थप हौसला प्रदान गर्नुभयो । त्यसका साथै मेरो ससुराबुबा राम बानिया र सासुआमा रुकमाया के.सी., श्रीमान अमित बानिया ज्यूको साथ सहयोगले मलाई यो शोधपत्र पुरा गर्ने थप हौसला र अवसर मिल्यो वहाँहरुप्रति हृदयदेखि नै नमन गर्न चाहन्छु ।

त्यस्तै गरी आफ्नो अमूल्य समय अनुभव र भोगाई बताई सहयोग गर्नुहुने बागमाराका सम्पूर्ण व्यवसायिक तरकारी खेतीमा संलग्न महिला दिदीबहिनीहरु प्रति आभार तथा कृतज्ञता प्रकट गर्दछु ।

सुशीला भण्डारी

२०७९/१०/१५

## विषय सूची

**सिफारिस पत्र**

**स्वीकृति पत्र**

**कृतज्ञता ज्ञापन**

**विषय सूची**

**शोधसार**

**पृष्ठ**

*ii*

*iii*

*iv*

*v*

*viii*

### अध्याय एक : परिचय

|                               |                                       |    |
|-------------------------------|---------------------------------------|----|
| १.१                           | अध्ययनको पृष्ठभूमी                    | १  |
| १.२                           | अवधारणात्मक साहित्य समिक्षा           | ५  |
| १.३                           | सैद्धान्तिक साहित्य समिक्षा           | ७  |
| १.३.१                         | विकासमा नारीवाद सैद्धान्तिक अवधारणा   | ७  |
| १.३.२                         | आर्थिक सिद्धान्त                      | ११ |
| १.३.३                         | लैड्गिक अवधारणा                       | ११ |
| १.३.४                         | लैड्गिक विकासका रणनितिहरु             | ११ |
| १.३.५                         | समाजमा विभिन्न पक्षमा महिलाको स्तर    | १४ |
| १.४                           | व्यवहारिक साहित्य समिक्षा             | १५ |
| १.५                           | अनुसन्धान अन्तर                       | १७ |
| १.६                           | समस्याको कथन                          | १७ |
| १.७                           | अध्ययनको उद्देश्य                     | १९ |
| १.८                           | अध्ययनको औचित्य तथा महत्व             | १९ |
| १.९                           | अध्ययनको सिमा                         | २० |
| १.१०                          | अध्ययनको संगठन                        | २० |
| १.११                          | शब्दावलीको परिभाषा                    | २१ |
| १.१२                          | अवधारणात्मक खाँका                     | २२ |
| अध्याय दुई : अनुसन्धान पद्धति |                                       | २५ |
| २.१                           | अध्ययन क्षेत्र                        | २४ |
| २.२                           | अनुसन्धानको ढाँचा                     | २४ |
| २.३                           | तथ्याङ्को स्रोत एवम् प्रकृति          | २४ |
| २.४                           | तथ्याङ्को आकार र नमुना छनोट प्रक्रिया | २५ |
| २.५                           | तथ्याङ्क संकलन विधि                   | २५ |
| २.५.१                         | वैयक्तिक अध्ययन                       | २५ |
| २.५.२                         | अवलोकन                                | २६ |
| २.५.३                         | अन्तरवार्ता अनुसूची                   | २६ |
| २.६                           | तथ्याङ्को विश्वसनियता एवम् प्रमाणिकता | २६ |
| २.७                           | तथ्याङ्क विश्लेषण र प्रस्तुतीकरण      | २७ |

|  |   |    |
|--|---|----|
| २.८  | नैतिक स्पष्टिकरण  | २८ |
| अध्ययन तीन : अध्ययन क्षेत्रमा तरकारी उत्पादनको अवस्थाको विश्लेषण |   |    |
| ३.१  | जनसाङ्गत्यिक विशेषता  | २८ |
| ३.१.१  | जातिगत विवरण  | २८ |
| ३.१.२  | भाषा र धार्मिक विवरण  | २८ |
| ३.१.३  | उमेरगत विवरण  | २९ |
| ३.१.४  | उत्तरदाताको शैक्षिक अवस्था                                      | ३० |
| ३.१.५  | उत्तरदाताको तरकारी बाहेक अन्य पेशा                              | ३० |
| ३.२  | तरकारी उत्पादनको महत्व र अवस्था                                 | ३१ |
| ३.३  | उत्तरदाताको जमिनको अवस्था                                       | ३३ |
| ३.४  | उत्तरदाताको जमिनमा स्वामित्वको अवस्था                           | ३३ |
| ३.५  | सिचाइको अवस्था  | ३४ |
| ३.६  | उत्पादन सम्बन्धि तालिम  | ३५ |
| ३.७  | उत्पादन गर्ने तरकारीका प्रकार                                   | ३६ |
| ३.८  | व्यवसायिक तरकारी उत्पादनमा पारिवारिक संलग्नता                   | ३७ |
| ३.९  | तरकारी बेच्ने उत्तरदाताको विवरण                                 | ३८ |
| ३.१०   | मल, बिउँ र प्रविधिको प्रयोग                                     | ३८ |
| ३.११   | अध्ययन क्षेत्रमा उत्पादन गरिने मुख्य तरकारीहरू                  | ३९ |
| ३.१२   | व्यवसायिक तरकारी खेती पश्चात महिलाहरूको जीवनस्तरमा परेको प्रभाव | ४० |
| ३.१२.१   | आर्थिक क्षेत्रमा परेको प्रभाव                                   | ४० |
| ३.१२.१.क   | वार्षिक आम्दानी   | ४० |
| ३.१२.१.ख   | बचत   | ४२ |
| ३.१२.१.ग   | खर्च  | ४२ |
| ३.१२.२   | सामाजिक क्षेत्रमा पारेको प्रभाव                                 | ४३ |
| ३.१२.२.क   | संस्थामा आबद्ध  | ४४ |
| ३.१२.२.ख   | शैक्षिक अवस्था  | ४४ |
| ३.१२.२.ग   | अनुदान/इनाम पुरस्कार  | ४५ |
| अध्याय चार : व्यवसायिक तरकारी खेती गर्दा आइपरेका समस्या र चुनौती |   |    |
| ४.१  | व्यवसायिक तरकारी खेती गर्दाका समस्याहरू                         | ४६ |
| ४.१.१  | पारिवारिक सहयोगको कमी   | ४६ |
| ४.१.२  | मल तथा बिउँबिजनको अभाव  | ४७ |
| ४.१.३  | सिपको अपर्याप्तता   | ४७ |
| ४.१.४  | सिचाइको अपर्याप्तता   | ४७ |
| ४.१.५  | स्थानीय बजार व्यवस्थापन नहुनु                                   | ५७ |
| ४.१.६  | दुवानीको समस्या   | ५८ |
| ४.२  | व्यवसायिक तरकारी खेतीका चुनौतिहरू                               | ५८ |

|  |                              |    |
|--|------------------------------|----|
| ४.२.१  | प्रतिस्पर्धा                 | ४८ |
| ४.२.२  | प्राकृतिक प्रकोप             | ४८ |
| ४.२.३  | तरकारीहरु कुहिने तथा विग्रने | ४९ |
| ४.२.४  | विचौलियाको प्रभाव            | ४९ |
| <b>अध्याय पाँच : सारांश र निष्कर्ष</b>         |                              |    |
| ५.१  | सारांश                       | ५६ |
| ५.२  | मुख्य प्राप्तीहरु            | ५२ |
| ५.३  | निष्कर्ष                     | ५४ |
| ५.४  | सुझाव                        | ५६ |
| <b>सन्दर्भ सामग्रीहरु</b>                      |                              |    |
| अनुसूची १ - वैयतिक अध्ययन                      |                              | ६० |
| अनुसूची २ - प्रश्नावली                         |                              | ७२ |
| अनुसूची ३ - अध्ययन क्रममा लिएका केही तस्वीरहरु |                              | ७७ |

## तालिका सूची

|           |   | पृष्ठ |
|-----------|---|-------|
| ३.१.१     | जातिगत अवस्था   | २८    |
| ३.१.३     | उत्तरदाताको उमेरगत विवरण  | २९    |
| ३.१.४     | शिक्षाको आधारमा साक्षरता  | ३०    |
| ३.१.५     | तरकारी खेतीको अलावा अन्य खेती, पेशा र व्यवसायको आधारमा<br>उत्तरदाता |       |
| ३.२       | अध्ययन क्षेत्रमा उत्पादन हुने तरकारी र तिनको उत्पादन समय            | ३१    |
| ३.३       | उत्तरदाताको जमिनको अवस्था   | ३२    |
| ३.४       | उत्तरदाताको जमिनमा स्वामित्वको विवरण                                | ३३    |
| ३.६       | तालिमको आधारमा उत्तरदाता  | ३५    |
| ३.७       | तरकारी उत्पादनका आधारमा उत्तरदाता                                   | ३६    |
| ३.८       | परिवारका सदस्यको संलग्नताको विवरण                                   | ३७    |
| ३.९       | तरकारी बेच्ने आधारमा उत्तरदाता                                      | ३८    |
| ३.१०      | मल, बिउ र प्रविधिको प्रयोगको विवरण                                  | ३९    |
| ३.१२.१.क. | कृषकहरुको वार्षिक आम्दानी विवरण                                     | ४१    |
| ३.१२.१.ख. | बचत गर्ने संख्याको विवरण  | ४२    |
| ३.१२.१.ग. | खर्चको आधारमा उत्तरदाता   | ४३    |
| ३.१२.२.क  | संस्थामा आबद्धताको आधारमा उत्तरदाता                                 | ४४    |
| ३.१२.२.ख. | अध्ययन क्षेत्रको सन्तानको शैक्षिक अवस्था                            | ४५    |
| ३.१२.२.ग. | उत्तरदातालाई पुरस्कारको अवस्था                                      | ४५    |

## शोधसार

यो “व्यवसायिक तरकारी खेतीले भरतपोखरी बागमाराका महिलाहरुमा पारेको आर्थिक तथा सामाजिक प्रभाव” सम्बन्धी गरिएको एक अध्ययन हो । यस शोधपत्रको मुख्य उद्देश्य व्यवसायिक तरकारी खेतीले महिलाहरुमा पारेको आर्थिक तथा सामाजिक अवस्थामा आएको परिवर्तन पहिल्याउने र व्यवसायिक तरकारी खेतीमा ग्रामीण महिलाहरुले भोग्ने समस्या र चुनौतीहरुको बारेमा अनुसन्धान गरिएको छ ।

यस अध्ययनको लागि कास्की जिल्लाको पोखरा महानगरपालिका भरतपोखरी, बागमारा वडा नं. ३३ मा व्यवसायिक तरकारी खेतीमा गर्ने जनसंख्या १०५ रहेको र जसमध्ये ६५ जना महिलाहरु व्यवसायिक तरकारी खेतीमा संलग्न पाइयो । व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गरीरहेका ६५ जना महिलाहरुको उद्देश्यमूलक नमूना छनौट विधि अनुसार छनौट गरीएको हुँदा संगणना विधिवाट सूचना संकलन गरिएको छ । जसअनुसार अनुसन्धानलाई विश्वासनिय उद्देश्यमूलक र स्वस्थ्यमूलक बनाउने प्रयास गरिएको छ । यस शोधपत्र तयार गर्नका लागि प्राथमिक र द्वितीय दुवै किसिमको तथ्याङ्कहरुको प्रयोग गरिएको छ, भने यस अध्ययनलाई वर्णनात्मक विधिको प्रयोग गरी विश्लेषण गरिएको छ । यस अध्ययनको अनुसार व्यवसायिक तरकारी खेतीमा लागे पछि आर्थिक स्तरको विकास सँग सँगै महिलाको जीवनपद्धतिमा नै परिवर्तन भएको यस अध्ययनले देखाएको छ । आर्थिक सुधारसँगै उनीहरुको हक अधिकार र स्वतन्त्रामा सुधार भएको पाईन्छ । यसै गरी उत्पादन पछि आर्थिक सुधारसँगै महिलाहरु आत्मनिर्भर भएको र उनीहरुको परापूर्वक कालदेखि नै तरकारी खेतीको लागि प्रत्यात ठाउँ बागमारा रहेकोले यस क्षेत्रका अधिकाश घर परिवार तरकारी खेतीमा नै निर्भर रहेका छन् । व्यवसायिक तरकारी खेतीमा संलग्न महिलाहरुको आर्थिक तथा सामाजिक अवस्थालाई हेर्दा महिलाहरुको आर्थिक वृद्धि, समाजमा मानसम्मान इमान, विभिन्न संघसंस्थामा आबद्ध, स्वास्थ्यमा सुधार र आत्म निर्भर भएको देखिन्छ ।

व्यवसायिक तरकारी खेतीमा लाग्दा विभिन्न समस्या तथा चुनौतिहरु पनि सामना गर्नु परेको देखिन्छ । महिलाहरुले विभिन्न समस्या तथा चुनौतीहरुलाई अगालदै तरकारी खेतीलाई अगाडि बढाएको पाइयो । पारिवारी सहयोगको कमी, बेलामा मल तथा विऊँबिजन नपाउनु, सीपको अपर्यातता, सिचाइको असुविधा, स्थानिय बजार व्यवस्थापन

नहुनु तथा दुवानीको समस्याले गर्दा तरकारी खेती गर्ने महिलाहरूलाई असर परेको देखिन्छ । त्यसको साथै तरकारी खेतीगर्ने क्रममा विभिन्न चुनौतिहरूको पनि सामना गर्नु परेको देखिन्छ । तराई तथा भारतबाट आएको सस्तो तरकारीसँग स्थानिय तरकारीले प्रतिस्पर्धा गर्नुपर्ने, प्राकृतिक प्रकोप, तरकारीहरू कुहिने तथा बिग्रने र बिचौलियाको प्रभावजस्ता चुनौतिहरू देखिन्छ ।

व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतिमा लागे पछि महिलाहरूको आत्मविश्वास बढेको, इज्जतमान प्रतिष्ठा बढेको देखिन्छ । जसले गर्दा उनीहरूको व्यक्तित्व विकासमा पहिले भन्दा बृद्धि भएको पाइन्छ । व्यवसायिक तरकारी खेती गर्ने महिलाहरूलाई उचित तालिम दिई उनीहरूले उत्पादन गरेको तरकारीहरू सङ्कलन् गरी स्थानिय बजारमा सजिलै पुऱ्याउन सके कृषक तथा उपभोक्ता दुबैलाई मार नपर्ने देखिन्छ । कृषकहरूले पनि आफ्नो परिश्रमको उचित मूल्य पाउने तथा उपभोक्ताले पनि सस्तोमा स्थानिय तरकारी किन्न पाउँछन् । यसरी व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गर्ने महिलाहरूलाई तरकारी उत्पादन वृद्धि गर्ने हौसला मिल्ने देखिन्छ ।

## अध्याय एक

### परिचय

#### १.१ अध्ययनको पृष्ठभूमि

रसायन/वनस्पतिशास्त्रीहरूले उल्लेख गरेअनुसार सर्वप्रथम मानवले गहुँ र जौको खेती गरेका थिए । यसको खेती सर्वप्रथम अफगानिस्तानबाट सुरु गरिएको उल्लेख छ । नवपाषण युगमा मानवले प्रयोग गरेका माटाका भाडाहरूमा जौ तथा गहुँको अवशेष र जौ तथा गहुँको छाप समेत पाइएको छ । यसका आधारमा भन्न सकिन्छ कि मानवले सर्वप्रथम गहुँ र जौबाट नै कृषि कार्यको थालनी गरेको थियो ।

दक्षिणी इराक र सिरियाबाट सुरुवात भएको जड्गली कृषि उपजपछि भारतीय उपमहादीपमा गहुँको उत्पादन सुरु गरियो । त्यसपछि आलु, गोलभेडा, मरिच आदिको उत्पादन सुरु हुन थाल्यो मध्ययुगीन मुस्लिम किसानहरूले धान, उखु फलफूल, कपास लगायतका उपजहरू लगाउन थाले । सिचाइ प्रणालीको विकास हुँदै गयो र फलफूल खेती, पशुपालन, मत्स्यपालन, पन्छीपालन आदिको विकास हुँदै गयो । १८ औं शताब्दीमा आइपुगदा कृषि क्षेत्रलाई उच्चतम विकासमा पुऱ्याइयो । सन् १९९६ सम्म विश्वमा कृषि पेशा अवलम्बन गर्नेहरूको सङ्ख्या ४२प्रतिशत रहेकोमा सन् २००६ मा आइपुगदा त्यस सङ्ख्यामा ६% ले कमी आई ३६प्रतिशतमा भरेको थियो । हाल विश्वमा करिब ३५ प्रतिशत %श्रमशक्ति कृषि पेशामा निर्भर रहेको छ (सुवेदी, २०६५: १५२-१५३) ।

नेपालमा कृषिको विकासक्रमलाई हेर्दा गोपालवंशीहरूको शासनकाल देखि नै सामान्य कृषिको सुरुवात भएको पाइन्छ । गोपालवंशीहरू गाईपालक थिए । उनीहरूले गाईसँगै सामान्य खेतीपाती पनि गर्न थाले । गोपालवंशीहरूलाई लडाँझमा हराएर महिषपालहरूले शासन गरेका थिए । गाई पाल्ने गोपालवंशी तथा भैसी पाल्ने महिषपालहरूको शासन व्यवस्थाको अर्थतन्त्र पशुपालनमा नै आधारित थियो । त्यसैले गोपालवंशी र महिषपालहरूको समयमा सामान्य खेतीपातीको सुरुवात भएको मानिन्छ । यसबाट के प्रष्ट हुन्छ भने विश्व सभ्यताको विकासको क्रममा अन्य क्षेत्रमा देखिए सरह नेपालमा पनि पशुपालन र त्यसपछि कृषि व्यवसाय तर्फ उन्मुख भएको पाइन्छ । काठमाडौं उपत्यकामा आभिरहरूलाई हराएर किरातहरूले शासन व्यवस्था चलाएका थिए । किराँतकाल कृषिको युग थियो । त्यस

समयसम्म पनि मानिसहरूकृषिको अलावा पशुपालन पनि गर्दथे तर मानिसहरूको मुख्य पेशा चाहिँ कृषि थियो । लिच्छवीकालमा राज्यको तर्फबाट र जनताको तर्फबाट पनि खेतीपाती गरिन्थ्यो । यस कालमा धान, गहुँ, तेलहन, उखु, कपास, फलफूल र सागसब्जी प्रमुख रूपमा लगाइने बालीनाली थिए । कृषि उत्पादन गरेवापत भागकर र जनताले राज्यलाई तिर्नु पर्दथ्यो । त्यसैगरी मध्यकालमा भौगोलिक परिस्थिति अनुसार अलग अलग प्रकारको कृषि प्रणाली थियो । काठमाडौं उपत्यकामा खनेर खेती गरिन्थ्यो तर उपत्यका बाहिर गहा बनाएर गोरुले जोतेर खेती गर्ने गरिन्थ्यो । त्यसै समयमा जमिनलाई अब्बल, दोयम, सिम र चारु गरी चार भागमा वर्गीकरण गरिएको थियो । खेतीको विकासका लागि निजी र सरकारी कुलाको पनि व्यवस्था गरिएको पाइन्छ (दाहाल र खतिवडा, २०५८: ६४-६९) ।

कास्की जिल्लामा वि.स. २०३३ सालमा जिल्ला कृषि कार्यालयको स्थापना पश्चात मात्र व्यवसायिक रूपमा कृषकहरू कृषि कार्यमा लागेको बताइन्छ । विशेष गरी २०४० सालपछि सेती नहर /चाइना नहर सञ्चालनपछि मात्र पोखरामा तरकारी उत्पादन गर्न सुरु गरिएको छ । यसभन्दा अघि पोखराका विभिन्न क्षेत्रहरूमा सिचाईको सुविधा नभएकोले कोदो, मकै मात्र उत्पादन हुन्थ्यो । नहरहरूको विस्तारसँगै कास्की जिल्लामा व्यवसायिक तरकारी उत्पादनको मात्रा बढौ गई व्यवसायिक रूपमा अघि बढेको पाइन्छ (भुसाल, २०६९) ।

प्रधानमन्त्री कृषि आधुनिकीकरण परियोजनामा हाल सम्म २,७७६ साना व्यवसायिक कृषि उत्पादन केन्द्र, ३३६ व्यवसायिक कृषि उत्पादन केन्द्र, ६९ व्यवसायिक कृषि उत्पादन तथा प्रशोधन केन्द्र र १४ बृहत् व्यवसायिक कृषि उत्पादन तथा औद्योगिक केन्द्र मार्फत कृषि उत्पादनमा आवश्यक मल, विज्ञान, सिंचाइ उपकरण, मत्स्य पोखरी निर्माण, बाली तथा पशु विमा अनुदानको व्यवस्था गरिएको छ (आर्थिक सर्वेक्षण, २०७५/०७६) ।

नेपाल गाउँ नै गाउँले भरिएको कृषि प्रधान देश हो । नेपालका अधिकांश जनताहरू ग्रामीण क्षेत्रमा नै बसोबास गर्दछन् । ग्रामीण क्षेत्रका जनताको मुख्य पेसा कृषि नै रहेको छ । नेपालको विकास भन्नु नै ग्रामीण क्षेत्रको विकास हो । जबसम्म गाउँका विकास हुँदैन तबसम्म राष्ट्रको उन्नति, प्रगति र सम्झौताको कल्पना समेत गर्न सकिन्दैन । गाउँको विकास गर्नु तिनीहरूले अबलम्बन गरेको परम्परागत पेशा कृषिमा आधुनिकीकरण गरी सुधार गर्नुपर्दछ । नेपालको कुल व्यापार घाटा कम गर्न प्रतिवर्त्ति आय बढाउने र ग्राहस्थ

उत्पादन वृद्धि गर्न सर्वप्रथम कृषिमा सुधार गर्न आवश्यक रहेको कुरामा विज्ञहरू एकमत देखिन्छन् । नेपालको कुल जनसङ्ख्याको ८६ प्रतिशत जनताहरू ग्रामीण क्षेत्रमा बसोबास गर्दछन् । जसमा हालसालै गरिएको सर्वेक्षणले ८२.२ प्रतिशत र जनसङ्ख्या कृषिमा आश्रित रहेको तथ्य पत्ता लगाएको छ (सुवेदी, २०६४) ।

हाम्रो समाजमा महिला र पुरुषबिचको स्थितिलाई हेर्दा भण्डै ५१ प्रतिशत नेपाल जनसङ्ख्या ओगटेको नेपाली महिलाहरूको आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक स्थिति निकै कहाली लाग्दो छ । महिलाहरूलाई केवल घरायसी कामकाजमा मात्र सिमित गरिएको छ । सार्वजनिक तहका उचित अवसरहरू महिलाहरूले उचित ढड्गले उपभोग गर्न पाएका छैनन् । केही छाउपडी, वादी जस्ता सामाजिक संस्कार एवम् बाध्यताले महिलाहरूको जीवन कष्टमय बनाएको थियो ।

हाम्रो समाजमा अझै पनि बहुविवाह, अनमेलविवाह, बोक्सी, एसिड आक्रमण, बलात्कार, दाइजोको नाममा अनेकौ हिंसा जस्ता अनेकौ घटनाहरू दिन प्रतिदिन पत्रपत्रिका, मिडियामा आएको पाइन्छ । समयको परिवर्तनसँग विभिन्न राष्ट्रिय नीति, नियम बने पनि त्यसको उचित कार्यान्वयन हुन सकिरहेको छैन । यसरी अहिलेको समयमा पनि महिलाहरू जन्मेदेखि नम्रुञ्जेल सामाजिक भेदभावको सामना गरिरहनु परेको छ ।

महिलाहरू अनुत्पादक अर्थतन्त्रमा सिमित रहेको पाइन्छ । जस्तै घरधन्दा र कृषिका कामहरू महिला वर्गले गर्ने खेतीपाती, डोको, नाम्लो बुन्ने जस्ता कामहरूलाई आर्थिक गतिविधिको रूपमा गणना गर्ने चलनको विकास भैसकेको छैन । यद्यपी नेपाली अर्थतन्त्रको मेरुदण्डको रूपमा कृषि अर्थतन्त्रलाई लिइन्छ । कृषि कार्यको ६०% उत्पादन महिला श्रमबाट हुने गर्दछ । तर पनि उनीहरूको कामलाई आर्थिक दृष्टिकोणले अनुपत्पादक मानिन्छ (महिला जागरण तथा विकास केन्द्र, २०६२) ।

नेपालको जनगणना २०७८ अनुसार नेपालको कुल जनसङ्ख्या २,९१,९२,४८० पुरोको छ जसमध्ये पुरुषको जनसङ्ख्या १,४२,९१,३११ रहेको छ भने महिलाको जनसङ्ख्या १,४२,०१,१६९ रहेको छ । विगत दश वर्षको सरदरमा वार्षिक वृद्धिदर ०.९३ प्रतिशत देखिन्छ (नेपाल जनगणना, २०७८) नेपाल सरकार ।

कुल ग्राहस्थ उत्पादनमा कृषि क्षेत्रको योगदान बढ्दै गएको छ । आर्थिक वर्ष २०७४/०७५ मा कृषि क्षेत्र र गैरकृषि क्षेत्रको योगदान कुल ग्राहस्थ उत्पादनमा क्रमशः २८.१ प्रतिशत र ७१.९ प्रतिशत रहेको थियो । (केन्द्रिय तथ्याङ्क विभाग, २०७६)

बजारमुखी अर्गानिक र बेमौसमी तरकारी खेती प्रविधि भन्ने पुस्तकमा कृषकहरूले स्वास्थ्यलाई ख्यालमा राखी तरकारी खेतीमा जैविक मलहरू प्रयोग गर्ने कुरा उल्लेख गरेका छन् । कृषकलाई अर्गानिक र बेमौसमी खेतीतर्फ आकर्षित गर्ने विभिन्न तालिमहरू दिनुको साथै चेतनामुलक कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्नुपर्दछ । आज बजारमा छिटो उत्पादित तरकारीहरू प्रशस्त मात्रामा पाइन्छ । यसले सबैको स्वास्थ्यमा प्रतिकूल असर पार्दछ । कृषक आफुले उत्पादन गरेको तरकारी र फलफूललाई व्यवस्थापन गर्न सकेमा कृषकको जीवनस्तर उकास्न सकिन्छ । यस पुस्तकमा बजारमुखी तरकारी खेती, प्राङ्गारिक खेतीबाट हुने फाइदा जैविक विषादीको प्रयोग, बेमौसमी तरकारी उत्पादन गर्ने तरिका, प्लाष्टिक घर बनाउने प्रविधि आदिको बारेमा उल्लेख गरिएको छ (भुसाल, २०६९) ।

नेपालको संविधान २०७२ ले महिलाहरूलाई राज्यका हरेक निकायमा ३३ प्रतिशत सहभागिताको व्यवस्था गरेको छ तर त्यो कार्यान्वयनमा आउन बाँकी नै छ पैत्रिक सम्पत्तिमा समान अधिकार भने पनि अझै पनि व्यवहारमा लागु गरिएको छैन (GON, 2072) । यहाँका महिलाहरू अशिक्षा, गरिबी बेरोजगारी, रुढीवादी सोचका कारण पछाडि परेका छन् । जसको कारण देश विकासको मुल प्रवाहमा महिलाहरू आउन सकेका छैनन् । यसको परिणाम भनेको आर्थिक आयआर्जनमा महिलाको पहुँच कम हुनु हो । कुल जनसङ्ख्याको आधाभन्दा बढी भाग ओगटेका महिलाहरूलाई विकासको मुल प्रवाहमा लैजान नसक्दा देशको विकास हुन सकेको छैन । यही कुरालाई मध्यनजर गर्दै वर्तमान समयमा महिलालाई सामाजिक र आर्थिक अवस्थामा अगाडि ल्याउनका लागि सरकारी तथा गैरसरकारी तबरबाट विभिन्न कार्यक्रमहरू भएका छन् । देशको अर्थतन्त्रको मेरुदण्ड कृषि भएको कारण र अधिकांश महिला ग्रामीण क्षेत्रमा नै बसोबास गर्ने हुँदा देशको आर्थिक अवस्था सुधार गर्न कृषिमा सुधार गर्न आवश्यक देखिन्छ । वर्तमान समयमा तरकारी उत्पादनमा बढी जोड दिएको पाइन्छ । तर सोचेजति प्रगति भने हुन सकेको पाइदैन ।

## १.२ अवधारणात्मक साहित्य समिक्षा

अर्थतन्त्रका विभिन्न क्षेत्रहरूमध्ये कृषि एउटा क्षेत्र हो । मानिसले कुन समयदेखि खेती गर्दै आइरहेका छन् भन्ने बारेमा हालसम्म भरपर्दो र विश्वसनीय तथ्यहरू फेला पार्न सकेका छैनन् । यसै सन्दर्भमा प्रोफेसर कोरोव्किन (Korovkin) आफ्नो पुस्तक "History of the Ancient World" मा भन्दछन् - "करिब १३ हजार वर्ष पहिला हिम ढिक्काहरू परलैदै जान थाले जमिन, जंगल र भाडीहरू देखा पर्दै गए । खान हुने जंगली फल बटुल्ने महिलाले आफूले खाएर फ्याँकेका एउटा फलको बीउबाट उक्त फलको बोट उमेर आएको पता पाइन त्यसपछि महिलाहरूले त्यस्ता बीउहरू रोप्न थाले त्यहीबाट कृषिको शुरुवात भयो भनिन्छ ।" उक्त समय करिब नौ हजार वर्षदेखि दश हजार वर्ष पहिलेको हो(Korovkin, 2061: 262-263)।

आदिम मानवले आफ्नो आहाराका लागि उपयोग र सङ्कलन गरेका कन्दमूल र फलफूलबाट नयाँ ज्ञान सिक्दै गए, उपयुक्त भू-भागमा स्थायी बसोबास गरे जहाँ उनीहरूले पुन उत्पादनका लागि आफूले सङ्कलन गरेका अन्न, फलफूल र कन्दमूलको पहिलो बिउ रोप्न सिकेका थिए । यहीबाट कृषिको सुरुवात भएको मानिन्छ । कृषि प्रणालीको सुरुवात उत्तरी अमेरिकाका आदिवासीहरूले गरेको मानिन्छ । कृषि प्रणालीको सुरुवात गर्नुपूर्व नदी किनार र तटीय इलाकाहरूमा पाइने जंगली जातको धानको उपयोग गर्दथे । एसिया र इरानको पठार कैयौं स्थानहरूमा आजपनि जंगली धान र गहुँ उमेरको पाइन्छ । कृषि सामूहिक प्रयासबाट सफल र सम्भव हुनसक्छ (खन्ती, २०५५) ।

मानव सभ्यताको विकाससँगै नेपालमा बस्ती बसोबास र कृषिको सुरुवात भएको पाइन्छ । प्राचीनकालमा पनि नेपालको अर्थतन्त्रको मूल आधार कृषि नै थियो । कृषि उत्पादनलाई बढाउनका लागि स्थानीय स्तरमा कुलो, पोखरी र इनारको समेत व्यवस्था गरिएको थियो । मध्यकालमा नेपालको तराई क्षेत्र, पहाडी क्षेत्र र हिमाली क्षेत्रमा कृषि उत्पादन, पशुपालन असाध्यै राम्रो थियो । राज्यले समेत पशुपालन र कृषिलाई बढावा दिने किसिमको अल्पकालिन तथा दिर्घकालिन योजनाहरू अगाडि सारेको थियो । आधुनिक कालमा नेपाल एकीकरणको अभियानसँगै नेपालको कृषि व्यवस्थामा पनि निरन्तर परिवर्तन हुँदै गयो । पृथ्वीनारायण शाहले कृषि उत्पादनमा जोड दिने उद्देश्यले खेती हुने ठाउँमा कुलो काटी खेती लगाउनु, कुनै पनि जमिन खाली वा बाँझो नराख्नु भन्ने उर्दी जारी गरी कृषि उत्पादन

बढाउन जोड दिए पनि उनले अधिकतम समय राज्य एकीकरणमा बिताउनु पन्यो । राणा शासनकालमा चन्द्रनहर र जुद्धनहरको निर्माण गरिए तापनि कृषि उत्पादनमा खासै सुधार गर्ने प्रयास गरिएन । सिंचाईको अभाव, मलखादको अभाव, आधुनिक औजारको अभाव, बाढीपहिरो, अनावृष्टि, अतिवृष्टि र परम्परागत प्रविधिको कारणले गर्दा पनि प्रतिदिन कृषि क्षेत्र कमजोर र धराशायी बढ्दै गयो । देशको अर्थतन्त्रको मेरुदण्ड मानिने कृषिको यो दयनीय अवस्था सृजना भयो (बस्याल, २०६५: २४-२५) ।

डा. हेमाङ्गराज अधिकारीको ‘प्रयोगात्मक नेपाली शब्दकोष” मा कृषिको अर्थ ‘खनजोत गरी किसान’ भनि उल्लेख गरिएको छ । नेपाल सरकारको राष्ट्रिय कृषि नीति २०६१ मा कृषि शब्दले बाली, बागवानी, पशुपन्थी, माछा आदि कृषिका सबै उपक्षेत्रसँग सम्बद्ध उत्पादन, उद्योग एवम् व्यवसायहरू समेत जनाउँछ भनिएको छ । नेपाल सरकारको कृषि व्यवसाय प्रवर्द्धन नीति, २०६३ मा कृषि व्यवसाय भन्नाले बाली बागवानी, पशुपंक्षी माछा आदि कृषिका साथै उपक्षेत्रसँग सम्बद्ध व्यवसायिक उत्पादन, बेचबिखन र प्रशोधन सम्बन्धी कार्यहरूलाई जनाउँछ भनिएको छ । समग्रमा भन्नुपर्दा कृषि शब्दले विभिन्न प्रकारका खाद्यान्त तथा नगदे बाली, कृषि उपजहरू, पशुपालन व्यवसाय, पंक्षीपालन व्यवसाय, मत्स्यपालन व्यवसायदेखि बागवानीसम्मको उत्पादन लगायत सो सँगै सम्बन्धित उद्योगधन्दा, कलकारखानाबाट उत्पादित उपजहरू त्यसमा आश्रित जनसङ्ख्या एवम् सोसँग सम्बद्ध पेशा व्यवसाय सम्मको क्रियाकलापको समष्टिगत रूपलाई जनाउँछ (सुवेदी, २०६५: १५१) ।

नेपाल एक विकासोन्मुख मुलुक हो । यहाँका मानिसहरूको प्रमुख आय स्रोत कृषि रहेको छ । नेपालमा तरकारी खेतीले विस्तारै व्यवसायिक रूप लिन थालेको छ । तरकारी खेती गर्ने परम्परा नेपालमा प्राचीनकाल देखि नै चल्दै आएको भए पनि हाल आएर मात्र तरकारी खेतीलाई व्यवसायिक रूपमा अगाडि बढाएको पाइन्छ । नेपालको कृषि प्रणाली जिविकोपार्जनमुखीबाट क्रमिक रूपमा व्यवसायिकीकरण तर्फ रूपान्तरण हुँदै गएको छ । तथापि उत्पादित कृषिबाली/वस्तुहरूलाई अरु व्यवसायिक एवम् प्रतिस्पर्धी बनाउनु तत्कालिन आवश्यकता बन्न पुगेको छ । यस परिप्रेक्ष्यमा प्रशोधन प्याकेजिङ खाद्य जैविक प्रविधि र भण्डारण जस्ता प्रविधिहरूको अनुसन्धान तथा विकास गरी यसको प्रतिफल व्यवसायिक रूपमा कृषक देखि उद्योग व्यवसाय स्तरसम्म पुऱ्याउनुपर्ने खाँचो महसुस

भएको छ । कृषि तथा पशुजन्य पदार्थहरूको स्वस्थकर र सुरक्षित वितरणलाई प्रभावकारी रूपमा कार्यन्वयन गर्न जरुरी महसुस गरिएको छ (रा.यो.आ., २०६४: १३६) ।

### १.३ सैद्धान्तिक साहित्य समीक्षा

मानव समाजमा प्राचीनकाल देखि नै महिला र पुरुष मिलेर बनेको छ । प्राचीनकाल देखि नै मानव इतिहास हेर्दा कृषिलाई नै मुख्य पेशा अगालेको पाइन्छ । मानव इतिहास कालदेखि नै घाँटी तटहरूमा बसोबास गर्दै खेतीपाती, पशुपालन सगँसगै गरेको पाइन्छ । उनीहरूको मुख्य आर्यस्रोत नै कृषि रहेको पाइन्छ । मानव सभ्यताको परिवर्तन सगँसगै त्यसमा परिमार्जित हुँदै हालसम्म कृषि गर्ने तौरतरिकाहरू परिमार्जित हुँदै आइरहेको पाइन्छ । प्राचीन कालमा सामान्य रूपमा कृषि गरिन्थ्यो भने हाल त्यो आधुनिकीकरण हुँदै गइरहेको छ र अहिले व्यवसायिक रूपमा अघि बढी रहेको छ । हाल देशको अर्थतन्त्र व्यवसायिक कृषिले धानेको छ, भन्दा पनि फरक नर्पला हाल दिइने कृषिमा अनुदान तथा कृषि शिक्षा ऋण प्रवाहले गर्दा अहिले कृषि क्षेत्रलाई व्यवसायिक रूपमा अगालेको पाइन्छ । त्यसैले कृषि देशको अर्थतन्त्रको मुख्य मेरुदण्ड बनेको छ । आधुनिक कृषि विना देशको आर्थिक उन्नति असम्भव छ । हाम्रो देश जस्तो कृषिप्रधान देश जसमा कुल जनसंख्याको ६१% मानिसहरूले कृषि पेशामा आवद्ध रहेको पाइन्छ । जसले गर्दा कृषि विना देशको आर्थिक विकास असम्भव मानिन्छ । नेपालको सर्नदभमा ग्रामीण क्षेत्रका महिलाहरू विभिन्न संघ संस्थामा आवद्ध भई सीपविकासका कार्यक्रमहरूमा सहभागी भई नेतृत्व विकास गर्दै महिलाहरू अघि बढेको पाइन्छ । उनीहरू आत्मनिर्भर हुँदै कृषिलाई व्यवसायिक रूपमा अघि बढाउँदै आर्थिक रूपले सक्षम र दरो भएका छन् । ग्रामीण महिलाहरू सक्षम, सजग र सबल बन्दै व्यवसायिक कृषि क्षेत्र तर्फ आर्कषित भएका छन् । विभिन्न संघ संस्थाहरू जस्तै आमा समूह, छिमेकी बैक, कृषि एप महिला संगठनहरूबाट महिलाहरू विकासको क्षेत्रमा व्यापक रूपमा सहभागिता जनाउँदै आइरहेका छन् । व्यवसायिक तरकारी खेतीलाई मुख्य पेशा अपनाई क्यौ महिलाहरू आर्थिक रूपमा सक्षम हुनेछन् ।

#### १.३.१ विकासमा नारीवाद सैद्धान्तिक अवधारणा

महिलावादी सिद्धान्तले महिला र पुरुषको समाजमा हुने हैसियत र स्थानबारे व्याख्या विश्लेषण गर्दछ । मानव समाज र संस्कृतिको उत्पत्तिदेखि वर्तमान अवस्थासम्म महिला सम्बन्धमा भएका सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक व्यवस्थालाई ऐतिहासिक दृष्टिबाट

विश्लेषण गर्दछ । सामाजिक र सांस्कृतिक व्यवस्थामा महिलाको र पुरुषको स्थान र भूमिका सामाजिक, सांस्कृतिक असमानताहरू पुरुषबाट महिलामाथि हुने शोषण, दमन र उत्पिडन राज्यद्वारा अबलम्बन गरिएका कानुनी व्यवस्था र प्रदान गरिएको अधिकार त्यसको सामाजिक प्रभावका बारेमा व्याख्या र विश्लेषण गर्दछ । महिलावाद सामाजिक सिद्धान्त महिला र पुरुष बीचको आधारभूत असमानताहरूको सुझावुभक्त र महिला उपर पुरुष सत्ता र शक्तिको विश्लेषणसँग सम्बन्धित छ । नारीवादी सिद्धान्त त्यस्तो विधि हो जसले महिला र पुरुषको स्थान र भूमिकामा सांस्कृतिक रूपले स्थापित संस्थागत प्रक्रियाको अध्ययन गर्दछ । मूलतः महिलावादी सिद्धान्तले महिलामाथि हुने पुरुषको प्रभुत्व भनेको कुनै विशिष्ट समाजमा सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व्यवस्थाबाट सृजना हुने सामाजिक तथ्य हो भन्ने कुरा उजगार गर्दछ । महिलावादी व्याख्या विधिको मुख्य आधार नै महिला र पुरुषको अवसर, महिलामाथि पुरुषको अधिपत्य, राष्ट्र र समाजमा सार्वजनिक लाभका विवरण उनीहरूका समस्या, सामाजिक भूमिका, परिवार र समाज भित्रको कार्य बोझ, स्रोत साधनको वितरणमा देखिने भिन्नता र असमानता नै रहेको देखिन्छ (पौड्याल, २०६८) ।

प्रत्येक समाजमा लैड़िक असमानताको कारण परिणाम र यसको मात्र समान किसिमको हुँदैन । त्यसलाई प्रभाव पार्ने पक्षहरू जसरी सामाजिक र सांस्कृतिक पक्ष जिम्मेवार छ । त्यसैगरी अर्थ व्यवस्था पनि जिम्मेवार हुन्छ । अर्कोतिर सामाजिक व्यवस्था, राजनीतिक शिक्षा जस्ता पक्षले पनि लैड़िगिक सम्बन्धमा प्रभाव पार्दछ । त्यसैले समाजको बहु-विशेषता भित्र बसेर लैड़िगीक सम्बन्धलाई खोज्नु पर्दछ (आचार्य, २०६२) जसले महिलाको हक, हित र अधिकारलाई जोड दिन्छ । यसले महिलाको दृष्टिबाट हरेक पक्षको विश्लेषण र व्याख्या गर्दछ । वास्तवमा नारीवादले महिलाहरूको पुरुष समान अवसर र अधिकारको वकालत गर्दछ (चौलागाई, २०६१) नारीवादी सिद्धान्तहरू वैचारिक आन्दोलनका उपज हुन् । जुन मार्क्सवादी विचारसँग नजिक छन् । महिलामाथि हुने सामाजिक उत्पीडन, पुरुष दमन महिला मुक्ति आन्दोलन, राज्यको नीति नियम, कानुन महिला स्वतन्त्रता जस्ता महिलाहरूको बहुआयामिक पक्षसँग सम्बन्धित विषयवस्तुहरूको व्याख्या गर्ने विश्लेषण गर्ने अवधारणाहरूको विकास भएको छ जसमा यहाँ मूलत दुई ओटा सिद्धान्तहरूको अध्ययन यसमा छन् ।

- क) उदारवादी महिलावाद
- ख) मार्क्सवादी महिलावाद

### क) उदारवादी महिलावाद

उदार नारीवादले महिला समानता, स्वतन्त्रता, विकास र विभेदको अन्त्यलाई जोड दिन्छ । महिला तथा पुरुषहरू बिच रहेको लैङ्गिक विभेदयुक्त कार्य विभाजन, यौन व्यवहार, पारिवारिक संरक्षण तथा सामाजिक भूमिका र उमेरको विभेदका विरुद्धमा स्वतन्त्रताको आवाज उठाउने कार्य उदार महिलावादबाट भएको थियो । लैङ्गिक असमानताका कारण उत्पन्न सबै खाले बन्देजहरूका विरुद्धमा यो महिलावाद खडा भएको देखिन्छ । व्यक्तिगत स्वतन्त्रतालाई नैसर्गिक स्वतन्त्रता मानिएको छ । विवाह, परिवार, नाता सम्बन्ध, धार्मिक संस्था आदिमा समेत लैङ्गिक विभेदको स्थिति रहेकोले महिलाहरू शक्तिहिन बनेका छन् । महिलाहरूको स्वतन्त्रता हट्छ, र परनिर्भरता बढै जान्छ, त्यसैले उदार महिलावादले ज्याला, अवसर तथा स्वतन्त्रताका सवालमा महिलाको स्वतन्त्रतालाई जोड दिँदै नीतिगत रूपमा कानुनी सुधार र गहन लैङ्गिक सामाजिकीकरणको सच्चाईमा जोड दिएको छ (Ritzer, George.1996) ।

उदार नारीवादीहरूका भनाइअनुसार हरेक मानव बराबर रूपमा बुद्धिमानी र सक्षम हुन्छन् । समान अवसर दिएको खण्डमा पुरुषहरूले जस्तै महिलाहरूले पनि समान उपलब्ध प्राप्त गर्न सक्छन् । यसले वर्तमानमा भएको लैङ्गिक विभेदलाई मात्र हेँदैन शिक्षा, रोजगारी, आवश्यकता, अधिकार आदिमा समान अवसर दिनुपर्दछ, भन्ने मान्यता राख्दछ । उदारवादी महिलावादीहरू महिला प्रति पूर्वाग्रही सामाजिक सांस्कृतिक र कानुनी रूपले स्थापित संस्थागत बन्धनहरूको उन्मुलन गर्ने कार्यमा संलग्न भएको देखिन्छ । साथै विकल्पहरूमा उनीहरूले उपयुक्त कानुन निर्माण गर्ने र कार्यान्वयन गर्ने कुरामा जोड दिन्छन् । जस्तो अमेरिकामा उदारवादी महिलाहरूले ऐतिहासिक रूपमा पुरुष सरह महिलाको व्यक्तिगत अधिकारको माग गर्ने महिला विरुद्धका सबै खाले कानुनको खारेजी गर्ने र उपयुक्त कानुनको निर्माण गर्नका लागि दबावमा कार्यहरू भइरहेका छन् । उदारवादी नारीवादहरूले उठाएका प्रमुख मुद्दाहरू सन्तान उत्पादन र गर्भपतन सम्बन्धी अधिकार, यौन दुरुत्साहन, मताधिकार र शिक्षा, समान कामका लागि समान ज्याला, सर्वसुलभ बाल हेरचाह, स्वास्थ्य सेवा र सुविधा महिला विरुद्ध हुने घरेलु हिंसा हुन् ।

## ख) मार्क्सवादी महिलावाद

मार्क्सवादी महिलावादको उत्पत्ति कार्लमार्क्स र फ्रेडरिक एड्गेल्सको कृति Origin of The Family Private Property and The State 1884 लाई लिन सकिन्छ । महिला मुक्तिका लागि मार्क्सवादी महिलावादले तार्किक आधारहरू अघि सारेको छ । मार्क्सवादीहरूले महिला र पुरुषबीच सिर्जित जति पनि असमानता विभेद छन्, जुन जैविकीय कारण र ईश्वरीय कारणले भएको नभई समाजको आर्थिक सम्बन्धका उपज भएको बताउँछन् । यसमा Wilson, Jagger Skikid, Walfy जस्ता विद्वानहरूको योगदान उल्लेखनीय रहेको छ । यिनीहरूका अनुसार उत्पादन प्रणालीको विकास तथा स्वामित्वको कारणले सयौं वर्षदेखि समाजमा लैङ्गिक विभेदहरू सिर्जना भएका हुन् । महिलाहरू पुरुष सरह सबै काम गर्न सक्छन् तर महिला र पुरुषका बिच रहेका असमान शक्ति सम्बन्धमा कारण स्रोतमाथि पुरुषको नियन्त्रणले व्यापकता पाउँदै गरेको र यो क्रम पुँजीवादी अर्थव्यवस्थासम्म आइपुरदा अरु बढी व्यापक बढ्दै गयो । समाजको वर्गीय चरित्र नै महिला विभेदको मुल कारक तत्त्व हो भन्ने निष्कर्ष मार्क्सवादी महिलावादको रहेको छ ।

मार्क्स र एन्जेल्सका अनुसार महिला स्वतन्त्रतामा प्रकार्यहरू उन्नाइसौं शताब्दीको पुँजीवादी समाजसँगै विकास भएको हो । ज्यालादारी मजदुरीको विकासले गर्दा कामदार वर्गको पद र शक्तिमा अभिवृद्धि भएको थियो । मार्क्सवादले महिला र पुरुषबीच रहेको असमान शक्तिमा अभिवृद्धि भएको थियो । मार्क्सवादले महिला र पुरुषबीच रहेको असमान शक्ति सम्बन्धलाई जोड दिन्छ । यसैका आधारमा लैङ्गिक सम्बन्धको विकास र व्यवहारिक यथार्थतालाई जोड दिन सकिन्छ । यस खालको असमान शक्ति सम्बन्ध भनेको पुरुष शक्तिवान् र महिला शक्तिहिन हुनु हो (आचार्य, २०६२) ।

मार्क्सवादी महिलावादी सिद्धान्त त्यस्तो सिद्धान्त हो । जसले पुँजीवादी दासत्वबाट महिलालाई मुक्ति तथा स्वतन्त्रता दिलाउने विधि तथा मार्गको व्याख्यामा ध्यान केन्द्रित गर्दछ । पुँजीवादले महिलालाई भोग विलासिताका वस्तुका रूपमा रूपान्तरण गरेको छ । जुन वस्तुको रूपमा खरिद, विक्री र व्यापार गरिने महिलाको अस्मिता र जीवनलाई मुक्तिको बाटो देखाउने सिद्धान्तका रूपमा स्थापित छ (पौड्याल, २०६८) ।

### १.३.२ आर्थिक सिद्धान्त

मार्क्सले समाजको पहिचानलाई निश्चित गर्ने निर्णायक कारक तत्वका रूपमा आर्थिक कारणहरूलाई राखेका छन्। यस अर्थमा सामाजिक पहिचान पनि एक आर्थिक कारणहरूको परिणाम हो भन्न सकिन्छ। सामाजिक जीवन, विचार, मूल्य मान्यता, राजनीति व्यवस्था, साहित्य कला आदिको निर्धारण उत्पादनमा निर्भर गर्दछ (मार्क्स, १९७७)।

सामाजिक परिवर्तनका सम्बन्धमा आर्थिक सिद्धान्त मार्क्सवाट प्रभावित छ जस अनुसार सामाजिक परिवर्तनका सम्बन्धमा प्रत्येक खालका परिवर्तनहरूको कारक तत्व आर्थिक पक्षलाई मान्न सकिन्छ। सामाजिक परिवर्तनका सम्बन्धमा उत्पादनको तरिका पद्धति र त्यसको पुनरावृत्तिकरणले आर्थिक क्रियाकलापलाई प्रत्यक्ष प्रभाव पार्दछ। उत्पादन प्रक्रियामा यसको प्रभाव परिवार लिङ्ग, उमेर आदिमा पर्दछ। यसको प्रभावको फलस्वरूप नै सामाजिक रूपमा धार्मिक संस्था, कानून राजनीति आदिमा परिवर्तन आउँछ। सम्पूर्ण परिवर्तनको मुल आधार नै आर्थिक तत्व भएका कारण जब आर्थिक अवस्थामा परिवर्तन आउँछ तब सामाजिक एकाइ र त्यसको प्रक्रियामा परिवर्तन आउन सक्छ। अर्थ व्यवस्थामा आउने परिवर्तनसँगै सामाजिक जीवनमा पनि परिवर्तन आउँछ (राण्डल, १९९७)।

### १.३.३ लैड्गिक अवधारणा

समाजले महिला र पुरुषलाई कस्तो प्रकारको भूमिका, अधिकार, स्रोत साधन दिन्छ। उनीहरूलाई कस्तो किसिमले व्यवहार तथा मानसिकता विकास गर्न सिकाउँछ। त्यसको अर्थ बोध गर्नुलाई सामाजिक लिङ्ग (जेण्डर) भनिन्छ। लिङ्ग शब्दले महिला र पुरुष शरीरको भौतिक भिन्नतालाई जनाउँछ र लैड्गिक शब्दले मनोवैज्ञानिक सामाजिक र सांस्कृतिक भिन्नतालाई बुझाउँछ। हरेक समाजमा महिला र पुरुषले निर्वाह गर्नुपर्ने भूमिका अलग अलग हुने गर्दछ भने लिङ्गको आधारमा महिला र पुरुष दुवैलाई समाजले अपेक्षा गरेको भूमिका नै लैड्गिक हो। लैड्गिकले महिला र पुरुषको सामाजिक, सांस्कृतिक र अतिरिक्त आर्थिक विशेषतालाई पनि जनाउँछ। जसरी लिङ्ग अन्तर्गत महिला वा पुरुष भनि जन्मजात निर्धारण भएर आउँछ। त्यसैगरी जेण्डर पनि लिङ्गका आधारमा व्यक्तिसँग जोडिएर आउने सांस्कृतिक मूल्य, मान्यता, भूमिका तथा विशेषताहरूको समष्टिगत रूप हो (भासिन, २००३)।

प्राकृतिक लिङ्गलाई महिला र पुरुष बिचमा रहने शारीरिक विशेषताका आधारमा छुट्याइन्छ । जुन निश्चित हुन्छ भने सामाजिक लिङ्ग भन्नाले समाजले महिला र पुरुषलाई दिएको भूमिकालाई जनाउँदछ । जुन समाजपिच्छे फरक-फरक र परिवर्तनशील हुन्छ । महिला र पुरुष बिच सामाजिक लिङ्ग कुनै प्राकृतिक विभेद नभइ समाजले सिर्जना गरेको भिन्नता हो । यो सामाजिक सम्बन्धमा आधारित छ (अर्याल, २०६२) ।

लैंगिक भूमिका भन्नाले सामाजिक परम्परा, मूल्य, मान्यता अनुसार महिला पुरुषको काम सोचाईलाई बुझाउँछ । महिला र पुरुषले समाजको अपेक्षा अनुसार सम्पादन गर्ने उत्तरदायित्व र जिम्मेवारी हो । समाजको अपेक्षा अनुसार महिला र पुरुषका लागि विभाजन गरिएको कार्य नै लैंगिक श्रम विभाजन हो । विभिन्न स्रोत र साधनमा महिला तथा पुरुषको आधिपत्य तथा नियन्त्रण रहनुलाई लैंगिक पहुँच र नियन्त्रण भनिन्छ । महिला र पुरुष बिचमा रहेको शक्ति सम्बन्धले गर्दा यी दुईले सम्पादन गर्ने कामको मूल्य फरक हुन्छ । शक्तिले लैंगिक भूमिकालाई निरन्तरता दिन सहयोग पुऱ्याउँछ । भाषा नातेदारी, धर्म, प्रविधि जस्तै लैंगिक पनि मानव आविष्कार हो । लैंगिकले मानिसको सामाजिक जीवनलाई सांस्कृतिक ढाँचा अनुरूप संगठित गर्दछ (मेहता, १९९६) ।

#### १.३.४ लैंगिक विकासका रणनीतिहरू

विश्वमा विकास भएका विभिन्न समयका विभिन्न प्राकृतिक महिला आन्दोलनहरूले महिलाको भूमिका र अवस्थाका विभिन्न पक्षबारे व्याख्या र विश्लेषण गर्दै समग्रमा महिला पिछडिएका तथा असमानताको अवस्थामा रहन पुगेको निष्कर्ष निकालेको सन्दर्भमा र विकासका लागि अगाडि बढाइएका विभिन्न रणनीतिहरूका परिणामा स्वरूप पनि आशातित सफलता हासिल गर्न नसकिएको सन्दर्भमा सामाजिक लिङ्गलाई विकासको मुद्दाको रूपा लिइएको छ । लैंगिक विषयलाई जोड दिई स्रोत तथा अवसरहरू तर्फ महिलाहरूको पहुँच बढाउनुपर्ने, सम्पत्तिमा अधिकार, सशक्तिकरण, समान ज्याला तथा निर्णय प्रक्रियामा महिलाको उल्लेख्य भूमिकाका बारेमा पनि लैंगिक विकासमा जोड दिइएको छ । सामाजिक लिङ्गलाई विकासका मुद्दाका रूपमा प्रतिस्थापित गर्ने कार्य तथा यसको आवश्यकताको बोधको सन्दर्भलाई हेर्दा सन् १९५० पछिको विकासका रणनीतिको इतिहासलाई विश्लेषण गर्नुपर्ने हुन्छ (एफ.डब्ल्यू.एल.डी., २०५८) ।

विश्वमा विकास भएका विभिन्न समयका विभिन्न प्रकृतिकी महिला आन्दोलनहरूले महिलाको भूमिका र अवस्थाका विभिन्न पक्षबारे व्याख्या र विश्लेषण गर्दै समग्रमा महिला पिछडिएका तथा असमानता अवस्थामा रहन पुगेका निष्कर्ष निकालेका सन्दर्भमा र विकासका लागि अगाडि बढाइएका विभिन्न राणीतिका परिणाम स्वरूप पनि आशातित् सफलता हासिल गर्न नसकिएको सन्दर्भमा सामाजिक लिङ्गलाई विकासको मुद्दाको रूपमा लियएको छ । समाजमा रहेका विभेदयुक्त सामाजिक भूमिकाका कारण महिलाहरूको अवमुल्यन गरिएको र विकास प्रक्रियामा उनीहरू सामेल हुन नसकेकोले यस्ता पक्ष अगाडि सारिएका विकासका रणनीति तथा कार्यक्रम सफल हुन नसकि विश्वमा विकास प्रक्रियाको लामो अभ्यास पछि पनि तिनले सफलता देखाउन नसकेको, धनी र गरिब देशहरू विच विभेद बढेको महिलाको अवस्थामा परिवर्तन आउन नसकेको तथा समग्र विकासको लक्ष्य प्राप्त गर्न नसकिएका वास्तविकतालाई स्विकारिएको छ । सन् १९५० पछि अगाडि सारिएको आधुनिकीकरणको सिद्धान्त अनुसार पुनः निर्माण औद्योगिक विकास तथा प्रविधि सहयोगका महत्वलाई जोड दिएको पाइन्छ (आचार्य, २०६२) ।

विकास प्रक्रियामा जेण्डर विकासको अवधारणा एउटा प्रभावकारी रणनीतिको रूपमा लिइएको छ । दोस्रो विश्वयुद्धपछि नवस्वतन्त्र राष्ट्रहरूलाई उनीहरूको गरिबी र अविकासको स्थितिबाट मुक्त गर्नका लागि संयुक्त राष्ट्र संघले विभिन्न योजना तर्जुमा समेत गयो । Trickle down अवधारणमा कार्यन्वयन गरिएका विकास योजना र रणनीतिले गरिबीको दुश्चक्रबाट खास गरी तेस्रो विश्वका गरिब जनतालाई मुक्त गर्न सकेन । यस्तो पृष्ठभूमिमा विकासका नयाँ रणनीति र दृष्टिकोणहरूको खोजी हुन थाल्यो । विकास कार्यमा महिलाहरूको सहभागिता हुनुपर्ने मान्यताको विकास भयो । सन् १९७५ लाई संयुक्त राष्ट्रसंघले अन्तर्राष्ट्रिय नारी वर्षका रूपमा मनाउने निर्णय गयो । सन् १९७५ देखि १९८५ को दशकलाई महिला दशक भनेर संयुक्त राष्ट्रसंघले घोषणा गयो । सन् १९७५ मा मेक्सिको सिटी, १९८० मा डेनमार्कको राजधानी कपनहेगन, १९८५ मा केन्याको राजधानी नैरोबी र १९९५ मा चीनको राजधानी बेइजिङमा क्रमशः पहिलो, दोस्रो र चौथो विश्व महिला सम्मेलन सम्पन्न भयो । उपयुक्त स्थानहरूमा उल्लेखि सबै महिला सम्मेलनहरूमा महिला र पुरुषविचको सम्बन्धलाई सन्तुलनमा ल्याउने र कमजोर पक्षलाई सशक्तीकरण गर्नुपर्नेमा जोड दिएका छन् (अधिकारी, २०५७) ।

## १.३.५ समाजका विभिन्न पक्षमा महिलाको स्तर

### क) महिलाको सामाजिक र साँस्कृतिक स्तर

परम्परागत मुल्य मान्यता र संस्कारको आधारमा महिलाहरू शिष्ट, सभ्य, नम्र मिजासका र धार्मिक स्वभावका पाइन्छन् । विभिन्न किसिमका विशेषताहरू परिवारमा भएका हुँदौं छोरी बुहारीको भूमिका फरक फरक हुने गर्दछ । बुहारीको भूमिका अनुसार चुलो चौको, दैलो, गोवर, घाँस, दाउरा ढिकी जातो, मेलापात, निमेक (ज्याला) को काममा जाने गर्दछन् । घरमा फुर्सद हुँदा सुकुल, गुन्डी, चकटी, स्विटर बुन्ने र कपडा सिलाउने काममा अति नै व्यस्त रहन्छन् । त्यस्तै गरी घरमा सासु-ससुरा, नन्द-अमाजु, देवर-जेठाजु र श्रीमानप्रति आज्ञा पालन गर्नु महिलाहरूको मुख्य काम मानिन्छ । कतै कसैसँग कुराकानी र हाँसो ठट्टा गरेमा पनि शंका गर्ने चलन रहेको छ । प्राकृतिक कुरा जस्तै महिलाहरू महिनावारी हुँदा र सुत्केरी हुँदा अशुद्ध मानि छुनै नहुने चलन पनि रहेको छ (Bennet, 1977) ।

### ख) आर्थिक स्तर

नेपाली महिलाको आर्थिक स्तर ज्यादै निम्न स्तरको छ । उनीहरूले अधिकांश समय घरायसी काम, इन्धन सङ्कलन, पानी पँधेरो आदिमा बिताउँछन् जहाँ ज्याला नै हुँदैन । यसलाई नेपाली समाजले काम नै मान्दैन । नेपाली महिलाको आर्थिक मुल्याङ्कन हुने कामा १४.०४ प्रतिशत र नहुने काम ४०.९१ प्रतिशत गरी जम्मा ६६.०८ प्रतिशत संलग्नता छ ।

पुरुषको आर्थिक मुल्याङ्कन हुने कामा ८२.९६ प्रतिशत र नहुने काममा १९.०९ प्रतिशत गरी जम्मा ३३.९२ प्रतिशत संलग्नता छ । महिलाले प्रतिहप्ता आर्थिक कार्यमा २७.१० प्रतिशत र अनार्थिक कार्यमा १७.४० प्रतिशत औषत घण्टा काम गर्दैन् पुरुषले आर्थिक कार्यमा ३०.२ प्रतिशत र अनार्थिक कार्यमा ३.५० प्रतिशत रहेको छ । दुवैकामको प्रतिशत हेर्दा महिलाको कुल ६९.२० प्रतिशत घण्टा काम गर्दछन् भने पुरुषले ३०.८० प्रतिशत घण्टा काम गर्दैन् (Shrii Shakti, 2001) ।

भारतकी प्रसिद्ध नारीवादी अर्थशास्त्री विना अग्रवालले ग्रामीण महिलाको घरभित्रको व्यवस्थापन क्षमता उनीहरूको व्यक्तिगत स्वामित्व र सम्पति माथिको नियन्त्रण (खासगरी खेती योग्य जमिनमा) रोजगारी अन्य आर्थिक उपाजेनका क्षेत्रमा पहुँच, सामुदायिक स्रोतमाथि पहुँच, परम्परागत बाह्य सामाजिक संस्थाको समर्थनमा पहुँच तथा सरकारी तथा

गैर सरकारी संस्थाबाट प्राप्त हुने सहयोग आदिमा भर पर्ने उल्लेख गरेकी छन् (Agrawal, 1998) ।

### ग) शैक्षिक स्तर

नेपाल एउटा पितृसत्तात्मक प्रणाली भएको देश हो । त्यसैले छोरा जन्मनु खुशीको कुरा हुने हुनाले उसको वंश परम्परालाई निरन्तरता दिन शैक्षिक तवरले पनि योग्य बनाउन सानैदेखि महाङ्गा र राम्रा बोर्डिङ स्कुलमा पढाउने गरिन्छ भने छोरी अर्काको घर पठाउने जात भनि सानैदेखि घरायसी काममा लगाउने गरिन्छ । जसले गर्दा पुरुषको तुलनामा महिलाको शैक्षिक अवस्था कमजोर छ । मानव विकासका सूचाङ्कको आधारमा १८.७ राष्ट्र मध्ये नेपाल १४.५ औँ स्थानमा पर्दछ । सन् २००५ देखि सन् २०१२ सम्मको अभिलेख हेर्दा स्कूल जाने उमेरका महिलाहरूको संख्या १७.९ प्रतिशत मात्र देखिन्छ भने साक्षरता दर ५७.३८ प्रतिशत रहेको छ । तर पुरुषको साक्षरता दर ७५.१ प्रतिशत रहेको छ । समग्रमा १९.७ प्रतिशत घरपरिवारको जमिन र स्थिर सम्पत्तीको स्वामित्व महिलाको नाममा भएको तथ्याङ्कमा उल्लेख भएपनि यो प्रतिशत सहरी क्षेत्रमा भन्दा ग्रामीण क्षेत्रमा अजै कम रहेको छ ।(Care, C.I., 2015)

### १.४ व्यवहारिक साहित्य समिक्षा

“कृषि भन्नाले पशु तथा पञ्चीपालन व्यवसाय, फलफुल, तरकारी, च्याउ उत्पादन व्यवसाय, माछा, मासु, दुध, फुल र दुर्घटजन्य उत्पादन व्यवसायलाई जनाउँछ (बराल, २०५१) ।

सामान्यतया तरकारी भन्नाले त्यस्ता विरुवाहरूलाई जनाउँछ, जसको पात, जरा, फल, काण्ड र फूल खान हुन्छ । तरकारी भन्नाले मुख्य खानासँग पकाएर खाने साना विरुवाहरूलाई जनाउँछ । पल भन्नाले बोटबाट हातले टिपेर खाने विरुवाहरूलाई जनाउँछ । वनस्पति विज्ञानको अर्थले गोलभेडा फल हो तर यसलाई तरकारीको रूपमा चिनिन्छ (डेविड, १९६८) ।

शिवजी बरालले भरतपोखरी गा.वि.स मा व्यवसायिक गोलभेडा खेती सम्बन्धी समाजशास्त्रीय अध्ययनमा गोलभेडा खेती शुरू गरेपछि विगतभन्दा वर्तमानमा उनीहरूका विभिन्न क्षेत्रमा प्रभाव पारेको छ । आर्थिक अवस्थामा परिवर्तन साथसाथै शिक्षा, आम्दानी, रोजगार, मनोरञ्जन जस्ता साधनको प्रयोगमा समेत परिवर्तन आएको देखिन्छ । यसले गर्दा

उनीहरूको समग्र आर्थिक अवस्थामा सुधार हुँदै गइरहेको छ र वर्षेनी गोलभेडा खेती गर्ने मनोवृति बढ्दै गइरहेको छ भन्ने निष्कर्ष निकालेका छन् (बराल, २०६४) ।

मिना कुमारी गौतमले माछापुच्छे गा.वि.स. कास्कीमा तरकारी उत्पादनले महिलाको सामाजिक र आर्थिक अवस्थामा पारेको प्रभाव विषयमा शोधपत्र तयार पारेकी छन् । उनको शोधपत्रमा निम्न निष्कर्ष निकालिएको छ । तरकारी उत्पादनबाट महिलाहरूले वार्षिक रूपमा रु दश हजार देखि दुई लाख सम्म आम्दानी गरेका छन् । ग्रामीण क्षेत्रमा बसेर पनि यस्तो आम्दानी गरेका छन् । आर्थिक सुधारले महिलाहरूको अधिकार र स्वतन्त्रतामा सुधार भएको कुरा अध्ययनले देखाएको छ । आम्दानी पछि खर्चको निर्णय गर्ने र बचत गर्ने काममा महिलाको बाहुल्यता देखियो जुन सुधारको संकेत हो । तरकारी उत्पादनपछि आर्थिक सुधार भएको र महिलाहरू आर्थिक रूपमा आत्मनिर्भर बन्न सकेको पाइएकोले तरकारी उत्पादनले महिलाको जीवन पद्धतिमा सकारात्मक प्रभाव पारेको निष्कर्ष निकालिएको छ (गौतम, २०६९) ।

चेतराज आचार्यले मौजा गा.वि.स. मा व्यवसायिक तरकारी खेतीमा लैङ्गिक सहभागिता सम्बन्धी गरेको समाजशास्त्रीय अध्ययनमा व्यवसायिक तरकारी खेती शुरु गरेपछि थोरै जमिन मात्र हुने कृषकले पनि वार्षिक रूपमा ८५००० सम्म आम्दानी गर्न सफल भएको परम्परागत रूपमा महिलाहरूले मात्रै कृषि कार्य गर्दै आएकोमा वर्तमान समयमा पुरुषहरूको सहभागिता वृद्धि भएको तरकारी खेतीबाट आर्थिक आम्दानीमा वृद्धि भएपछि उनीहरूमा आर्थिक, सामाजिक र सांस्कृतिक रूपमा सकारात्मक प्रभाव परेको र यसबाट जीवनस्तरमा परिवर्तन आएको निष्कर्ष निकालेका छन् (आचार्य, २०६६) ।

शान्ति गुरुडले तरकारी उत्पादनले कृषकमाथि पारेको प्रभाव पोखरा-५ मालेपाटन कास्कीमा गरेको समाजशास्त्रीय अध्ययनमा तरकारी खेती बाट वार्षिक २० हजार देखि दुईलाख सम्म आम्दानी गरेको पाइयो । आर्थिक सुधारले कृषकको जीवन पद्धतिमा नै परिवर्तन भउको कुरा अध्ययनबाट पत्ता लागेको छ । उत्पादनपछि आर्थिक सुधार भएको र कृषकहरूमा पनि विशेष गरी महिला कृषकहरू आत्मनिर्भर बन्न सकेको निष्कर्ष निकालेका छन् (गुरुड, २०६९) ।

तनहुँ गुणादीका एक किसानले मकै लगाउने बारीमा घाँस रोपेर वार्षिक ९० हजार रुपियाँ आम्दानी गरिरहेका छन् । उखेलेर फाल्नुपर्ने घाँस बारीमा रोपेकाले शुरुका वर्षमा छिमेकीले उनलाई मगज खुस्केको सम्म भनेका थिए त्यस्तै पर्वतकी जसुदा बस्यालले घरमा पालिने वस्तुभाउहरूको गहुँत संकलन गरी आफ्नो बारीमा मलका रूपमा प्रयोग गरेर बिक्री समेत गर्ने गरेकी छन् । पहिले उनको कामलाई नराम्रो मान्नेहरू समेत अहिले उनी कहाँ गहुँत खरिद गर्न जान्छन् (बस्याल, २०६५) ।

कृष्णप्रसाद अधिकारीले पोखरा ५ मालेपाटनमा सेती सिंचाई आयोजनाले तरकारी खेतीमा पारेको प्रभाव भन्ने विषयमा अध्ययन गरेर सेती सिंचाई आयोजनाबाट सिंचाई सुविधा प्राप्त भएपछि कृषि विकासका कार्यक्रमहरू परम्परागत अन्न उत्पादनबाट आधुनिक तरिकाले तरकारी उत्पादनतर्फ कृषकहरू लागेका छन् । मानिसको जीवन स्तरमा दैनिक रोजगार र आम्दानीले प्रत्यक्ष प्रभाव पार्ने हुँदा तरकारी एक नगदे बाली भएकोले कृषकहरूले आधुनिक तरिकाले उन्नत मल, बिझु, प्रविधि सहितको तरकारी उत्पादन सुरु गरेको बताएका छन् । यस सिंचाई सुविधाबाट तरकारी उत्पादक र उत्पादनका तरिका प्रभावित भएका छन् । धेरै उत्पादन र आधुनिक तरिकाहरू प्रयोगमा ल्याएका छन् । यसबाट तरकारी उत्पादन कृषकहरूको सामाजिक र आर्थिक क्षेत्रमा विकास भएको निष्कर्ष निकालेका छन् (अधिकारी, २०६५) ।

### १.५ अनुसन्धान अन्तर

माथि उल्लेखित विभिन्न साहित्य विश्लेषणको आधारमा व्यवसायिक तरकारी खेतीले भरतपोखरी, बागमाराका महिलाहरूमा पारेको आर्थिक तथा सामाजिक प्रभावका बारेमा आज सम्म अध्ययन नभएको हुँदा उक्त क्षेत्रमा गई आर्थिक तथा सामाजिक प्रभावका बारेमा अध्ययन गरिएको छ ।

### १.६ समस्याको कथन

हाम्रो समाज अझै पनि पितृसत्तात्मक सोचमा आधारित छ । यहाँ महिला र पुरुष बिचको खाडल निकै गहिरो । हाम्रो समाजमा अझै पनि पुरुष प्रधान सोच, विचारले जरो गाडेको पाइन्छ । महिलाहरू केवल घरधन्दामा मात्र सिमित रहने र पुरुषहरू पैसा कमाउने, देश विदेश डुल्ने प्रवृत्ति छ । राष्ट्रिय जनगणना २०७८ को प्रारम्भिक नतिजा अनुसार पुरुषको

जनसंदर्भ्या १,४२,९१,३११ र महिलाको जनसंदर्भ्या १,४२,०१,१६९ भए पनि वास्तवमा महिलाहरू हरेक क्षेत्रमा पछाडि परेका छन् । घरपरिवार, समाजमा महिलाहरू पुरुषको अधिनमा बस्न बाध्य छन् । पुरुषहरूको कमाईबाट घरखर्च चलाउनुपर्ने बाध्यता रहेको छ । नेपालमा कतिपय महिलाहरूले त्रिपक्षीइ कार्य भूमिका निर्वाह गरिरहेका छन् । घरधन्दाको कार्य बालबच्चा हुर्काउने र रोजगारीमा संलग्न रहेका छन् । यसरी रोजगारीमा प्रवेश गरेपनि त्यहाँ पनि तिनीहरूलाई महत्वपूर्ण जिम्मेवारीका कार्यहरू दिन खोजिँदैन न त राजनीतिमा नै महिलाहरूलाई महिला तथा बालबालिकासँग सम्बन्धित क्षेत्रमा पनि मन्त्रालयमा मात्र स्थान दिइन्छ । महिलालाई सानैबाट अर्काको घर जाने जात पढन पैदैन घरधन्दा गर्न जान्नु पर्दछ भनेर शिक्षाबाट बच्चित गरिने पढे पनि धेरै उच्च शिक्षा हासिल गर्न नपाउने भएकोले महिलामा केही निर्णय लिन सक्ने क्षमतामा कमी आएको हो । महिलाले सम्पूर्ण घर गृहस्थी बाल बच्चा बृद्धबृद्धा गाईवस्तु सम्हाल्ने हुनाले नै पुरुषहरू बिना चिन्ता बाहिरको आर्थिक र सामाजिक कार्यमा संलग्न हुन पाएका छन् तर पनि समाजशास्त्रीय व्याख्याता सिद्धान्तकार विचारकहरूले महिलाका यस्ता कार्यहरूमा कहिल्यै पनि ध्यान दिएको पाँइदैन केवल महिलालाई शारीरिक रूपमा कमजोर तथा अशक्त पुरुष सरह काम गर्न नसक्ने भनेर अवधारणा मात्र बनाए । फरक फरक अध्ययन अनुसार पुरुषको तुलनामा महिलाको कार्य भार २५ प्रतिशत बढी रहेको छ(गौतम, २०७३)।

वर्तमान समयमा तरकारी खेती तर्फ मानिसहरूको आकर्षण बढ्दै गइरहेको छ । तरकारीको उपयोग पनि दिनप्रति दिन बढ्दै गइरहेको पाइन्छ । जसले गर्दा तरकारी खेती व्यवसायिक रूपमा सफल बन्दै गइरहेको छ । महिला सशक्तिकरणको लागि विभिन्न कार्यक्रमहरू सरकारी र गैरसरकारी स्तरबाटै ल्याइए तापनि ती कार्यक्रमहरू त्यति प्रभावकारी हुन नसकेको अवस्था देखिन्छ । राजनीतिक रूपमा हरेक क्षेत्रमा महिलाहरूलाई ३३ प्रतिशत सहभागी गराउने भन्ने सरकारको नीति पनि रहेको छ । रोजगारीको क्षेत्रमा, शिक्षाको क्षेत्रमा महिलाको पहुँच बढाउने उद्देश्यले विशेष किसिमको कार्यक्रमहरू सञ्चालनमा ल्याइएको पाइन्छ । तापनि महिलाहरूको घरपरिवार तथा सामाजिक क्षेत्रमा निर्णयात्मक भूमिकामा किन अभै पहुँच पुग्न सकेको छैन र ग्रामीण क्षेत्रमा महिलाहरूको आर्थिक, सामाजिक अवस्थामा के कस्ता परिवर्तन भयो भन्ने कुराको अध्ययन गर्ने उद्देश्यले निम्न लिखित अनुसन्धानात्मक प्रश्नहरूलाई उठान गरिएको छ ।

- १) व्यवसायिक तरकारी उत्पादनबाट महिलाहरूको आर्थिक तथा सामाजिक अवस्थामा के कस्तो परिवर्तन भएको छ ।
- २) व्यवसायिक तरकारी खेतीमा आइपर्ने समस्या तथा चुनौतीहरू के के हुन् ?

### **१.७ अध्ययनको उद्देश्य**

यस अध्ययनको मुख्य उद्देश्य व्यवसायिक तरकारी खेतीले ग्रामीण भेगका महिलाहरूको आर्थिक र सामाजिक जीवनस्तरमा पारेको प्रभावको बारेमा जानकारी प्राप्त गर्ने हेतुले यस अध्ययनमा निम्न उद्देश्यहरू राखिएको छ ।

- १) व्यवसायिक तरकारी खेतीले ग्रामीण महिलाहरूको आर्थिक तथा सामाजिक अवस्थामा आएको परिवर्तन पहिल्याउने ।
- २) व्यवसायिक तरकारी खेतीमा ग्रामीण महिलाहरूले भोग्ने समस्या र चुनौतीहरूको विश्लेषण गर्ने ।

### **१.८ अध्ययनको औचित्यतथा महत्व**

अनुसन्धान आफैमा एक महत्वपूर्ण कार्य हो । हरेक अनुसन्धानको आ-आफ्नै महत्व र विशेषता हुन्छन् । यस अध्ययनले कृषि प्रधान देश नेपालको सन्दर्भमा गहन भूमिका खेल्ने छ । नेपालको कुल जनसङ्ख्याको ६१ प्रतिशत जनता कृषि पेसामा आवद्ध छन् । यसमध्ये अधिकांश महिलाहरू नै रहेका छन् । तसर्थ कृषकका लागि तरकारी उत्पादन एक महत्वपूर्ण विषय हो । यस क्षेत्रमा तरकारी उत्पादन गर्नुपूर्व र पछि महिलाको आर्थिक र सामाजिक जीवन पद्धतिमा आएको परिवर्तन बुझ्नका लागि यो अध्ययन महत्वपूर्ण हुनेछ । त्यस्तै गरी व्यवसायिक तरकारी खेतीमा महिलाहरूलाई आइपर्ने समस्या तथा चुनौतीहरू के के रहेछन् भनेर केलाई भोलिका दिनमा जसले व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गर्न चाहनेहरूका लागि यसले मद्दत गर्नेछ । जो तरकारी उत्पादक महिलाहरू छन् उनीहरू र अन्य महिलाहरूलाई यस अध्ययनले आफ्नो व्यवसाय अभ्य व्यवस्थित गर्न महत्वपूर्ण योगदान दिई व्यवसायिक तरकारी खेती गर्ने महिलाहरूको सामाजिक र आर्थिक विकासमा कसरी अगाडि बढ्नुपर्छ भन्ने कुराको जानकारी दिनेछ । यसका साथै यस अध्ययनले अन्य अनुसन्धानकर्तालाई समेत यस विषयमा थप अध्ययन गर्न चाहेमा उनीहरूको लागि विशेष महत्व हुन सक्नेछ ।

## १.९ अध्ययनको सिमा

यस अनुसन्धानमा व्यवसायिक तरकारी खेतीमा संलग्न महिलाहरूको आर्थिक तथा सामाजिक जीवनमा पारेको प्रभाव अध्ययन गर्न कास्की जिल्लाको पोखरा महानगरपालिकाको वडा नं. ३३ भरतपोखरीलाई लिएको छ। भरतपोखरीमा व्यवसायिक रूपले तरकारी खेतीमा संलग्न महिलाहरूको आर्थिक तथा सामाजिक प्रभाव र यस व्यवसायका क्रममा आउने समस्या तथा चुनौतीहरू अध्ययन गर्न निम्न कुराहरू समावेश गरिएको छ :

- व्यवसायिक तरकारी खेती पश्चात महिलाहरूको आर्थिक तथा सामाजिक जीवनमा भएको परिवर्तन पत्ता लगाउन उनीहरूको रोजगारीको अवस्था, सन्तुलित खाना, शिक्षा, स्वास्थ्य, बचत, घरजग्गा तथा नेतृत्व तहमा उनीहरूको पहुँच तथा नियन्त्रणको बारेमा अध्ययन गरिएको छ।
- व्यवसायिक तरकारी खेतीको क्रममा आइपरेका समस्या तथा चुनौतीहरूको बारेमा खोजी गरी यससँग सम्बन्धित रहेर अध्ययन गरिएको छ।
- यसमा केवल व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गरेका महिलाहरूलाई मात्र समेटिएको छ।

## १.१० अध्ययनको संगठन

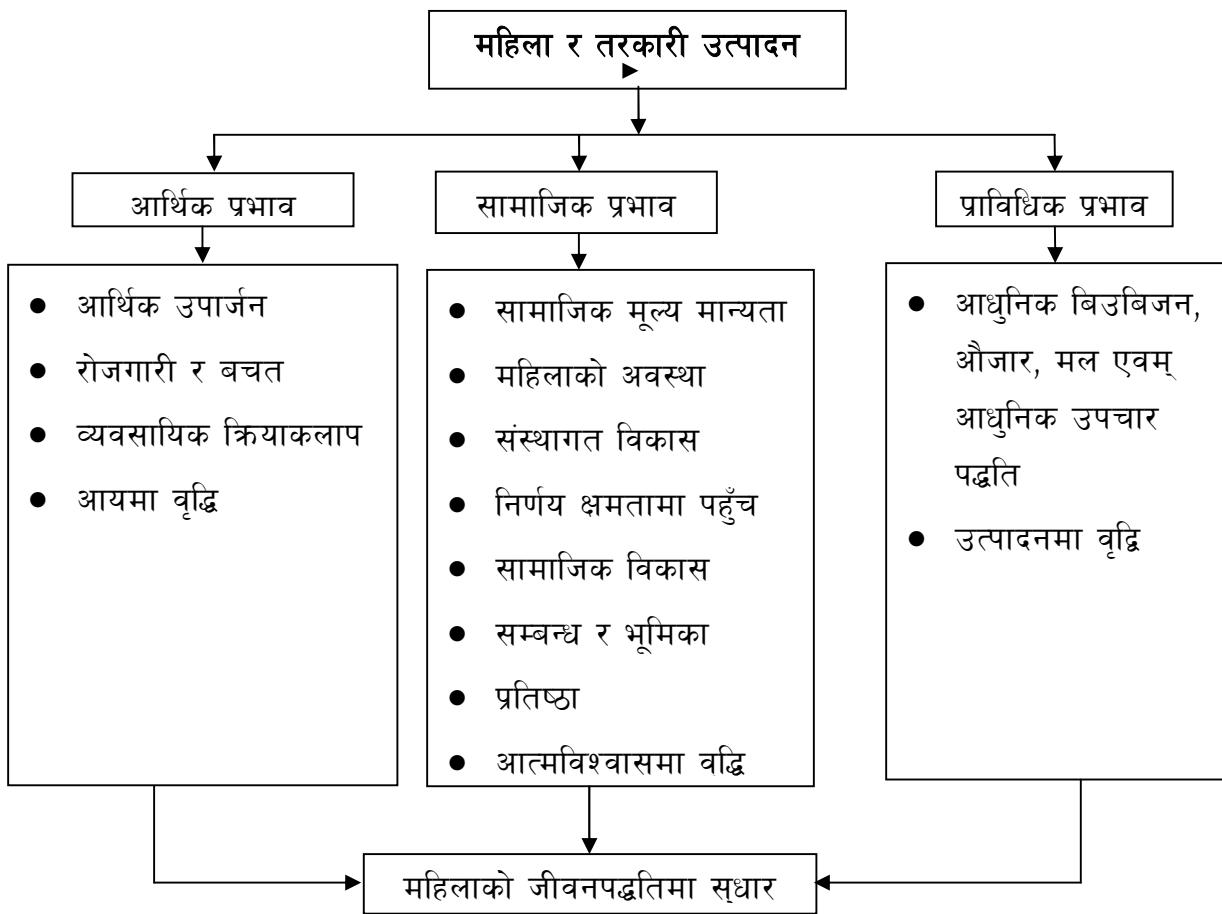
यस अनुसन्धानलाई पाँच भागमा विभाजन गरिएको छ। सुरुमा परिचय खण्डबाट सुरु भएर सारांश तथा निष्कर्षमा अन्त्य गरिएको छ। पहिलो अध्यायमा परिचय खण्ड अन्तर्गत अध्ययनको पृष्ठभूमी, अवधारणात्मक साहित्य समिक्षा, सैद्धान्तिकसाहित्य समिक्षा, व्यवहारिक साहित्य समिक्षा, अनुसन्धान अन्तर समस्याको कथन, अध्ययनको उद्देश्य, अध्ययनको औचित्य तथा महत्व, अध्ययनको सिमा, अध्ययनको संगठन, शब्दावलीको परिभाषा र अवधारणात्मक खाँका समावेश गरिएको छ। यसैगरी दोस्रो अध्यायमा अनुसन्धान पद्धतिको बारेमा अध्ययन क्षेत्रको छनौट, अनुसन्धान ढाँचा, तथ्याङ्कको स्रोत एवम् प्रकृति, तथ्याङ्कको आकार र नमुना छनौट प्रक्रिया, तथ्याङ्क संकलन विधि, वैयक्तिक अध्ययन, अवलोकन, अन्तरवार्ता अनुसूची तथ्याङ्कको विश्वसनियता एवम् प्रमाणिकता, तथ्याङ्क विश्लेषण र प्रस्तुतीकरण र नैतिक स्पष्टिकरण राखिएको छ। अध्यायको तेस्रो भागमा अध्ययन क्षेत्रमा तरकारी उत्पादनको अवस्थाको बारेमा विश्लेषण गरिएको छ जसमा जनसाइंसियक

विशेषता, जातिय विवरण, भाषा र धार्मिक विवरण, उमेरगत विवरण, उत्तरदाताको शैक्षिक अवस्था, उत्तरदाताको तरकारी बाहेक अन्य पेशा, तरकारी उत्पादनको महत्व र अवस्था, उत्तरदाताको जमिनको अवस्था, उत्तरदाताको जमिनको स्वामित्वको अवस्था, सिचाइको अवस्था, उत्पादन सम्बन्धि तालिम, उत्पादन गर्ने तरकारीउत्पादनमा पारिवारिक संलग्नता, तरकारी बेच्ने उत्तरदाताको विवरण, मल, बिउँ र प्रविधिको प्रयोग, अध्ययन क्षेत्रमा उत्पादन गरिने मुख्य तरकारीहरु, व्यवसायिक तरकारी खेती पश्चात महिलाहरुको जीवनस्तरमा पारेको प्रभाव, आर्थिक क्षेत्रमा पारेको प्रभाव र सामाजिक क्षेत्रमा पारेको प्रभाव रहेको छ। अध्यायको चौथो भागमा व्यवसायिक तरकारी खेती गर्दा आइपरेका समस्या र चुनौतीहरुका बारेमा वर्णन गरिएको छ। अन्तिम पाँचौ अध्यायमा सारांश र निष्कर्ष राखिएको छ। अन्त्यमा सन्दर्भ सामग्रीहरुको राखिएको छ भने वैयक्तिक घटना अध्ययनलाई अनुसूचीमा स्पष्टसँग राखिएको छ।

### १.११ शब्दावलीको परिभाषा

- १) **तरकारीउत्पादन :**आर्थिक आम्दानीका लागि गरिने कृषि उत्पादनको कार्य।
- २) **व्यवसायिक तरकारी खेती :** व्यवसायिक तरकारी खेती भन्नाले त्यस्तो तरकारी खेतीलाई जनाउँछ। जुन तरकारी खेती बेच्नको लागि अथवा आय आर्जन गर्नको लागि गरिन्छ। घरमा खानको लागि मात्र नभई विक्री वितरण गरी आयआर्जन गर्नको लागि गरिने तरकारी खेती व्यवसायिक तरकारी खेती हो।
- ३) **महिला सहभागिता :** व्यवसायिक तरकारी खेतीमा महिला सहभागिता भन्नाले तरकारी उत्पादन तथा त्रिकी वितरण कार्यमा महिला सहभागिता भन्ने जनाउँछ।
- ४) **मौसमी तरकारी :** सामान्यतया हावापानी, मौसम र प्राकृतिक अवस्थामा सुहाउने तरकारी उत्पादन।
- ५) **बेमौसमी तरकारी :** हावापानी, मौसम र प्राकृतिक अवस्था प्रतिकूल उत्पादन गरिने तरकारी।

## १.१२ अवधारणात्मक खाका



तरकारी उत्पादनका नयाँ नयाँ प्रविधिको विकास भए सँगै कृषकहरूमा पनि आधुनिक प्रविधिको प्रभाव पदै जानु स्वभाविक हो । आधुनिक बित्तिविजन, मल, औजारहरू तथा प्रविधिको प्रयोगले उत्पादनमा वृद्धि हुँदै जान्छ र नयाँ नयाँ हाइब्रिड तरकारीहरूको उत्पादनमा पनि वृद्धि हुन्छ, जसकारणले गर्दा उत्पादन सँगै आर्थिक वृद्धि हुन्छ जसकारणले गर्दा उत्पादन सँगै आर्थिक पनि वृद्धि हुन्छ । तरकारी उत्पादनमा प्रभाव पार्ने प्राविधिक पक्ष अन्तर्गत आधुनिक वित्त विजन, औजार मल एवम् आधुनिक उपचार पद्धति तथा प्रविधिरहेका छन् । जसले व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतीलाई प्रभाव पार्दछ । अहिलेको समयमा तरकारी खेती व्यवसायिक रूपमा अगालेका कृषकलाई यसले मद्दत गरेको छ । तरकारीमा लाग्ने किरा, कम उत्पादन हुने वित्तविजन, मलहरूको समस्या यस आधुनिक

प्रविधिको उपचारको प्रयोले प्रत्यक्ष प्रभाव पारेको छ । माटोको गुणस्तरको जाँच गरी सोही अनुरूपको तरकारी उत्पादन गरी उत्पादनमा वृद्धि भएको देखिन्छ ।

तरकारी उत्पादनको वृद्धि सँगै कृषकको आर्थिक र सामाजिक अवस्था महिला र पुरुषको सम्बन्ध । भूमिकामा समेत प्रभाव परेको हुन्छ । व्यवसायिक रूपमा तरकारी उपादन सँगै उत्पादित वस्तुमा महिलाहरूको नै पहुँच रहेको हुन्छ । उत्पादनका समयमा विभिन्न समस्याहरू देखिन्छन् । उक्त समस्याको समाधान एवम् महिला कृषकहरू एकआपसमा छलफल गरी समस्याहरू आफै समाधान गर्ने गर्दछन् । मानिसको हरेक पक्षमा सुधार ल्याउने पक्ष आर्थिक पक्ष हो । तरकारी उत्पादनको माध्यमबाट महिलाहरूको आर्थिक पक्षमा सुधार भएको र यसले गर्दा महिलाहरूको सम्पूर्ण पक्षमा सुधार आएको देखिन्छ । उनीहरूले तरकारी उत्पादनबाट आएको आम्दानीले आफ्नो खर्च चलाउने, सहकारी र बैंकमा बचत गरेका छन् । जसले गर्दा उनीहरूको जीवनस्तरमा नै परिवर्तन आएको पाइन्छ ।

## अध्याय-दुई

### अनुसन्धान पद्धति

#### २.१ अध्ययन क्षेत्र

गण्डकी प्रदेश अन्तर्गत कास्की जिल्लाको समुन्द्री सतहबाट ४५० मिटर देखि ११२० मिटर सम्मको उचाईमा रहेको यस भरतपोखरी वडा नम्बर ३३ क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र हो । यहाँका मानिस यसै पेशामा संलग्न छन् । यहाँको हावापानी तथा भौगोलिक अवस्था तरकारी खेतीको लागि उपयुक्त छ ।

उक्त क्षेत्रका महिलाहरू विगत लामो समय देखि स्थानीय स्रोत साधनमा आधारित भएर विभिन्न किसिमका व्यवसायहरू लघुउद्यमहरू मौरीपालन, सिलाईकटाई, व्यवसायिक तरकारी खेती, माछापालन, बाखापालन, गाई भैसीपालन, स-साना किराना पसल, कस्मेटिक पसल, फेन्सी जस्ता व्यवसायहरू सञ्चालन गर्दै आएका छन् । मुलत : हाम्रो देशका महिलाहरू घरायसि कामधन्दा बालबच्चा लालनपालन जस्ता गैरआर्थिक क्षेत्रमा संलग्न रहेंदै आउने गरेको परिवेशमा यस ठाउँका महिलाहरू व्यवसायिक रूपमा अगाडि लागेको पाएको हुँदा यस व्यवसायबाट उनीहरूको आर्थिक तथा सामाजिक जीवनयापनमा कस्तो प्रभाव परेको छ ? व्यवसायिक तरकारी खेतीगर्ने क्रममा के कस्ता समस्या र चुनौतीहरू आइपरे भन्ने विषयमा यस क्षेत्रमा खासै यसको अध्ययन अनुसन्धान भएको नपाइएकोले उपयुक्त ठाउँको अध्ययन गर्न उपयुक्त ठानी यस ठाउँलाई नै अनुसन्धान क्षेत्र निर्धारण गरिएको हो ।

#### २.२ अनुसन्धानको ढाँचा

यस अनुसन्धानको मुख्य जोड व्यवसायिक तरकारी खेतीमा संलग्न ग्रामिण महिलाहरूको आर्थिक र सामाजिक अवस्थाका साथै उनीहरूले यस व्यवसायमा भोग्ने समस्या तथा चुनौतीहरूको अध्ययन गरिएको छ । व्यवसायिक तरकारी खेतीमा संलग्न ग्रामिण महिलाहरूको आर्थिक र सामाजिक अवस्थाका बारे अध्ययन गरिएकोले यस अनुसन्धानमा वर्णनात्मक ढाँचा प्रयोग गरिएको छ ।

#### २.३ तथ्याङ्को स्रोत एवम् प्रकृति

यस अनुसन्धानमा प्राथमिक र द्वितीय दुवै स्रोतबाट तथ्यांकहरू संकलन गरिएको छ । प्राथमिक स्रोत अन्तर्गत अन्तरवार्ता अनुसूची, वैयक्तिक अध्ययन र अवलोकन पर्दछ भने

द्वितीय स्रोत अन्तर्गत अध्ययनसँग सम्बन्धित विभिन्न लेख, रचना, जर्नल, पुस्तक तथा अन्य सम्बन्धित साहित्यको सहयोग लिएको छ । तथ्याङ्कको प्रकृतिहरु गुणात्मक र संख्यात्मक दुवै किसिमका रहेका छन् । व्यवसायिक तरकारी खेतीमा लागेका व्यवसायीहरुको तथ्याङ्क तर्थिवस्थाको बारेमा खोताली उनीहरूबाटै आएको कुराहरूलाई समेटिएको छ । तरकारी व्यवसायीहरुको तथ्याङ्क कृषि तथा पशु विकास महाशाखाबाट लिएको छ । यसका साथै सरकारी तथा गैरसरकारी संघसंस्थाको आधिकारीक वेवसाइट, प्रतिवेदन तथा कार्यालयबाट प्राप्त जानकारीलाई आधिकारीक स्रोतको रूपमा लिई यस अध्ययनमा समावेश गरिएको छ ।

## २.४ तथ्याङ्कको आकार र नमुना छनोट प्रक्रिया

राष्ट्रिय जनगणना २०६८ को तथ्याङ्क अनुसार पोखरा महानगरपालिका भरतपोखरी वडा ३३ को कुल जनसंख्या ९,८०६ रहेको छ । जसमा पुरुषको संख्या ४,३५३ र महिलाको संख्या ५,४५३ रहेको छ ।

कृषि तथा पशु विकास महाशाखाले आर्थिक वर्ष २०७७/०७८ मा उपलब्ध गराएको तथ्याङ्क अनुसार भरतपोखरीमा कृषिमा संलग्न जनसंख्या १,९७५ रहेको छ भने व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतीगर्ने जनसंख्या १०५ रहेको छ । जस मध्ये ६५ जना महिलाहरू व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतीगर्ने छन् । व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गरिरहेका ६५ जना महिलाहरूको अध्ययन गरिने भएकोले यसमा संगणना विधि अवलम्बन गरिएको छ ।

## २.५ तथ्याङ्क संकलनका विधि

कुनै पनि अध्ययन अनुसन्धान कार्य सम्पन्न गर्न विभिन्न तथ्याङ्क संकलन विधिहरु अवलम्बन गरिएको छ । यसमा बढीभन्दा बढी प्राथमिक खालका स्रोतलाई आधार मानिएको छ । प्राथमिक स्रोत अन्तर्गत अन्तरवार्ता अनुसूची, अवलोकन विधि र वैयक्तिक घटना अध्ययनबाट सूचना संकलन गरिएको छ । ।

### २.५.१ वैयक्तिक अध्ययन

पोखरा महानगरपालिका वडा नं. ३३ भरतपोखरीमा व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतीमा संलग्न महिलाहरूको आर्थिक तथा सामाजिक जीवनमा पारेको प्रभाव अध्ययन गर्नको लागि उनीहरको खाद्यन्त, शिक्षा, स्वस्थ्य, सम्पत्तिमा पहुँच र नियन्त्रण जस्ता कुराहरूको बारेमा बुझ्न व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गरिरहेका ६५ जना महिलाहरूमा पनि पुन छनोट

गरी केवल द जना महिलाहरूको मात्र वैयक्तिक अध्ययन गरिएको छ । महिलाहरूको मासिक तथा वार्षिक आम्दानी, बचत, खर्चको क्षेत्र जस्ता कुराहरूको सुक्ष्म, गहन तथा गुणात्मक अध्ययन गरिएको छ भने तरकारी खेती गर्नु पूर्व र तरकारी खेती पश्चातको आर्थिक अवस्थालाई विश्लेषण गरी व्यवसायिक तरकारी खेतीमा संलग्न महिलाहरूको आर्थिक तथा सामाजिक जीवनमा आएको परिवर्तन तथा तरकारी खेतीको क्रममा आइपरेका समस्या तथा चुनौतीहरूको सुक्ष्म अध्ययन गरिएको छ ।

#### २.५.२ अवलोकन

अवलोकन तथ्याङ्क संकलनको एक महत्वपूर्ण विधि हो । यस विधिद्वारा अध्ययन गर्दा कृषकहरु तरकारी उत्पादनमा लाग्ने समयमा उनीहरूको क्रियाकलाप अवलोकन गरिएको छ । तरकारी उत्पादनका समयमा उनीहरु कसरी काम गर्दैन्, तरकारी उत्पादनमा क-कसले के-के काम गर्दैन्, तरकारी उत्पादन पछि तरकारी कसरी बेचबिखन गर्दैन् यिनै क्रियाकलापमा अवलोकन गरिएको छ ।

#### २.५.३ अन्तरवार्ता अनुसूची

अन्तरवार्ता अनुसूची प्राथमिक तथ्याङ्क संकलनको एक विधि हो । प्राथमिक तथ्याङ्क संकलनका लागि व्यक्तिगत अन्तरवार्ताका माध्यमले कृषकसँग उद्देश्य अनुरूप आवश्यक प्रश्नहरूको संरचित र असंरचित संरचना तयार गरी अनुसन्धानकर्ता स्वयमले तथ्याङ्क लिएको छ । तथ्याङ्क सङ्गलन गर्दा बहुछनोट प्रश्नहरु र खुला प्रश्नहरु प्रयोग गरिएको छ । जसबाट व्यवसायिक तरकारी खेतीमा संलग्न ग्रामीण महिलाहरूको आर्थिक तथा सामाजिक प्रभावका बारेमा जानकारी लिएको छ ।

#### २.६ तथ्याङ्कको विश्वसनियता एवम् प्रमाणिकता

सम्बन्धित क्षेत्रमा नै बसी अनुसन्धानकर्ताले आफैले नै तथ्याङ्कको संकलन गर्ने र सम्बन्धित व्यक्तिसँग सल्लाह सुभाव लिएर अध्ययन गर्ने हुनाले विश्वसनियता रहेको छ । आफ्नो उद्देश्य अनुरूप तथ्याङ्क संकलन गरिने हुँदा सकेसम्म यस अध्ययन त्रुटिरहित रहेको छ । प्रस्तुत तथ्याङ्कबाट आएको निष्कर्षमा प्रमाणित भएको छ ।

## २. ज्ञानाङ्कको विश्लेषण र प्रस्तुतीकरण

यस अध्ययनमा संकलन गरिएका गुणात्मक र संख्यात्मक तथ्याङ्कहरूलाई आवश्यकता अनुसार वर्णनात्मक रूपमा विश्लेषण गरिएको छ । सामान्य तथा प्राप्त तथ्याङ्कहरूलाई तालिकाका माध्यमबाट तथ्याङ्क विश्लेषण गरिएको छ । साथै आवश्यकता अनुसार तथ्याङ्कको व्याख्या र विश्लेषण पनि गरिएको छ ।

### २.८ नैतिक स्पष्टिकरण

ग्रामीण विकास विषयमा स्नातकोत्तर तहको दर्शै पत्र शोध पत्र तयार गर्नका लागि “व्यवसायिक तरकारी खेतीले भरतपोखरी बागमाराका महिलाहरूमा पारेको आर्थिक तथा सामाजिक प्रभाव” प्रस्तावना स्वीकृत भएपछि बागमारा, पोखरा वडा नम्बर ३३ को वडा कार्यालयमा वडा अध्यक्षलाई भेटेर यस विषयमा गर्न लागिएको अध्ययन बारे जानकारी गराए र अध्ययनका लागि अनौपचारिक मौखिक स्वीकृति लिए । त्यस पछि वडा अध्यक्ष र कृषि सञ्जालका अध्यक्षसँग समन्वय गरेर शोध गर्न लागेको यो विषय अहिलेसम्म नभएको जानकारी पाएँ । त्यसपछि कृषि तथा पशु विकास महाशाखासँग तथ्याङ्क संकलन गरे । त्यसपछि संगणना विधि अनुरूप सबै व्यवसायिक तरकारी खेतीमा संलग्न महिलाहरूलाई मैले गर्ने शोधमा सहभागिताका लागि उद्देश्य बताएर अन्तरवार्तामा दिएका कुनै पनि विषयको गोपनीयता कायम हुने आश्वस्त गरेर उहाँहरूको मौखिक स्वीकृति लिदै अन्तरवार्ता लिएको थिएँ ।

## अध्ययन ३

### अध्ययन क्षेत्रमा तरकारी उत्पादनको अवस्थाको विश्लेषण

#### ३.१ जनसाङ्ख्यिक विशेषता

##### ३.१.१ जातिगत विवरण

जात मानव सभ्यताको एक महत्वपूर्ण विशेषता हो । समाजमा जातिका आधारमा पेसा सामाजिक सम्बन्ध, व्यक्तिको हैसियत र भूमिका निर्धारण भएको हुन्छ । नेपाल एक बहुजाति र बहुभाषी राष्ट्र हो । बहुजातिय देशको यस भरतपोखरी वडा नम्बर ३३ मा विभिन्न बाहुल्यता रहेको मानिन्छ । यहाँका बासिन्दाहरुमा ब्राह्मण, क्षेत्री, कामी, गुरुङ, मगर, सार्की, ठकुरी, नेवार आदि रहेका छन् । यस अध्ययनमा व्यवसायिक तरकारी खेतीमा संलग्न महिलाहरुको मात्र विवरण तयार पारिएको छ ।

##### तालिका ३.१.१: जातिगत अवस्था

| जात      | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|----------|--------------------|---------|
| ब्राह्मण | ३३                 | ५१%     |
| क्षेत्री | ३२                 | ४९%     |
| जम्मा    | ६५                 | १००%    |

स्रोत : स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

मथिको तालिकामा हेर्दा यस वडा नम्बर ३३ मा जातिय हिसाबले व्यवसायिक तरकारी खेतीमा ब्राह्मण महिला व्यवसायीहरु सबैभन्दा बढी ५१प्रतिशत र क्षेत्री महिलाहरु ४९प्रतिशत रहेका छन् ।

##### ३.१.२ भाषा र धार्मिक विवरण

भाषाको माध्यमबाट एक व्यक्तिले अर्को व्यक्तिको अभिव्यक्तिलाई बुझने र बुझाउने गर्दछ । नेपालको राष्ट्रिय भाषा नेपाली हो । धर्म एक अदृश्य शक्ति माथि विश्वास गर्नु नै धर्म हो । प्राचीन समयमा समाजलाई एकता र नियमको घेराभित्र राख्न धर्मले महत्वपूर्ण भूमिका खेलेको थियो । यस भरतपोखरी वडा नम्बर ३३ मा व्यवसायिक रूपले तरकारी खेतीमा

संलग्न महिलाहरु ब्राह्मण र क्षेत्री मात्र भएको र उहाँहरुको धर्म हिन्दु र भाषा नेपाली रहेको पाइयो । यसैले १००प्रतिशत नै महिलाहरु हिन्दु धर्म र नेपाली भाषा बोल्ने पाइयो ।

### ३.१.३. उमेरगत विवरण

कुनै पनि क्षेत्रको जनसंख्यामा उमेर एउटा महत्वपूर्ण सामाजिक तत्व हो । उमेरले विभिन्न कार्यमा विभिन्नता ल्याउँदा उमेरकै आधारमा व्यक्तिको सामाजिक हैसियत निर्धारण हुन्छ । व्यक्तिको काम गर्ने समय, कामको प्रकार तथा निर्णय प्रक्रियामा उमेरको प्रभाव परेको हुन्छ । उमेरले कृषकहरुको सामाजिक विकास, चेतना, रोजाई, निर्णय गर्ने क्षमता, आर्थिक क्रियाकलाप जस्ता क्षेत्रमा प्रभाव पार्दछ । अध्ययनको सिमा भित्र रहेका ६५ जना महिला कृषकहरुलाई उमेरका आधारमा विभिन्न समूहमा वर्गीकरण गरी हेरिएको छ जसलाई निम्न अनुसारको तालिकाबाट प्रस्त पार्न सकिन्छ ।

#### तालिका ३.१.३ : उत्तरदाताको उमेरगत विवरण

| उमेर         | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|--------------|--------------------|---------|
| २० देखि ३०   | ८                  | १२.३०%  |
| ३१ देखि ४०   | २८                 | ४३.०७%  |
| ४१ देखि ५०   | २०                 | ३०.७६%  |
| ५१ देखि माथि | १४                 | २१.५३%  |
| जम्मा        | ६५                 | १००%    |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

माथिको तालिका अनुसार २० देखि ३० वर्ष उमेरका १२.३०प्रतिशत, ३१ देखि ४० वर्ष उमेरका ४३.०७प्रतिशत, ४१ देखि ५० वर्ष उमेरका ३०.७६प्रतिशत, र ५१ वर्ष भन्दा माथिका २१.५३प्रतिशत, रहेको छ । यसरी सर्वेक्षणको तालिका अनुसार सबैभन्दा बढी संख्या ३१ देखि ४० वर्ष उमेरका ४३.०७प्रतिशत कृषकहरुको रहेको छ ।

### ३.१.४. उत्तरदाताको शैक्षिक अवस्था

कुनै पनि व्यक्तिले सार्थक जीवन बाच्नको लागि समय अनुकूल आफ्नो क्षमता विकास गर्दै जानु पर्दछ । शिक्षाले तै मानिसको चौतर्फी विकास गरेर जीवनलाई स्वावलम्बी, आत्मनिर्भर र आत्मविश्वास बढाउन सार्थक भूमिका खेल्दछ । कुनै पनि पेशा व्यवसाय गर्नको लागि त्यससँग सम्बन्धित निश्चित ज्ञान र सिप हुनु आवश्यक छ । अहिलेको बदलिदो विश्व समाजमा शिक्षा विनाको मान्द्ये अन्धो हुन्छ । नेपालको जनगणना २०७८ अनुसार साक्षरता ७१.१५प्रतिशत रहेको छ (Statistics, 2078)।

#### तालिका ३.१.४: शिक्षाको आधारमा साक्षरता

| शिक्षाको अवस्था  | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|------------------|--------------------|---------|
| आधारभूत तह (१-८) | ४७                 | ७२%     |
| मा.वि. (९-१२)    | १६                 | २४%     |
| स्नातक           | २                  | ३%      |
| जम्मा            | ६५                 | १००%    |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

माथिल्लो तालिका २.८.४. र चित्र २.८.४. 'क' अनुसार पढ्न लेख्न जान्ने आधारभूत तह सम्म ७२प्रतिशत, माध्यमिक तह सम्मको २४प्रतिशत र स्नातक तह सम्म ३प्रतिशत, रहेको छ । सर्वेक्षण तालिका अनुसार सबैभन्दा बढी आधारभूत तह (१-८) सम्मको शिक्षाको रहेको पाइयो ।

### ३.१.५. उत्तरदाताहरुको तरकारी बाहेक अन्य पेशा

नेपाल कृषि प्रधान देश हो । नेपालका अधिकांश जनताहरु कृषिमा नै आश्रित रहेका छन् । ग्रामिण क्षेत्रमा कृषि बाहेक अन्य विकल्प नै हुँदैन भने बजार क्षेत्रमा पनि कृषि कार्यमा लागेको पाइन्छ । नेपालमा रोजगारीको राम्रो व्यवस्था नभएको कारण पढेका मानिसहरु पनि कृषि कार्यमा लागेका छन् । त्यसैले अध्ययन क्षेत्रका उत्तरदाताहरुमा पनि अन्य पेशा छ, कि भनि हेर्न खोजिएको छ । उत्तरदाताहरुको तरकारी खेती बाहेक अन्य पेशालाई तलको तालिकामा देखाइएको छ ।

**तालिका ३.१.५: तरकारी खेतीको अलावा अन्य खेती, पेशा र व्यवसायको आधारमा  
उत्तरदाता**

| क्र.सं. | पेशाको विवरण                       | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|---------|------------------------------------|--------------------|---------|
| १       | व्यवसायिक तरकारी बाहेक अन्य पेशा छ | १७                 | २६%     |
| २       | तरकारी खेती मात्रै                 | ४८                 | ७३%     |
|         | जम्मा                              | ६५                 | १००%    |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

माथिको तालिका अनुसार व्यवसायिक तरकारी खेती बाहेक अन्य पेशा छ भन्ने उत्तरदाता २६प्रतिशत र अन्य पेशा छैन भन्ने को ७३प्रतिशत रहेको पाइयो । अन्य पेशामा किराना पसल, कुखुरापालन, गाईभैंसी पालन, बाखापालन, र अन्न बाली उत्पादन आदि रहेका छन् ।

### ३.२ तरकारी उत्पादनको महत्व र अवस्था

मानव सभ्यताको विकासक्रमसँगै आफ्नो जीवनलाई सहज बनाउन कृषि पेशालाई अवलम्बन गर्ने क्रममा तरकारी खेती गर्ने परम्परा प्राचीनकालदेखि नै चलिआएको पाइन्छ । तरकारीबाट हामीले विभिन्न किसिमका शरीरलाई आवश्यक पर्ने तत्वहरु भिटामिन, प्रोटीन, खनिज लगायतका थुप्रै तत्वहरु पाउँछौ । तरकारीको अभावमा हाम्रो शरीरमा विभिन्न किसिमका रोगहरु लाग्दछ । हामी स्वस्थ रहनको लागि पनि हामीले खानामा आवश्यक मात्रामा तरकारीहरुको प्रयोग गर्नु पर्दछ । विगतमा तरकारी खेती सम्बन्धी उचित ज्ञान तथा शिक्षाको कमीले तरकारी खेती व्यवसायिक रूपमा अघि बढ्न सकेको थिएन । समय सँगसँगै हाल तरकारी खेती पनि व्यवसायिक रूपमा अघि बढ्दै गईरहेको छ ।

यस भरतपोखरी क्षेत्रमा परम्पराबाट नै तरकारी खेतीको लागि प्रसिद्ध ठाँउ हो । यहाँ तरकारी उत्पादनको लागि माटो, हावापानी उपयुक्त छ । परम्परागत रूपमा तरकारी खेती गर्दै आएका यहाँका कृषकहरुले व्यवसायिक रूपमा नै तरकारी उत्पादनलाई अघि बढाएका छन् । वर्तमान समयमा तरकारीको बिउँ, विजन छनौट गर्न थालेका छन् । प्राङ्गारिक मलका साथै रासायनिक मल, विभिन्न किसिमका औषधीहरु तथा औजारहरु प्रयोग गरी मौसमी तरकारीका साथै केहीले बेमौसमी तरकारीहरु पनि लगाउने गर्दछन् । आजभोलि समाजमा सबै जनाको घरमा ताजा तरकारी खाने गर्दछन् । उनीहरु खानाका साथै तरकारी

बेचेर पनि घर खर्च चलाउने गर्दछन् । सहरी क्षेत्र र घना बस्तीहरुमा तरकारी खानु पर्दछ भन्ने धारणाको फलस्वरूप तरकारीको वर्षभरि माग भईरहनु जस्ता कारणले बेमौसमी तरकारीको माग बढी रहेको छ । नेपालमा मुख्यतया असारदेखि मंसिर महिनासम्म उत्पादन गरिने तरकारीलाई बेमौसमी तरकारीको रूपमा चिनिन्छ । बेमौसमी तरकारीबाट आम्दानी बढी हुने भएकाले पनि कृषकहरु बेमौसमी तरकारी उत्पादन गर्न लागेका हुन् । तरकारी उत्पादनलाई व्यवसायिक गर्नका लागि कुन तरकारी कुन महिनामा लगाउँदा बढी फाइदा लिन सकिन्छ, भन्ने जानकारी कृषकहरुमा हुनु पर्दछ जसलाई तलको तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ ।

### तालिका ३.२ : अध्ययन क्षेत्रमा उत्पादन हुने तरकारी र तिनको उत्पादन समय

| क्र.सं. | तरकारीहरु    | मौसमी महिना                   | बेमौसमी महिना         | बेमौसमी तरकारी उत्पादन महिना | रोप्ने समय      |
|---------|--------------|-------------------------------|-----------------------|------------------------------|-----------------|
| १       | काउली        | पौष-चैत्र                     | बैशाख-मंसिर           | बैशाख-कार्तिक                | फाल्गुण - भाद्र |
| २       | बन्दा        | पौष-जेठ                       | आषाढ-मंसिर            | बैशाख-कार्तिक                | बैशाख-भाद्र     |
| ३       | ब्रोकाउली    | पौष-चैत्र                     | बैशाख-मंसिर           | बैशाख-कार्तिक                | माग-असोज        |
| ४       | गोलभेडा      | पौष-जेठ                       | आषाढ-मंसिर            | आषाढ-कार्तिक                 | चैत-श्रावण      |
| ५       | गाँजर        | मंसिर - जेठ                   | आषाढ-मंसिर            | आषाढ-कार्तिक                 | बैशाख-भाद्र     |
| ६       | भेडेखुर्सानी | जेठ-श्रावण                    | असोज-चैत              | असोज-कार्तिक                 | आषाढ-भाद्र      |
| ७       | सिमी         | बैशाख-श्रावण<br>कार्तिक-मंसिर | भाद्र-असोज<br>माघ-चैत | भाद्र-असोज                   | आषाढ-श्रावण     |
| ८       | प्याज        | चैत्र-श्रावण                  | भाद्र-फाल्गुण         | असोज-कार्तिक                 | आषाढ-भाद्र      |
| ९       | केराउ        | पौष-चैत                       | बैशाख-मंसिर           | बैशाख-कार्तिक                | फाल्गुण-भाद्र   |
| १०      | बकुल्लासिमी  | माग-फाल्गुण                   | असोज-माग              | असोज-माग                     | श्रावण-भाद्र    |
| ११      | काको         | चैत-असोज                      | कार्तिक-फाल्गुण       | बैशाख-असोज                   | माग-श्रावण      |
| १२      | मूला         | मंसिर -फाल्गुण                | चैत-कार्तिक           | बैशाख-कार्तिक                | फाल्गुण-भाद्र   |
| १३      | घिरौला       | आषाढ-असोज                     | चैत-जेठ               | जेठ-भाद्र                    | चैत-जेठ         |
| १४      | बोडी         | भाद्र-कार्तिक                 | बैशाख-श्रावण          | आषाढ-श्रावण                  | बैशाख-आषाढ      |

स्रोत: श्रेष्ठ र अन्य, २०६६:५४

### ३.३ उत्तरदाताहरुको जमिनको अवस्था

नेपाल एक कृषि प्रधान देश भएता पनि देशको १८प्रतिशत भूमि मात्र कृषि योग्य छ । ६०प्रतिशत किसानहरुसँग २० रोपनीभन्दा कम जग्गा जमिन छ । जसको स्वामित्वमा कुल कृषि योग्य जमिनको ३०प्रतिशत भू-भाग मात्रै पर्दछ । अर्कोतिर १०० रोपनीभन्दा बढी जमिन हुने धनी किसानहरु १.५प्रतिशत मात्र छन् । उनीहरुको स्वामित्वमा खेती योग्य जमिनको करिब १४प्रतिशत हिस्सा रहेको छ । यसको प्रभाव अध्ययन क्षेत्रमा पनि स्पष्ट देख्न सकिन्छ ।

### तालिका ३.३: उत्तरदाताको जमिनको अवस्था

| विवरण             | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|-------------------|--------------------|---------|
| ०-१ रोपनी         | २                  | ३%      |
| १-३ रोपनी         | १५                 | २३%     |
| ३-५ रोपनी         | २५                 | ३८%     |
| ५ रोपनीभन्दा माथि | २३                 | ३५%     |
| जम्मा             | ६५                 | १००%    |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

तालिका ३.२ अनुसार परिवारमा ० देखि १ रोपनी जमिन हुने कृषक ३प्रतिशत, १ देखि ३ रोपनी हुने कृषक २३प्रतिशत, ३ देखि ५ रोपनी हुने कृषक ३८प्रतिशत, ५ रोपनीभन्दा माथि हुने कृषक ३५प्रतिशत, रहेको पाइयो । तालिका अनुसार परिवारमा सबैभन्दा बढी ३ देखि ५ रोपनी जमिन हुने २५ जना कृषक रहेको र सबैभन्दा कम ० देखि १ रोपनी हुने २ जना कृषक रहेको पाइयो ।

### ३.४ उत्तरदाताको जमिनमा स्वामित्वको अवस्था

नेपाल एक पितृसत्तात्मक देश हो । नेपालका सबैजसो ठाँउमा परिवार पुरुषको अधिनमा रहेका छन् । परिवारमा रहेका सम्पत्ति पनि पुरुषको नाममा नै रहेको हुन्छ । कानुनमा महिलाको लागि पनि सम्पत्ति माथिको हकलाई प्रत्याभूति गरेको भए पनि व्यवहारमा त्यो पालना गर्न सकिरहेको छैन जसको फलस्वरूप परिवारको जग्गा जमिन पनि पुरुषको नाममा नै रहेको बढी पाइन्छ । अहिलेको अवस्थामा आएर भने केही परिवर्तन भएको पाउन सकिन्छ,

। अध्ययन क्षेत्रमा पनि जमिन कक्षाको नाममा छ भनि अध्ययन गरिएको छ । अध्ययन क्षेत्रका उत्तरदाताहरूमा तालिकामा देखाइएको छ ।

### तालिका ३.४: उत्तरदाताको जमिनमा स्वामित्वको विवरण

| व्यक्तिको नाम         | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|-----------------------|--------------------|---------|
| ससुरा                 | १०                 | १५.३८%  |
| सासु                  | ८                  | १२.३०%  |
| श्रीमान्              | २३                 | ३५.३८%  |
| स्वयम् महिला          | ६                  | ९.२३%   |
| श्रीमान् श्रीमति दुवै | १८                 | २७.६९%  |
| जम्मा                 | ६५                 | १००%    |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६९

माथिको तालिका अनुसार उत्तरदाताहरूको परिवारमा जग्गा जमिनको अवस्थालाई हेर्दा सबैभन्दा बढी जमिनमा स्वामित्व श्रीमान् ३५.३८ प्रतिशत पाइयो भने सबैभन्दा कम स्वयम् महिला कृषकमा ९.२३ प्रतिशत रहेको पाइयो । यसरी माथिको तालिकाबाट के स्पष्ट हुन्छ भने अझै पनि जग्गा जमिनको सम्बन्धमा स्वामित्व पुरुषको नै अधिनमा रहेको पाइयो ।

### ३.५ सिचाइको अवस्था

पानी कृषकहरूलाई नभई नहुने एक स्रोत हो । पानी विना कृषकहरूले खेती गर्न सक्दैन चाहे त्यो तरकारी खेती होस् या अन्नबाली । जुन सुकै खेतीलाई पनि पानी अपरिहार्य स्रोतको रूपमा आवश्यक छ । यस भरतपोखरी क्षेत्रमा पनी सिचाईको पर्याप्त रूपमा होइन । सिचाईको सहज पहुँच नपुगेको कृषकहरू बताउँछन् । स्थानीय मूल आकाशेपानी वर्षामा मात्र हुन्छ, बाँकी समय महज्जो पैसा तिरेर धाराको पानी हाल्नु पर्दा सिचाईको राम्रो सुविधा नभएको पाइयो । त्यहाँ धाराको पानी महज्जो पैसा तिरेर तरकारी खेती गर्नु पर्ने बाध्यता रहेको पाइयो । यस अध्ययन क्षेत्रमा सेती नदी छ तर नदीको पानी तरकारी उत्पादन गर्ने खेतबारीको सतहभन्दा धेरै तल रहेकाले पानी सिचाइमा समस्या रहेको कृषकले बताएका छन् । सिचाईको अभावमा तरकारी उत्पादनमा समेत असर परेको कृषकको भनाइ रहेको पाइयो ।

### ३.६ उत्पादन सम्बन्धि तालिम

कुनै पनि काम गर्दा तालिमको आवश्यकता पर्दछ तर कृषि एउटा यस्तो पेशा हो जुन मान्छेले जन्मदादेखि नै नमर्दा सम्म पनि माटोमा नै रमदै खेल्दै उसको जीवन सकिन्छ । कृषि पेशामा विना तालिम गर्न नसकिने भन्ने हुँदैन । पहिले पुर्खा बाबुबाजेहरुले गरेको देखेर पनि कतिपय कुरा सिक्न सकिन्छ । हामी अधिकांश कृषका छोराछोरी भएको कारण हामीले पनि सानैदेखि आमाबाबुले गरेको देख्दै सिक्दै आएका छौ । भरतपोखरी क्षेत्रका अधिकांश महिलाहरुले तरकारी व्यवसाय सम्बन्धि कुनै पनि तालिम लिएको पाइएन । थोरै मात्रामा मात्र जिल्ला कृषि कार्यालयले दिएको कृषि तालिममा सहभागी हुनु भएको रहेछ, त्यो पनि २ दिने तालिम । उहाँहरु तालिमपछि मात्र व्यवसायिक तरकारी खेतीमा लाग्नु भएको होइन । उहाँहरु पहिलेदेखि नै तरकारी खेती गरि राख्नु भएको र तालिम पश्चात केही सुधार भएको बताउनु हुन्छ । तरकारी उत्पादनमा नयाँ नयाँ प्रविधिको विकास सँगसँगै मल, बिउँ, औजारहरुको पनि विकास भएको छ र यसको प्रयोग गर्न तालिमको आवश्यकता पर्दछ । अध्ययन क्षेत्रका कृषकहरु पनि तालिम प्राप्त छन् कि छैनन् भन्ने अध्ययन गरिएको छ । तरकारी सम्बन्धि तालिमको विवरण तलको तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ ।

#### तालिका ३.६ : तालिमको आधारमा उत्तरदाता

| तालिमको विवरण   | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|-----------------|--------------------|---------|
| तालिम लिएको छ   | ९                  | १३.८४%  |
| तालिम लिएको छैन | ५६                 | ८६.१५%  |
| जम्मा           | ६५                 | १००%    |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

तालिका ३.५ मा उल्लेख भए अनुसार तरकारी उत्पादन सम्बन्धि तालिम लिनु भएको कृषक १३.८४प्रतिशत र तरकारी उत्पादन सम्बन्धि तालिम नलिएको कृषक ८६.१५प्रतिशत रहेको पाइयो । तालिका अनुसार तरकारी उत्पादन सम्बन्धि तालिमको अभाव भएको पाइयो । परापूर्व कालदेखि नै तरकारी खेती गर्दै आएको र अहिले पनि परम्परागत र आधुनिक आफ्नो स्वज्ञानले जाने अनुरूप गर्दै सिक्दै यस व्यवसाय अगाडि बढाएको पाइयो । कतिपयले तालिम लिन पाए योभन्दा अझै राम्रो गर्न सकिने बताए भने कतिपयले आफूसँग पर्याप्त अनुभव भएकाले तालिमको आवश्यकता नभएको पनि बताए ।

### ३.७ उत्पादन गर्ने तरकारीका प्रकार

व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गर्दा कस्ता खालका तरकारी बढी उत्पादन गर्नुहुन्छ भन्ने कुराको अध्ययन गर्दा मौसमी र बेमौसमी दुवै तरकारी उत्पादन गरेको पाइयो । मौसमी तरकारी उत्पादन गर्दा कम खर्च लाग्ने हुँदा धैरैजसो कृषकहरूले मौसमी तरकारी खेती गरेको पाइयो । बेमौसमी तरकारी खेतीबाट आम्दानी त बढी हुने तर तरकारी लगाउँदा खर्च बढी हुने पाइयो । यस अध्ययन क्षेत्रमा तरकारी उत्पादन गर्ने महिला कृषकहरूले विगतका केही वर्षदेखि मौसमी तरकारीको साथ साथै बेमौसमी तरकारीहरु पनि उत्पादन गरेका छन् । यस क्षेत्रमा लगाउने मुख्य तरकारीहरु घरौला, काक्का, खुर्सानी, गोलभेडा, काउली, बन्दा, फर्सी, धनिया, सिमी, बोडी, लौका, चिचिन्डो, आलु, मटरकोशा, गाजर, मूला, करेला, लसुन, प्याज, सागपात, भेन्टा आदि रहेका छन् । यसमध्ये पनि केही किसानहरूले यि तरकारीहरु बेमौसममा पनि उत्पादन गर्ने गरेका छन् । विभिन्न जातका बेमौसमी तरकारी उत्पादन गर्नको लागि त्यही अनुरूपको हावापानी चाहिन्छ र उक्त अनुकूल वातावरणको सिर्जना गर्दा प्लाष्टिकको घरको प्रयोग गरेको पाइन्छ । उत्पादित तरकारीका प्रकार तलको तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ ।

#### तालिम ३.७ : तरकारी उत्पादनका आधारमा उत्तरदाता

| प्रकार        | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|---------------|--------------------|---------|
| मौसमी मात्र   | ४०                 | ६९.५३%  |
| बेमौसमी मात्र | ०                  | ०%      |
| दुवै          | २५                 | ३८.४६%  |
| जम्मा         | ६५                 | १००%    |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

तालिका ३.६ अनुसार मौसमी तरकारी मात्र लगाउने कृषक ६९.५३प्रतिशत र बेमौसमी र मौसमी दुवै लगाउने ३८.४६प्रतिशत कृषक रहेको पाइयो । बेमौसमी तरकारी मात्र लगाउने उत्तरदाताको संख्या पाइएन ।

### ३.८ व्यवसायिक तरकारी उत्पादनमा पारिवारिक संलग्नता

नेपाल एक कृषि प्रधान देश हो । यहाँका अधिकांश जनताहरु खासमा ग्रामिण क्षेत्रका जनताहरु कृषि पेशामा नै निर्भर रहने गर्दछन् । उनीहरुको कृषि बाहेक अन्य पेशा व्यवसाय हुँदैन । उनीहरु कृषिसँगै पशुपालन व्यसाय सञ्चालन गर्दै आइरहेका हुन्छन् । कृषि र पशुपालन एक आपसमा आत्मनिर्भर हुने गर्दछन् । कृषिमा चाहिने मल पशुबाट उत्पादन हुन्छ भने पशुलाई खुवाउने घाँस, पराल खेतबारीबाट उपलब्ध हुन्छ जसअनुरूप कृषि र पशुपालन ग्रामीण क्षेत्रमा मानिसहरुले सँगै गरेको पाइन्छ । उनीहरुले यसैबाट जीवन निर्वाह गरी रहेका छन् । कृषिमा पनि समय सँगै परिवर्तन र फरकपन आएको छ । कृषिमा पनि विशेष गरी तरकारी उत्पादनलाई व्यवसायको रूपमा लिदै आएको पाइन्छ । अध्ययन क्षेत्रका महिलाहरु पनि तरकारी उत्पादनलाई व्यवसायिक रूपमा गर्दै आएका छन् । परिवारका अन्य सदस्यहरुले तरकारी उत्पादनमा कत्तिको सहयोग गरेका छन् । परिवारका सहभागिता कस्तो छ भनि जान्न खोजिएको छ । तरकारी उत्पादनमा ककसले सहयोग गर्नुहुन्छ भन्ने कुरातलको तालिकामा देखाइएको छ ।

#### तालिका ३.८ : परिवारका सदस्यको संलग्नताको विवरण

| विवरण             | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|-------------------|--------------------|---------|
| स्वयम् महिला      | २७                 | ४१.५३%  |
| पुरुष (श्रीमान्)  | २२                 | ३३.८४%  |
| परिवारका सदस्यहरु | १६                 | २४.६१%  |
| जम्मा             | ६५                 | १००%    |

स्रोत : स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

तालिका नं. ३.७ अनुसार व्यवसायिक तरकारी उत्पादनमा श्रीमान् र परिवारका अन्य सदस्यहरुले कत्तिको सहयोग गर्नुहुन्छ भन्ने अध्ययनमा स्वयम् महिलाले मात्र गर्ने ४१.५३प्रतिशत पुरुष(श्रीमान्) ले ३३.८४प्रतिशत र परिवारका अन्य सदस्यहरुले २४.६१प्रतिशत रहेको छ । सबै व्यवसायिक रूपमा तरकारी उत्पादनमा सबैभन्दा बढी महिला स्वयम् कृषक ४१.५३प्रतिशत काम गर्ने गरेको पाइयो । स्वयम् महिला कृषक नै धेरै समय तरकारी उत्पादनको लागि काम गर्ने पुरुष (श्रीमान्) कोहीको जागिर र कोहीको विदेश हुनाले धेरैजसो महिला दिदीबहिनी नै यस तरकारी उत्पादनमा बढी काम गरेको

पाइयो भने परिवारका अन्य सदस्यहरूले २४.६१प्रतिशत काम गरेको पाइयो । छोराछोरीहरको विद्यालय हुने र पढ्नु पर्ने हुँदा खेतबारीमा समय दिन नसक्ने अनि कतिपय एकात्मक परिवारमा बस्ने हुँदा घरमा आफू र छोराछोरी बाहेक नहुने हुँदा कामदार वा खेताला हाल्ने गरेको उनीहरुको भनाइ छ ।

### ३.९ तरकारी बेच्ने उत्तरदाताको विवरण

तरकारी उत्पादन पछि उक्त तरकारी कहाँ लगेर बेच्ने ? ती तरकारी बेच्नको लागि को जान्छ ? भन्ने कुरा तलको तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ ।

#### तालिका ३.९ : तरकारी बेच्ने आधारमा उत्तरदाता

| विवरण        | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|--------------|--------------------|---------|
| तपाईं स्वयम् | २२                 | ३३.८४%  |
| श्रीमान्     | ६                  | ९.२३%   |
| घरबाट बेच्ने | ३७                 | ५६.९२%  |
| जम्मा        | ६५                 | १००%    |

स्रोत : स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

तालिका ३.८ मा उल्लेख भए अनुसार तरकारी उत्पादन गरिसकेपछि त्यो तरकारी बेच्न परिवारका सदस्य को जान्छ भन्ने प्रश्नको उत्तर हेर्दा महिला स्वयम् ३३.८४प्रतिशत, श्रीमान् ९.२३ प्रतिशत र घरबाट नै सिधै व्यापारीहरूलाई ५६.९२प्रतिशत रहेको छ । प्राय : घरबाट नै सोभै व्यापारीहरूलाई तरकारी बेच्नेको बढी संख्या ५६.९२प्रतिशत रहेको पाइयो भने पोखराको तरकारीमिण्डीमा स्वयम् महिलाहरू ३३.८४प्रतिशत र पुरुषहरू ९.२३ प्रतिशत रहेको पाइयो । अध्ययन अनुसार जहाँबाट बेचे पनि तरकारी बेचबिखनमा भन्ने महिलाहरू नै बढी सक्रिय रहेको पाइयो ।

### ३.१० मल, वित्त र प्रविधिको प्रयोग

व्यवसायिक तरकारी उत्पादनमा उन्नत जातका विउबिजन, मल र प्रविधिको आवश्यकता पर्दछ । तरकारी उत्पादनमा मल, विउं र प्रविधिले प्रत्यक्ष प्रभाव पार्ने हुँदा व्यवसायिक तरकारी उत्पादनमा यसको आवश्यकता पर्दछ । वर्तमान समयमा समय सँगसँगै नयाँ नयाँ प्रविधिहरु विभिन्न हाइब्रिड जातका विउबिजन, छोटो समयमा धेरै फल्ने तरकारीहरूका

बिउँहरु, रासायनिक मलहरु, औषधिहरु, टनेल, औजारहरुको विकास भएको छ। नयाँ नयाँ प्रविधिहरु भित्रिए सँगसँगै किसानहरु पनि त्यही अनुरूप तरकारीहरु लगाउने उत्पादन गर्ने गर्न थालेका छन्। स्थानीय जातका बिउँहरु ढिलो फलनेका साथै कम फलने हुँदा आजभोलि सबै कृषकहरु उन्नत जातका बिउँबिजनमा आकर्षित भएको पाइन्छ। अध्ययन क्षेत्रमा कस्तो मल, बिउँ र प्रविधिको प्रयोग गर्दछन् भन्ने कुरा तलको तालिकामा देखाइएको छ।

### तालिका ३.१० : मल, बिउँ र प्रविधिको प्रयोगको विवरण

| विवरण                      | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|----------------------------|--------------------|---------|
| परम्परागत प्रविधि          | ४                  | ६.१५%   |
| आधुनिक प्रविधि             | ११                 | १६.९२%  |
| परम्परागत र आधुनिक प्रविधि | ५०                 | ७६.९२%  |
| जम्मा                      | ६५                 | १००%    |

स्रोत : स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

माथिको तालिका अनुसार तरकारी उत्पादन गर्दा परम्परागत प्रविधिको प्रयोग गर्ने ६.१५ प्रतिशत, आधुनिक प्रविधिको प्रयोग गर्ने १६.९२ प्रतिशत र परम्परागत र आधुनिक प्रविधिको प्रयोग गर्ने ७६.९२ प्रतिशत रहेको छ। अध्ययन क्षेत्रमा परम्परागत र आधुनिक मल, बिउँ र प्रविधिको प्रयोग गर्ने कृषकहरु बढी पाइयो।

### ३.११ अध्ययन क्षेत्रमा उत्पादन गरिने मुख्य तरकारीहरु

समय सँग सँगै मानिसको चेतनाको स्तरको पनि वृद्धि भएको पाइन्छ। जस अनुरूप तरकारी उत्पादनमा पनि वृद्धि भएको पाइन्छ। ग्रामिण होस् या सहरी क्षेत्र तरकारीहरुको माग पनि बढ्दै गई रहेको छ। ग्रामिण क्षेत्रका मानिसहरु उपभोग सँग सँगै व्यवसायिक रूपमा तरकारी उत्पादन गर्न थालेका छन् भने सहरी क्षेत्रमा मानिसको वृद्धि सँग सँगै तरकारीहरुको माग पनि दिन प्रति दिन बढ्दै गइरहेको छ। यस सँगै व्यवसायीहरु पनि मौसमी तथा बेमौसमी तरकारी खेती गरी आम्दानी गर्न थालेका छन्। यस अध्ययन क्षेत्रमा मुख्य गरी उत्पादन हुने तरकारीहरु निम्न रहेका छन्।

घिरौला, काक्रो, करेला, फर्सी, खुर्सानी, मटरकोशा, बन्दा, काउली, लौका, आलु, लसुन, पिडाँलु, अदुवा, साग, सिमी, बोडी, प्याज, धनिया, चिचिन्डो, मूला, गाजर, आदि रहेका छन् । यी तरकारीहरु मौसम र बेमौसममा दुवै समयमा लगाउने गर्दछन् ।

३.१२ व्यवसायिक तरकारी खेती पश्चात महिलाहरुको जीवनस्तरमा परेको प्रभाव समाजमा लैंगिक आधारमा तोकिएको कार्य विभाजनमा केही सुधार गर्दै परम्परागत रूपमा सञ्चालन भएका कार्यहरुलाई व्यवसायिकिकरण गर्दै आर्थिक उपार्जन हुने गरी केही परिमार्जन गर्दै थप पूँजी र प्रविधिहरुको प्रयोग गरी तरकारी खेतीलाई केवल घरमा खानको लागि नभई व्यवसायिकीकरण गर्दै समाजमा अघि बढेका छन् । यस अध्ययन क्षेत्रमा व्यवसायिक तरकारी खेतीले ग्रामीण क्षेत्रमा संलग्न महिलाहरुको आर्थिक र सामाजिक प्रभाव हेर्न खोजिएको छ । यसै क्रममा कृषकहरुले व्यवसायिक तरकारी खेती गर्न थालेपछि उनीहरुमा परेको आर्थिक, सामाजिक प्रभावलाई उत्तरदाता कृषकहरु प्राप्त जानकारी अनुसार व्याख्या एवम् विश्लेषण गरिएको छ ।

### ३.१२.१ आर्थिक क्षेत्रमा परेको प्रभाव

#### ३.१२.१.क) वार्षिक आम्दानी

भरतपोखरी - ३३ क्षेत्र तरकारी खेतीको लागि उपयुक्त हावापानी, माटो भएको क्षेत्र हो । यहाँ परापूर्व काल देखि नै अन्नबाली भन्दा तरकारी खेती गर्ने गरेको पाइन्छ । यहाँका अधिकांश मानिसहरु तरकारी खेती गर्दछन् । मानिसहरुले दैनिक जीवन सञ्चालन गर्नको लागि केही न केही पेशा व्यवसाय गरेर आर्थिक आर्जन गर्ने गरेको पाइन्छ । परापूर्व काल देखि गरिदै आएको कृषि पेशालाई आधुनिकीकरण गर्दै यसलाई व्यवसायिकरणमा रूपान्तरण गर्दै उनीहरु व्यवसायतर्फ उन्मुख भई आर्थिक उपार्जन गर्न थालेका छन् ।

विभिन्न आम्दानीका स्रोतहरु मध्ये यस तरकारी खेती गरेर आएको आम्दानीसँग यो अध्ययन सम्बन्धित छ । उनीहरुले उत्पादन गरेको तरकारी पोखराको तरकारी मण्डीमा र घरमा नै लिन आउने व्यापारीहरुलाई बेच्ने गरेको पाइयो । आफ्नो जमिनमा प्रशस्त मात्रामा तरकारी लगाउने र केहीले जग्गा भाडामा लिएर पनि तरकारी लगाउने गरेको पाइयो । उनीहरुको वार्षिक रूपमा कति आम्दानी गर्दछन् भन्ने कुरा तलको तालिकामा देखाइएको छ ।

### तालिका ३.१२.१.क. : कृषकहरुको वार्षिक आमदानी विवरण

| क्र.सं. | आमदानीको विवरण | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|---------|----------------|--------------------|---------|
| १       | ५०-६० हजार     | २                  | ३.०७%   |
| २       | ६०-७० हजार     | ३                  | ४.६१%   |
| ३       | ७०-८० हजार     | ३                  | ४.६१%   |
| ४       | ८०-९० हजार     | ५                  | ७.६९%   |
| ५       | ९०-१ लाख       | ८                  | १२.३०%  |
| ६       | १ लाख - २ लाख  | १२                 | १८.४६%  |
| ७       | २ लाख माथि     | ३२                 | ४९.२३%  |
| जम्मा   |                | ६५                 | १००%    |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

तालिका नं. ३.११.१.‘क’ का अनुसार ५० हजार देखि ६० हजार आमदानी गर्ने ३.०७प्रतिशत, ६० हजार देखि ७० हजार आमदानी गर्ने ४.६१प्रतिशत, ७० देखि ८० हजार आमदानी गर्ने ४.६१प्रतिशत, ८० हजार देखि ९० हजार गर्ने ७.६९प्रतिशत, ९० देखि १ लाख सम्म आमदानी गर्ने १२.३०प्रतिशत, १ लाख देखि २ लाख सम्म आमदानी गर्ने १८.४६प्रतिशत र २ लाख माथि आमदानी गर्ने ४९.२३प्रतिशत रहेको पाइयो ।

### ३.१२.१.ख) बचत

व्यवसायिक तरकारी उत्पादनमा संलग्न जति पनि महिला कृषकहरु छन्, उनीहरुले धेरै थोरै रकम जम्मा गरेको पाइयो । उहाँहरुले विभिन्न बैंक, सहकारी वा कसैले समूहमा भए पनि जम्मा गरेको पाइयो भने कसैले सुन, जग्गा जमिनमा समेत लगानी गरेको पाइयो । पहिले बैंकमा जम्मा गर्दै लगेर पैसा धेरै भएपछि बैंक, सहकारीबाट भिक्केर त्यस रकमबाट सुन, जग्गा जमिन किनेको पनि पाइयो । अध्ययनबाट उत्पादनमा लगेका ६५ जना मध्ये सबैले सक्दो बचत गरेको केही नभए दिनको ५० रुपैया भए पनि बचत गर्ने गरेको बताएका छन् । बचतको विवरणलाई तलको तालिकामा देखाइएको छ ।

### तालिका ३.१२.१.ख. : बचत गर्ने संख्याको विवरण

| संस्थाको नाम | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|--------------|--------------------|---------|
| सहकारी       | २४                 | ३६.९२%  |
| बैंक         | २२                 | ३३.८४%  |
| दुवै         | १९                 | २९.२३%  |
| जम्मा        | ६५                 | १००%    |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

माथिको तालिका ३.११.२ का अनुसार सहकारीमा बचत गर्ने ३६.९२प्रतिशत, बैंकमा बचत गर्ने ३३.८४प्रतिशत र बैंक र सहकारी दुवैमा बचत गर्ने २९.२३प्रतिशत रहेका छन् । सबैभन्दा बढी सहकारीमा ३६.९२प्रतिशत र सबैभन्दा कम बैंक र सहकारी दुवैमा २९.२३प्रतिशत बचत गरेको पाइयो ।

### ३.१२.१.ग) खर्च

आम्दानीले व्यक्तिको जीवनमा ठूलो प्रभाव पारेको हुन्छ । उसको लवाइ, खुवाइ, रहनसहन, व्यवहार, मानसम्मान, प्रतिष्ठा, आचरणजस्ता कुराहरु आम्दानीमा निर्भर रहेको हुन्छन् । मानिसले आफ्नो आम्दानी आफ्नो आवश्यकता अनुसार खर्च गर्दछ । अध्ययन क्षेत्रका महिला कृषकहरु तरकारी उत्पादन गरी घर खर्च धान्नुका साथै आम्दानी गरेका छन् । यस क्षेत्रमा तरकारी उत्पादनबाट मासिक २ लाख माथि पनि आम्दानी गर्ने कृषक रहेको पाइयो । तरकारी उत्पादनबाट प्राप्त आम्दानी के के मा खर्च गर्दछन् त भन्ने तलको तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ ।

### तालिका ३.१२.१.ग.: खर्चको आधारमा उत्तरदाता

| खर्चका विवरण              | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|---------------------------|--------------------|---------|
| घर खर्च मात्र             | १३                 | २०%     |
| पुन : लगानी               | २२                 | ३३.८४%  |
| बालबच्चाको पढाइ           | ७                  | १०.७६%  |
| घर खर्च र बालबच्चाको पढाइ | २०                 | ३०.७६%  |
| आफ्नो मात्र खर्च          | ३                  | ४.६१%   |
| जम्मा                     | ६५                 | १००%    |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

माथिको तालिका ३.११.३ मा उल्लेख भए अनुसार तरकारी उत्पादनबाट आएको आम्दानी घर खर्च मात्र गर्ने महिला किसानहरु २०प्रतिशत, पुन : लगानी गर्ने ३३.८४प्रतिशत, बालबच्चाको पढाइमा १०.७६प्रतिशत, घर खर्च र बालबच्चाको पढाइमा ३०.७६प्रतिशत %, आफ्नो मात्र खर्च ४.६१ प्रतिशत रहेको पाइयो । तालिकाबाट तरकारी उत्पादनबाट आम्दानी भएको पैसा आफ्नो लागि मात्र खर्च गर्ने ४.६१ प्रतिशत र तरकारी उत्पादनको आम्दानी पुन : लगानी गरी पुन : उत्पादनमा लगाउने ३३.८४ प्रतिशत सबैभन्दा बढी रहेको पाइयो ।

### ३.१२.२ सामाजिक क्षेत्रमा परेको प्रभाव

#### ३.१२.२.क) संस्थामा आबद्ध

समयको परिवर्तनसँगै नेपालमा पनि विकासका लहरहरु चलिरहेका छन् । त्यस्तै महिला विकासका लागि विभिन्न कार्यक्रमहरु पनि चलिरहेका छन् । त्यस्तै समाजमा कुनै पनि समूह गठन गर्दा अनिवार्य महिला सहभागिता गराइन्छ । नेपालका अधिकांश क्षेत्रमा समूह गठन गरी समूह मार्फत कार्यक्रम सञ्चालन गरिएको छ । अध्ययन क्षेत्रमा महिलाहरु पनि विभिन्न समूहमा रहेको बताए । विभिन्न समूहमा बस्दा अनुदान र सहयोग प्राप्त गर्ने भएको हुनाले महिलाहरु विभिन्न संख्यामा आबद्ध रहेर विकासका काममा लागेको पाइन्छ । यस अध्ययन क्षेत्रका कृषकहरु कुन कुन समूहमा छन् त ? भन्ने कुरा तलको तालिकामा देखाइएको छ ।

### तालिका ३.१२.२.क : संस्थामा आबद्धताको आधारमा उत्तरदाता

| संस्थाको नाम         | उत्तरदाताको संख्या | प्रतिशत |
|----------------------|--------------------|---------|
| आमा समूह मात्र       | ४०                 | ६१.५३%  |
| कृषक समूह मात्र      | ०                  | ०%      |
| टोल विकास संस्था     | ३                  | ४.६१%   |
| आमा समूह र कृषक समूह | २३                 | ३५.३८%  |
| जम्मा                | ६५                 | १००%    |

स्रोत : स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

मथिको तालिका ३.१२.२ के अनुसार आमा समूहमा मात्र ६१.५३प्रतिशत, टोल विकास संस्थामा ४.६१प्रतिशत, आमा समूह र कृषक समूह दुवैमा ३५.३८प्रतिशत संलग्न रहेको पाइयो । कृषक समूहमा मात्र आबद्ध शुन्य रहेको पाइयो भने सबैभन्दा धेरै आमा समूहमा ६१.५३प्रतिशत आबद्ध भएको पाइयो ।

### ३.१२.२.ख) शैक्षिक अवस्था

कुनै पनि मान्छेको जीवन सफल हुनलाई समय अनुरूप आफ्नो क्षमताको विकास गर्दै जानु पर्दछ । बौद्धिक क्षमताले पनि उसको जीवन परिपक्क बनाउन सहयोग गर्दछ । कुनै पनि मानिस केही पेशा व्यवसाय गर्नको लागि त्यससँग सम्बन्ध ज्ञान र सिपको आवश्यकता पर्दछ । शिक्षा बिना मानिस अन्धो हुन्छ । नेपालको परिवेशमा हेर्दा यहाँ शैक्षिक स्तर त्यो पनि महिलाको निकै कम देखिन्छ । नेपालको जनगणना २०७८ अनुसार नेपालको साक्षर जनसंख्या ७९.१५ प्रतिशत रहेको छ । (**Statistics, 2078**) यस अध्ययनमा समावेश महिला कृषकहरुको छोराछोरीहरुको शैक्षिक अवस्थाको बारेमा उल्लेख गरिएको छ । उनीहरुको बालबच्चाहरु निजी र सरकारी कहाँ अध्ययन गर्दै छन् भन्ने उल्लेख गरिएको छ । उनीहरुका सन्तानले गुणस्तरीय शिक्षा पाएका छन् कि छैनन्, उनीहरुको व्यवसायबाट कत्तिको आफ्नो सन्तानलाई पढाउन सहज भएको छ, भन्ने अध्ययन गर्दा उहाँहरुले आफ्नो व्यवसायबाट आएको आम्दानी आफ्नो छोराछोरीको पढाइमा पनि खर्च गरेको पाइयो । यस अध्ययन क्षेत्रका कृषकहरुको सन्तानको शैक्षिक अवस्था तल तालिकामा देखाइएको छ ।

### तालिका ३.१२.२.ख. : अध्ययन क्षेत्रको सन्तानको शैक्षिक अवस्था

| संस्थाको नाम                      | संख्या | प्रतिशत |
|-----------------------------------|--------|---------|
| सरकारी पढाउने (विद्यालय/क्याम्पस) | ९      | १३.८४%  |
| निजी पढाउने (विद्यालय/क्याम्पस)   | ५१     | ७८.४६%  |
| पढाउन नपर्ने                      | ५      | ७.६९%   |
| जम्मा                             | ६५     | १००%    |

स्रोत : स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

माथिको तालिका ३.२.२ का अनुसार सरकारी (विद्यालय/क्याम्पस) पढाउने १३.८४ प्रतिशत, निजी (विद्यालय/क्याम्पस) पढाउने ७८.४६ प्रतिशत र विद्यालय क्याम्पस पढाउन नै नपर्ने ७.६९ प्रतिशत रहेको छ। सबैभन्दा बढी निजी आफ्नो स्वलगानीमा पढाउने ७८.४६ प्रतिशत रहेको पाइयो भने सबैभन्दा कम ७.६९ प्रतिशत विद्यालय/क्याम्पस पढाउन नपर्ने वा छोराछोरी विदेश रहेको पाइयो।

### ३.१२.२.ग) अनुदान/इनाम पुरस्कार

मानिसले काम गरेपछि, मेहनत गरेपछि त्यसको इनामको पनि अपेक्षा राखेको हुन्छ वा भनौ कसैले प्रोत्साहन स्वरूप केही पुरस्कार वा इनाम दिँदौ मान्छेमा भन त्यस काम प्रति लगाव बढ़छ। यस कृषि क्षेत्रमा पनि जिल्ला कृषि कार्यालयले प्रत्येक वर्ष विभिन्न ठाँउका विभिन्न क्षेत्रमा काम गर्ने व्यवसायीहरूलाई सम्मान तथा अनुदानहरू दिई आइरहेको छ। अध्ययन क्षेत्रका महिला कृषकहरूले अनुदान पाउनु भएको छ कि छैन? भन्ने कुरा तलको तालिकामा देखाइएको छ।

### तालिका ३.१२.२.ग. : उत्तरदातालाई पुरस्कारको अवस्था

| अनुदान    | संख्या | प्रतिशत |
|-----------|--------|---------|
| पाएको छ   | ३५     | ५३.८४%  |
| पाएको छैन | ३०     | ४६.१५%  |
| जम्मा     | ६५     | १००%    |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०७९

माथिको तालिका ३.३ मा उल्लेख भए अनुसार यस अध्ययन क्षेत्रका महिला कृषकहरूले अनुदान/इनाम पुरस्कार पाउनु भएको छ? भन्ने प्रश्नको उत्तर हेर्दा पाएको छ भन्नेमा ५३.८४ प्रतिशत र पाएको छैन भन्नेमा ४६.१५ प्रतिशत रहेको पाइयो। यस अध्ययनबाट महिला कृषकहरूले पनि तरकारी खेतीमा धैरै थोरै अनुदान पाउनु भएको पाइयो।

## अध्याय ४

### व्यवसायिक तरकारीखेती गर्दा आईपरेका समस्या र चुनौती

नेपालको कृषि प्रणालीमा महिलाहरूले महत्वपूर्ण योगदान पुऱ्याउँदै आएका छन् । विशेष गरी ग्रामीण क्षेत्रका महिलाहरू प्राय जसो सबै कृषि पेशामा नै निर्भर रहेको पाइन्छ । महिला र पुरुष एउटै उत्पादनका कार्य गर्दछन् तर तिनीहरूको काम फरक प्रकृति र मूल्य अनुसार छन् । यसको मुख्य कारण लैङ्गिक विचारधारा हो । काममा बढी महिला सक्रिय भएको देखिन्छ भने निर्णय प्रक्रियामा भने पुरुषको सहभागिता बढी भएको देखिन्छ । पुरुषको तुलनामा महिलाहरूलाई स्वतन्त्र रूपमा हिड्डुल गर्न बन्देज लगाइन्छ । पुरुषहरूलाई जस्तो सजिलै आयआर्जनका लागि देश, विदेश जान पनि गाहो छ । यसरी महिलाहरूले आयआर्जन गर्न पनि सजिलो छैन । विभिन्न किसिमका समस्या र चुनौतीहर सामना गर्दै अघि बढ्नु पर्दछ । यस अनुसन्धानमा पनि व्यवसायिक तरकारी खेती गर्दा आई परेका समस्या तथा चुनौतीहरूलाई तल उल्लेख गरिएको छ ।

#### ४.१ व्यवसायिक तरकारी खेती गर्दाका समस्याहरू

##### ४.१.१. पारिवारिक सहयोगको कमी

कुनै पनि कार्य गर्दा परिवारको सहयोग साथको आवश्यकता पर्दछ । बिना परिवारको साथ कुनै पनि व्यवसायमा सोचे जति सफलता प्राप्त गर्न सकिन्दैन । यस अध्ययनमा व्यवसायिक तरकारी खेती गर्ने कतिपय महिला कृषकहरूको परिवारका सदस्यले साथ सहयोग नभएको पनि पाइयो । कतिपयका बालबच्चा पढ्ने हुँदा सहयोग गर्ने समय नहुने भने कतिपयका श्रीमानहरु विदेश भएकाले गर्दा पनि साथमा नहुने हुँदा सहयोगको कमी भएको देखियो भने घरका अन्य सदस्यहरु कोही बुढाबुढी भएकोले खेतबारीमा काम गर्न नसक्ने भने कति रोगी भएकाले पनि सहयोग गर्न नसकेको पाइयो । जसले गर्दा महिला किसानहरूलाई घरधन्दाका साथसाथै बारीमा पनि दोहोरो कामको लोड परेको पाइयो । त्यही पनि महिला किसानहरु समय मिलाएर बारीमा काम गर्ने गरेको पाइयो ।

#### ४.१.२ मल तथा बिउ‘बिजनको अभाव

उधोगधन्दा कलकारखाना सञ्चालन गर्न कच्चा पदार्थको आवश्यकता भए भै तरकारी खेती गर्नको लागि पनि त्यसको कच्चा पदार्थ मल तथा बिउबिजनको आवश्यकता पर्दछ । तर समयमा नै मल बिउको अभाव हुँदा महँगो रूपमा किन्तु पर्ने कहिले भनेको बेलामा नै बिउबिजन तथा मल नआइदिने हुँदा कृषकहरुलाई असर पर्दछ । कतिपय अवस्थामा त लागत नै बढ्न जान्छ जसको फलस्वरूप तरकारी महँगो मूल्यमा बेच्नु पर्ने हुन जान्छ । बिउबिजन पनि गुणस्तरिय नआउँदा कोही बोटमा त तरकारी नै नफल्ने हुन जान्छ । अघिल्लो सालमा धेरै फल लागेको बिउँ अर्को सालमा लगाउँदा फल नै नलागेको पनि पाइयो । यसरी समयमा नै मल, बिउबिजन उपलब्ध नहुँदा किसानहरुलाई असर पार्दछ ।

#### ४.१.३ सिपको अपर्याप्तता

कुनै पनि कार्यको लागि त्यससँग सम्बन्धित उपयुक्त सिपको आवश्यकता पर्दछ । यस अध्ययन क्षेत्रका महिलाहरु विना तालिम परम्परागत तरिका र आफूले जाने सुनेका भरमा व्यवसाय गरेको देखिन्छ । यसरी प्रयोग गर्दा कहिले मलको मात्रा बढी भएर विरुवाहर मर्ने तथा कहिले बिउँहरु नउम्नने भएको महिला कृषकहरु बताउँछन् ।

#### ४.१.४. सिचाईको अपर्याप्तता

खेती किसानी गर्नेहरुलाई पानी आवश्यक वस्तु हो । विना पानी खेती किसानी सम्भव छैन । यस अध्ययन क्षेत्रमा सिचाईको अभाव रहेको देखिन्छ । यस ठाउँका मानिसहरुले पर्याप्त मात्रामा सिचाईको सुविधा पाएका छैनन् । सिचाईको लागि धाराको, मूलको पानी धारामा जोडेको हाल्नु पर्ने र उक्त पानी साहै महँगो हुने बताउँछन् । बर्खामा आकाशबाट धेरै पानी आउने हुँदा त्यो बेला प्राय समस्या हुँदैन तर हिउँदमा पानी नपर्ने हुँदा खानेपानीको धाराको पानी जोडेर तरकारीबारीमा हाल्नु पर्ने समस्या रहेको छ, र उक्त धाराको पानी कृषकहरुलाई महँगो पर्ने जाने बताउनु हुन्छ ।

#### ४.१.५ स्थानीय बजार व्यस्थापन नहुनु

स्थानीय उत्पादनको सबैभन्दा पहिलो बजार नै स्थानीय बजार हो । स्थानीय मानिसहरुले उपभोग गर्ने तरकारीहरु स्थानीय स्तरमा नै उत्पादन भई सिधै उपभोक्तासम्म पुग्न सकेको

खण्डमा उपभोक्तालाई पनि खरिद मूल्य कम पर्न जान्छ र किसानहरुलाई पनि उचित मूल्य प्राप्त हुन्छ । फलस्वरूप उत्पादक र उपभोक्ता दुवैलाई फाइदा हुन्छ । तर यहाँ कृषकहरुसँग लिने मूल्य एउटा छ भने बजारमा उपभोक्तासँग बेच्ने मूल्यमा आकाश जमिनको फरक पर्दछ । स्थानीय बजारमा धेरै मात्रामा भारतबाट सस्तो दरमा तरकारी भित्रिदिनाले स्थानीय स्तरका तरकारी उत्पादकलाई मार परेको छ । भारतबाट भित्रिएको तरकारी सस्तो रूपमा बजारमा भित्रिनाले यहाँ उत्पादन भएका तरकारीहरुले बजार नपाउने स्थिति पैदा हुन जान्छ । तरकारी व्यवसायीहरु बारीमा नै तरकारी लिन पुगे पनि आफूले सस्तो रूपमा तरकारी बेच्नु पर्ने तर त्यही तरकारी बजारमा जाँदा महँगो भएर जाने हुँदा स्थानीय कृषकहरुलाई बजार व्यवस्थापन नहुँदा समस्या परेको छ भने उक्त तरकारी बेच्न राती १२ बजे उठेर पोखरा बजार आउनु पर्ने बाध्यता रहेको छ । त्यो पनि पोखराको सब्जी मण्डीमा ठाउँको लागि मात्र राती राती गरेर आउनु पर्ने समस्या छ ।

#### ४.१.६. दुवानीको समस्या

यस अध्ययन क्षेत्र पोखरा बजारदेखि अलि पछाडि नै पर्दछ । पोखरा महानगरपालिका भित्र परे पनि यस क्षेत्र विकासको दृष्टिकोणले अलि पछाडि नै परेको छ । यसका कृषकहरुलाई दुवानी समस्या छ । तरकारी उत्पादन गरेर पनि बजारसम्म पुऱ्याउन नै गाहो छ । आफ्नो घरमा साधन हुने त आफ्नो साधनमा लैजान्छन् तर साधन नहुनेलाई समस्या हुन जान्छ । त्यसैले धेरै जसोले कम मूल्यमा नै बारीबाट नै बेच्नु हुँदो रहेछ । राती राती गरेर बेच्न जानु पर्ने आफ्नो साधन नहुँदा महँगोमा दुवानी खर्च लैजानु पर्ने जसले गर्दा तरकारी बेचेर फर्कदा केही नाफा नहुने सार्वजनिक यातायातको व्यवस्थापन राम्रोसँग हुन नसक्नु निजि गाडीले बढी भाडामा लैजाने हुँदा त्यहाँका कृषकहरुलाई तरकारी बजारसम्म ल्याउन नै समस्या छ ।

#### ४.२ व्यवसायिक तरकारी खेतीका चुनौतीहरु

##### ४.२.१. प्रतिस्पर्धा

घरायसी कामबाट बचेको समय निकालेर त्यस अध्ययन क्षेत्रका महिलाहरुले तरकारी खेती गरी आम्दानी गरेका छन् । थोरै लगानीबाट उत्पादन सुरु गरेका त्यस क्षेत्रका महिलाहरुले सस्तो मूल्यमा बजारमा तरकारी बेच्ने भएकोले उनीहरुलाई जति त्यस व्यवसायबाट फाइदा लिन सक्ने हो त्यो नपाएको देखिन्छ । बजारमा सस्तो रूपमा भित्रिने भारतका तरकारीहरु पोखराको सब्जी मण्डीमा प्रशस्तै भेटिन्छन् । जसको फलस्वरूप उहाँहरुले पनि सस्तो रूपमा

तरकारी बेच्नु पर्ने हुन्छ । भारतको तरकारी र स्थानीय तरकारी वीचमा प्रतिस्पर्धा हुँदा स्थानिय तरकारीले उचित मूल्य नपाउने हुन जान्छ । साथै स्थानीय उत्पादकहरु नहुँदा कसैले महँगो र कोहीले सस्तो दरमा तरकारी बेच्ने गरेको पाइयो ।

#### ४.२.२. प्राकृतिक प्रकोप

बेला बेलामा आइपर्ने प्राकृतिक प्रकोपले किसानहरुको तरकारी खेतीमा क्षति पुऱ्याउने गर्दछ । “भनिन्छ प्राकृतिक प्रकोप बाजा बजाएर आउँदैन ।” यो कति बेला कहाँ कसरी आउँछ थाहै नै नहुने हुनाले यसबाट मानिसको जनधनको क्षति तथा नोक्सान हुन जान्छ । नेपालमा प्रायजसो बढी पहिरो, हावाहुरी, खडेरी, असिना, बढी पानी पर्ने जस्ता समस्याले किसानहरुलाई बढी प्रभावित तुल्याएको पाइन्छ ।

वर्षाको समयमा पानी बढी पर्नाले टनेल नभएका किसानहरुको तरकारी पानीले गर्दा कुहिने, राम्रो फल नलाग्ने, मर्ने तथा पानी बढी भएर बारीमा नै ताल पर्ने जस्ता समस्याहरु हुन्छ । २०७७ सालमा त माथि डाँडावाट पहिरो भरेर वर्षाको समयमा पानीको निकाशा नभएर डुबानमा परेको किसान बताउनु हुन्छ ।

#### ४.२.३. तरकारीहरु कुहिने तथा बिग्रने

तरकारीहरुको उचित भण्डारणको व्यवस्था नहुनाले बेचेर रहेको तरकारी भण्डारणको व्यवस्था नहुनाले कुहिने बिग्रने हुन जान्छ, जसको फलस्वरूप किसानले बिगारेर फाल्नुभन्दा सस्तो मूल्यमा नै तरकारी बेच्ने गरेको पाइयो । स्थानीय स्तरमा नै तरकारी संकलन केन्द्र नहुनाले कतिपय अवस्थामा बजारसम्म तरकारी पुऱ्याउँदा उक्त तरकारीहरु बिग्रने, कुहिने गर्दछ, भने कतिपय अवस्थामा तरकारीहरु बेचेर बाँकी भएको घरमा लैजान सम्भव नभएर सब्जी मण्डीमा नै फ्याकेर जानु पर्ने अवस्था पनि आउँछ, भनेर उनीहरु बताउँछन् ।

#### ४.२.४ विचौलियाको प्रभाव

तरकारी उत्पादनसँगै तरकारीको उचित मूल्य निर्धारण नहुँदा कृषकहरु मारमा परेका छन् । तरकारी किन्न व्यापारीहरु कृषकको घरदैलोमा पुग्ने र त्यहाँबाट सस्तोमा तरकारी ल्याई महङ्गोमा बेच्नेहुँदा कृषकहरुले उचित मूल्य नपाउने र तरकारीको भाउ बजारमा आउँदा आकाश जमिनको फरक पर्न गएको पाइन्छ । यसरी विचौलियाले गर्दा कृषकहरु मारमा परेको उहाँहरुले बताउनु भएको छ ।

## अध्याय ५

### सारांश, निष्कर्ष र सुझाव

#### ५.१ सारांश

“व्यवसायिक तरकारी खेतीले ग्रामीण महिलाहरुमा पारेको आर्थिक तथा सामाजिक प्रभाव” भन्ने शिर्षकमा गरिएको अध्ययन बागमारा वडा नं. ३३ मा व्यवसायिक तरकारी खेतीले ग्रामीण महिलाहरुको आर्थिक तथा सामाजिक अवस्थामा आएको परिवर्तन पहिल्याउनु तथा व्यवसायिक तरकारी खेतीमा ग्रामीण महिलाहरुले भोग्ने समस्या र चुनौतीहरुको विश्लेषण गर्नको लागि तथ्याङ्क संकलन गरिएको थियो ।

बागमारा वडा नं. ३३ मा कृषिमा संलग्न जनसंख्या १९७५ रहेको छ भने व्यवसायिक तरकारी खेती गर्ने जनसंख्या १०५ रहेको छ जस मध्ये ६५ जना महिलाहरु व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतीमा लागेको पाइयो । व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गरिरहेका ६५ जना महिलाहरुको उद्देश्यमूलक नमुना छनौट विधि अनुसार छनौट गरिएको छ । व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतीमा लागेका ६५ जना महिलाको मात्र अध्ययन गरिएको हुँदा यसमा सगणना विधिको प्रयोग गरिएको छ । यस अध्ययनको लागि प्राथमिक तथा द्वितीय दुवै किसिमको तथ्याङ्कहरुको प्रयोग गरिएको छ । प्राथमिक तथ्याङ्क सङ्कलनको लागि अवलोकन, अन्तरवार्ता अनुसूची तथा वैयक्तिक अध्ययन आदि विधिको प्रयोग गरिएको छ । यो अध्ययन वर्णनात्मक विधि प्रयोग गरिएको छ ।

मानव विकास सूचाङ्कमा सहभागी १८७ राष्ट्रहरु मध्ये नेपाल १४५ औ स्थानमा पर्दछ जसमा उमेर पुगेका स्कूले बालबालिकाहरु मध्ये १७.९ प्रतिशत मात्र साक्षर देखिन्छन् जहाँ ५७.३८ प्रतिशत महिला र पुरुष साक्षरता दर ७५.१ प्रतिशत रहेको छ । विकासमा नारीवाद सैद्धान्तिक अवधारणा भित्रका उदारवादी महिलावाद, मार्क्सवादी महिलावाद तथा आर्थिक सिद्धान्त, लैंगिक अवधारणा, लैंगिक विकास रणनितिहरु र समाजका विभिन्न पक्षमा महिलाको स्तर चिन्तकहरुले मानव समाज र संस्कृतिको उत्पत्ति देखि वर्तमान अवस्थासम्म आइपुरदा महिलाको सम्बन्धमा भएका सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक व्यवस्थालाई हेर्दा समाजमा महिलाकोभन्दा पुरुषको स्थान र भूमिका माथि रहेको छ । विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक तथा पुरुषबाट महिलाहरुलाई शोषण, दमन, अन्याय तथा अत्याचार हुँदै आएको पाइन्छ । विकासमा नारीवाद सैद्धान्तिक अवधारणाले महिलाहरुको

पुरुष समान अवसर र अधिकारको वकालत गर्दै महिलाहरूलाई पुरुषको यौन तृष्णा मेट्ने साधन, घरायसी कामकाजका रूपमा मात्र चित्रण नगरी महिलाहरूलाई समान ज्याला, हक, अवसर तथा स्वतन्त्रता प्रदान गरियो भने मात्र महिलाहर पुरुष सरह अगाडि बढ्न सक्छन् । महिला र पुरुष एक सिक्काका दुई पाटा हुन् भन्ने सोच विचारका साथ अगाडि बढ्न सकेमा महिलाहरु समाजमा अगाडि बढ्न सक्छन् उनीहरुले कुनै आन्दोलन, हकको लागि लडिरहनु पर्दैन ।

यस अध्ययनमा संलग्न ६५ जना महिलाहरुको आम्दानीको स्रोत कृषि र केहीको अन्य गैरकृषि व्यवसाय भए पनि मुख्य पेशाको रूपमा व्यवसायिक तरकारी खेती रहेको छ । परापूर्वक कालदेखि नै तरकारी खेतीको लागि प्रख्यात ठाँउ बागमारा रहेकोले यस क्षेत्रमा अधिकांश घरपरिवार तरकारी खेतीमा नै निर्भर रहेका छन् । उनीहरुको पहिलेदेखि नै तरकारी खेती गर्दै आएको तर आफ्नो पालामा केही व्यवसायिक तथा आधुनिकीकरणमा रूपान्तरण गर्दै तरकारी व्यवसाय सञ्चालन गर्दै आएको र परम्परागत रूपमा मात्र गर्दा आम्दानी कम तथा उक्त व्यवसायबाट सन्तुष्टि नभएको, केवल समय बिताउन मात्र तरकारी खेती गरेको र पछि पहिले सासु ससुराले तरकारीको आम्दानी लिने हुँदा आफूसँग पैसाको अभाव हुने हरेक स-साना कुराको लागि सासुसुराको निर्भर रहनु पर्ने करिपय अवस्थामा त आफू तथा छोराछोरी बिरामी हुँदा पनि पैसा नहुने, पैसा सापटी मागेर जानु परेको, तिजमा माइत जाँदा पैसा नभएर माइतसम्म हिडेर जानु परेको तर अहिले आफ्नो आफ्नो अंश पाएपछि आफै व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गर्न थालेपछि आफ्नो आर्थिक तथा सामाजिक अवस्था पनि माथि उठ्दै गएको बताए ।

व्यवसायिक तरकारी खेतीबाट वार्षिक दुई लाखभन्दा बढी कमाउनेको संख्या बढी रहेको छ । जसबाट मासिक २० प्रतिशत घर खर्च गर्ने, पुन तरकारी खेती उत्पादनमा २२ प्रतिशत लगानी गर्ने, बालबच्चाको पढाईमा ७ प्रतिशत, आफ्नो मात्र खर्च ३ प्रतिशत र घर खर्चको साथसाथै बालबच्चाको पढाईमा २० प्रतिशत रहेको छ । आजसम्म बैंकबाट ऋण तिर्दै गरेको, छोराछोरी विवाह, गरगहना खरिद, घडेरी किन्ने तथा छोराछोरीलाई विदेश पठाएको, हालसम्म आफ्नो पनि बैंकमा सेयर भएको, आफू एकलैले पनि घर व्यवहार धान्न सक्ने भएको बताए ।

यस अनुसन्धानमा गरिएको अन्वेषणात्मक र वर्णनात्मक विश्लेषणको आधारमा बागमारा वडा नं. ३३ मा व्यवसायिक तरकारी खेतीमा लागेका ग्रामीण महिलाहरूमा पारेको आर्थिक र सामाजिक अवस्थाको बारेमा अध्ययन गरिएको थियो । उनीहरूले व्यवसायिक तरकारी खेती पश्चात उनीहरूको आर्थिक तथा सामाजिक अवस्थामा के कस्तो प्रभाव पन्यो, त्यस क्षेत्रका महिलाहरूले व्यवसायिक तरकारी खेती उत्पादन गर्दा के कस्ता समस्या तथा चुनौतीहरू भोग्नु पर्छ जस्ता विषयहरूलाई विभिन्न तथ्याङ्क, तालिकीकरण तथा वैयक्तिक घटनाहरूको विश्लेषण गरी सारांश निकालिएको छ ।

## ५.२ मुख्य प्राप्तीहरू

- यस अध्ययनमा रहेका उत्तरदातामा जातिगत आधारमा ब्राह्मण ५१ प्रतिशत र क्षेत्री ४९ प्रतिशत, भाषागतका आधारमा १०० प्रतिशत नै नेपाली भाषा बोल्ने र हिन्दू धर्म मान्ने, उमेरगत आधारमा २० वर्षदेखि ५१ वर्षसम्मका महिलाहरू यस व्यवसायमा लागेको ३१ वर्षदेखि ४० वर्षसम्मका महिलाहरू सबैभन्दा बढी ४३.०७ प्रतिशत रहेको, शैक्षिक अवस्था आधारभूत तहमा ७२ प्रतिशत बाहुल्यता रहेको पाइयो ।
- अध्ययनमा कृषि पेशामा (तरकारी खेती) ७३ प्रतिशत रहेको पाइयो ।
- जमिनको अवस्थालाई हेर्दा उत्तरदातासँग भएको जमिनको संख्यामा ३ देखि ५ रोपनी हुनेको सबैभन्दा बढी ३८ प्रतिशत र सबैभन्दा कम हुने ० देखि १ रोपनी ३ प्रतिशत रहेछ ।
- जमिनमा स्वामित्वको अवस्थालाई हेर्दा बढीमा श्रीमान्‌को नाममा ३५ प्रतिशत र स्वयम् महिलाको नाममा ९ प्रतिशत जमिन रहेछ ।
- उत्पादन सम्बन्धी तालिमको अवस्थालाई हेर्दा निकै कम मात्रामा तालिम लिएको पाइयो । तालिम लिने उत्तरदाता जम्मा ३८.८४ प्रतिशत पाइयो भने तालिम नलिएका उत्तरदाता ८६.१५ प्रतिशत रहेको पाइयो । परापूर्वक काल देखि नै तरकारी खेती गर्दै आएकोले देखासिकी त कोही बाहुबाजेको सिकाई त केही त्यसमा नै गर्दै सिक्दै तरकारी उत्पादन गरेको पाइयो ।
- तरकारी उत्पादनको आधारमा हेर्दा मौसमी तरकारी उत्पादन गर्ने सबैभन्दा बढी ६१.५३ प्रतिशत र दुवै (मौसमी तथा बेमौसमी) मात्र तरकारी उत्पादन गर्ने ३८.४६ प्रतिशत र बेमौसमी मात्र तरकारी उत्पादन गर्ने कृषक नरहेको पाइयो ।

- पारिवारिक सदस्यहरुको व्यवसायिक तरकारी उत्पादनमा संलग्नताको अवस्थालाई चित्रण गर्दा स्वयम् महिलाले मात्र काम गरेको ४१.५३ प्रतिशत देखिन्छ । परिवारका सदस्य २४.६१ प्रतिशत र श्रीमान्‌ले ३३.८४ प्रतिशत तरकारी खेतीमा संलग्न रहेको पाइयो ।
- सिचाईको अवस्थालाई हेर्दा सिचाईको असुविधा रहेको पाइयो । स्थानीय मूल, धारा भए पनि समयमा पानी नआउने र धाराको पानी अत्यधिक महँगो हुने हुँदा पानीको समस्या रहेको पाइयो । त्यस क्षेत्रको केही तल नदी रहेको तर जमिन र नदीको तह धेरै तल रहेको हुँदा सिचाईको लागि समस्या रहेको पाइयो । पानी पर्ने सिजनमा त पानीको त्यति समस्या हुँदैन तर पानी नपर्ने सिजनमा चाहिँ पानीको समस्या हुने गर्दा तरकारी उत्पादनमा समेत असर परेको पाइयो ।
- तरकारी उत्पादनका आधारमा हेर्दा त्यस क्षेत्रमा बढी मात्रामा मौसमी तरकारी ६१.५३ प्रतिशत र दुवै (मौसमी र बेमौसमी) कम मात्रामा ३८.४६ प्रतिशत उत्पादन गरेको पाइयो भने बेमौसमी तरकारी खेती मात्र गर्ने कृषकहरु नरहेको पाइयो ।
- व्यवसायिक तरकारी उत्पादनमा परिवारका सदस्यहरुको संलग्नताको आधारलाई हेर्दा स्वयम् महिला कृषक नै तरकारी उत्पादनमा बढी ४१.५३ प्रतिशत रहेको पाइयो । भने घरका अन्य सदस्यको सक्रियता कम जम्मा २४.६१ प्रतिशत रहेको पाइयो । महिला कृषकको श्रीमान्‌हरुले पनि सहयोग गरेको पाइयो ।
- तरकारी उत्पादनपछि तरकारी बेचबिखन गर्ने आधारमा विवरण हेर्दा घरबाट नै बेचबिखन सबैभन्दा बढी ५६.९२ प्रतिशत रहेको र सबैभन्दा कम श्रीमान्‌हरु (पुरुष) ९.२३ प्रतिशतले तरकारी बेचबिखन गर्ने गरेको पाइयो ।
- मल, बिउँ र प्रविधिको प्रयोगको आधारमा उत्तरदाताहरुको विवरण हेर्दा सबैभन्दा बढी ७६.९२ प्रतिशतले परम्परागत र आधुनिक दुवै किसिमको प्रविधिहरुको प्रयोग गर्ने गरेको र सबैभन्दा कम ६.१५ प्रतिशतले परम्परागत रूपमा नै तरकारी उत्पादन गर्ने गरेको पाइयो ।
- व्यवसायिक तरकारी उत्पादन गर्ने महिला कृषकहरुको वार्षिक आम्दानीको विवरणलाई आधार मानेर हेर्दा सबैभन्दा बढी वार्षिक २ लाखभन्दा माथि आम्दानी गर्ने ४९.२३ प्रतिशत र सबैभन्दा कम आम्दानी ५० देखि ६० हजार गर्ने जम्मा ३.०७ प्रतिशत रहेको पाइयो ।

- व्यवसायिक तरकारी उत्पादनबाट आम्दानी भएर नाफा भएको पैसा बचत गर्ने संस्थाको विवरण हेर्दा सबैभन्दा बढी सहकारीमा ३६.९२ प्रतिशत र सबैभन्दा कम बचत गर्ने बैंक र सहकारी दुवै संस्थामा २९.२३ प्रतिशत रहेको पाइयो ।
- खर्चको आधारमा उत्तरदाताको विवरण हेर्दा सबैभन्दा बढी खर्च ३३.८४ प्रतिशत पुनः लगानीमा र सबैभन्दा कम खर्च स्वयम् महिला व्यवसायीको आफ्नो मात्र खर्च ४.६१ प्रतिशत रहेको पाइयो ।
- महिला व्यवसायी कृषकहरु विभिन्न संस्थामा आबद्धताको आधारमा विवरण हेर्दा सबैभन्दा बढी ६१.५३ प्रतिशत आभा समूहमा र सबैभन्दा कम ४.६१ प्रतिशत टोल विकास संस्थामा आबद्ध रहेको पाइयो ।
- अनुदानको विवरणलाई आधार मानेर हेर्दा अनुदान पाएको ५३.८४ प्रतिशत महिला कृषकहरु र नपाएको ४६.१५ प्रतिशत कृषकहरु पाइयो ।

### ५.३ निष्कर्ष

- उदार महिलावादले भने जस्तै समान अवसर दिएको खण्डमा पुरुषहरुले जस्तै महिलाहरुले पनि समान उपलब्धि प्राप्त गर्न सक्छन् भन्ने कुरा यसबाट प्रष्ट भएको छ किव्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती स्वयम् महिला आफैले आफ्नो स्वामित्वमा आएपछि वा भनौ घरपरिवारको अंशबण्डा भएपछि आफै लगानीमा यस व्यवसाय गर्न थाले । त्यस पश्चात उनीहरुको आर्थिक अवस्था, स्वास्थ्य अवस्था, ल्वाई खुवाई, बचत तथा आफ्नो सन्तान विद्यालय/क्याम्पस पढाउने ७८ प्रतिशत महिला कृषकहरु रहेको पाइयो । कतिपयले यसै आम्दानीको बचतबाट छोराछोरीलाई विदेश पढौन समेत पठाएको पाइयो ।
- ग्रामीण भेगमा बसोबास गर्ने साधारण रहनसहनमा हुँकेका महिलाहरु जो एक दुई जना मान्छेहरुको अगाडि बोल्न पनि डराउने, ससुरा तथा श्रीमान्‌को नामबाट चिनिने महिलाहरु अहिले समाज अगाडि बोल्न सक्ने नेतृत्व गर्न सक्ने आफ्नो नामबाट चिनिने तथा परिवारलाई चिनाएका छन् । घरबाट बाहिर निस्केर उनीहरुको आत्मविश्वासका साथै बौद्धिकता, सामाजिक पक्ष, राजनितिक पहुँच समेत बढेको छ ।
- पोखरा महानगरपालिका भित्र नै परे पनि अलि पछाडि परेको ठाँउ हुनाले त्यहाँ भौतिक सुविधाहरुको पहुँच कम छ । बाटो त सबै ठाँउमा पुगेको छ तर यातायातको असुविधा,

तरकारीहरुमा आवश्यक पर्ने मल बिउँ अभाव, तरकारी ढुवानीमा समस्या, बिचौलियाको समस्या, उचित बजार व्यवस्थापनको समस्या, तालिम तथा सहजीकरणको व्यवस्थामा कमी, उचित प्राविधिकहरु नहुनु तथा तराईबाट, भारतबाट आएका सस्ता तरकारीहरुसँग प्रतिस्पर्धा गर्नु पर्ने तथा प्राकृतिक प्रकोपले व्यवसायमा चुनौतीहरु रहेको कृषकहरुको भनाई थियो ।

- वैयक्तिक घटना ७ मा श्रीमान्‌ले विदेशबाट पैसा पठाउने आफूले त्यही पैसाले घर व्यवहार धान्ने गरेको तरकारी त लगाउने तर केवल घरमा खानको लागि मात्र प्रयोग हुने अरुहरुले तरकारी व्यवसाय गरेको देखदा श्रीमान्‌लाई म पनि तरकारी उत्पादन गर्दू भन्दा घर व्यवहार विगार्न मन छ, एकलै आइमाई मान्छे बाहिर हिड्दा घर विगार्दून जस्ता परम्परागत पितृसत्तात्मक पुरुष प्रधान समाजको सामाजिक संरचनाको उपजको रूपमा देखिन्छ ।
- आर्थिक सुधारले महिलाको जीवन स्तरलाई परिवर्तन गर्दू भन्ने यस अध्ययनबाट देखिएको छ । आर्थिक अवस्था राम्रो हुने वित्तिकै उनीहरुको अधिकार र स्वतन्त्रतामा पनि सुधार हुँदै जान्छ, आम्दानीपछिको खर्चको निर्णय गर्ने, बचत गर्ने गरेको पाइयो । यसरी महिलाहरु आत्मनिर्भर भएको पाइयो । यहाँ आर्थिक सिद्धान्त लागू भएको पाइन्छ ।
- आर्थिक स्तरको विकास सँगसँगै महिलाको जीवन पढ्दतीमा नै परिवर्तन भएको कुरा यस अध्ययनबाट देखिएको छ । आर्थिक सुधारसँगै उनीहरुको हक अधिकार र स्वतन्त्रतामा सुधार भएको पाइयो । आम्दानी पछि खर्चको निर्णय गर्ने बचत गर्ने काम महिलाको नाममा पनि पाइयो । त्यसैगरी उत्पादनपछि आर्थिक सुधारसँगै महिलाहरु आत्मनिर्भर बन्न सकेको पाइयो । अध्ययन अनुसार तरकारी उत्पादनले महिलाको आर्थिक तथा सामाजिक विकास भएको छ भन्न सकिन्छ ।
- मार्क्सवादी महिलावाद सिद्धान्त अनुसार महिलाहरुलाई पुरुषको सहयोगी, सम्पत्तीको हस्तान्तरणको लागि छोरा जन्माउने वस्तु, घर भित्रको काममा मात्र सिमित राख्ने, सम्पत्ति पुरुषको नियन्त्रणमा रहने, सबै वर्गका महिलाहरु पुरुषमाथि आश्रित रहनु पर्ने भनिएको छ । यस अध्ययनको घटना ८ मा छोरी मान्छे घर बाहिर निस्कन्तु हुँदैन, घरको काममा मात्रै सिमित हुनुपर्छ, बाहिर निस्कने हिड्डुल गर्नु हुँदैन भन्ने आफ्नो कमाई भने

आफ्नो मोजमस्तीमा उडाउने जस्ता व्यवहारले गर्दा महिलाहरूले शोषण र दबाब भोग्नु पर्ने अवस्था रहेकोले यहाँ यो सिद्धान्त लागू भएको पाइन्छ ।

#### ५.४ सुभाव

यस व्यवसायिक तरकारी खेतीले भरतपोखरी बागमाराका महिलाहरूमा पारेको आर्थिक तथा सामाजिक प्रभावको बारेमा पोखरा वडा नं. ३३ मा गरिएको अध्ययनमा अध्ययन पश्चात केही सुभावहरु राखिएको छ ।

- तरकारी उत्पादनलाई दिगो बनाउनका लागि तरकारी उत्पादन र व्यवस्थापन सम्बन्ध कार्य गर्ने समय, मल, बिउँ, प्रविधि छनौट गर्ने किन्ने, तरकारी बेच्ने, पैसा लगानी गर्ने, बचत गर्ने सबै कार्यमा स्वयम् महिलालाई स्वतन्त्रता दिनु पर्ने देखिन्छ ।
- उत्पादकले मल, बिउँ र प्राविधिक समयमा पाउनका लागि कृषि सामग्री भण्डारको निर्माण आवश्यक देखिन्छ ।
- तरकारी बेच्नको लागि संकलन केन्द्रको स्थापना आवश्यक देखिन्छ ।
- बजार व्यवस्थापन र कृषि सम्बन्ध तालिमको आवश्यकता देखिन्छ ।
- तरकारीको लागत अनुसारको मूल्य निर्धारण, कृषकलाई प्रोत्साहन गर्नका लागि स्थानीय स्तरमा स्थानीय उत्पादनलाई प्राथमिकता दिनु पर्ने र स्थानिय स्तरका यस्ता उत्पादकलाई प्रचार, सम्मान र पुरस्कृत गर्नु जरुरी छ ।

## सन्दर्भ सामग्री

अधिकारी, कृष्ण प्रसाद (२०६५), खेती सिंचाई आयोजनाले तरकारी खेतीमा पारेको प्रभावको अध्ययन, अप्रकाशित शोधपत्र, समाजशास्त्र/मानवशास्त्र विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय ।

अधिकारी, यश प्रसाद (२०५७), सामाजिक न्याय नेपालको सन्दर्भ, प्रजातन्त्र सम्बद्धन केन्द्र, काठमाडौं ।

अर्याल, भोजेन्द्र (२०६२), लैङ्गिक दिक्षान्तर, काठमाडौं : पुस्तक प्रकाशन, किर्तिपुर ।

आचार्य, बलराम (२०६२), सामाजिक विश्लेषकको सैद्धान्तिक ढाँचा, काठमाडौं: विद्यार्थी पुस्तक प्रकाशन, कीर्तिपुर काठमाडौं ।

आचार्य, चेतराज (२०६६), खेतीमा लैङ्गिक सहभागिता मौजा गा.वि.स. को अध्ययन अप्रकाशित शोधपत्र अप्रकाशित शोधपत्र समाजशास्त्र/मानवशास्त्र विभाग, पृथ्वी नारायण क्याम्पस पोखरा, त्रिभुवन विश्वविद्यालय ।

आर्थिक सर्वेक्षण (२०७५/७६), नेपाल सरकार अर्थ मन्त्रालय, आर्थिक सर्वेक्षण, केन्द्रिय तथ्याङ्क विभाग (२०७६), नेपाल सरकार ।

आर्थिक सर्वेक्षण (२०७८), नेपाल सरकार अर्थ मन्त्रालय, आर्थिक सर्वेक्षण, केन्द्रिय तथ्याङ्क विभाग (२०७८), नेपाल सरकार ।

एफ डब्ल्यु एल डी, (२०५८), बेइजिङ कार्य योजनाको पुनरावलोकन सम्बन्धी दस्तावेजको सङ्गालो, महिला कानून र विकास मञ्च ।

खन्ती, प्रेम कुमार (२०५५), उत्पत्ति मानव सभ्यताका केही पथको ऐतिहासिक एवं मानवशास्त्रीय अध्ययन, नेपाल र एसियाली अनुसन्धान केन्द्र, किर्तिपुर: त्रिवि. ।

गौतम सम्भन्ना, (२०७३), परिवार नियोजनका साधनको प्रयोगमा महिलाको निर्णयात्मक भूमिका एवम् प्रयोगमा रहेको समस्या र चुनौति सम्बन्धी समाजशास्त्रीय अध्ययन अप्रकाशित शोधपत्र मानवशास्त्र विभाग, पृथ्वीनारायण क्याम्पस, त्रिभुवन विश्वविद्यालय ।

गुरुड, शान्ति (२०६९), तरकारी उत्पादनले कृषक माथि पारेको प्रभाव पोखरा-५ मालेपाटन कास्कीको अध्ययन, अप्रकाशित शोधपत्र, समाजशास्त्र मानवशास्त्र विभाग, पृथ्वीनारायण क्याम्पस, त्रिभुवन विश्वविद्यालय ।

गौतम, मिना कुमारी (२०६९), माछापुच्छे गा.वि.स. कास्कीमा तरकारी उत्पादनले महिलाको सामाजिक आर्थिक अवस्थामा पारेको प्रभावको अध्ययन, अप्रकाशित शोधपत्र समाजशास्त्र/मानवशास्त्र विभाग, पृथ्वीनारायण क्याम्पस, पोखरा ।

चौलागाई, तिलकप्रसाद, पोखरेल नानिराज, सापकोटा केशवराज (२०६१), लैङ्गिक अध्ययन काठमाडौं किर्तिपुर : न्यू हिरा बुक्स इन्टरप्राइजे ।

डेविड जोन (१९६८), इन्साइक्लोपेडिया अफ साइन्स, ग्रेट ब्रिटेन: फाइडेन प्रेस लिमिटेड । दाहाल, पेशल र खतिवडा, सोमप्रसाद (२०५८), नेपाल समाज संस्कृतिको परिचय, भोटाहिटी काठमाडौं: एम.के. पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्युटर्स ।

बस्याल, यज्ञप्रसाद (२०६५), गुजारा कृषि प्रणालीका परिवर्तित स्वरूपहरु, अप्रकाशित शोधपत्र अप्रकाशित शोधपत्र समाजशास्त्र/मानवशास्त्र विभाग, पृथ्वीनारायण क्याम्पस पोखरा ।

बराल, शिवजी (२०६४), भरतपोखरी गा.वि.स. मा व्यवसायिक गोलभेडा खेती सम्बन्धी समाजशास्त्र/मानवशास्त्र विभाग, पृथ्वीनारायण क्याम्पस, त्रिभुवन विश्वविद्यालय ।

भुसाल शान्ती (२०६९), तरकारी उत्पादनले कृषक माथि पारेको प्रभाव सम्बन्धी, अप्रकाशित शोधपत्र समाजशास्त्र मानवशास्त्र विभाग ।

भासिन, कमला (२००३), पितृसत्ता के हो ? न्यू दिल्ली : कल फर वुमन ।

महिला सशक्तिकरणका लागि कानुनी अधिकार (२०६२), श्रावण, महिला जागरण तथा विकास केन्द्र, काठमाडौं ।

मार्क्स, कार्ल (१९७७), कम्युनिष्ट पार्टीको घोषणा पत्र मस्को प्रगति प्रकाशन, थेउरीटिकल सोसोयोलोजी, जयपुर: भारत ।

मेहता, चेतन (१९९६), महिला एंवम् कानुन, न्यू दिल्ली : आशिष पञ्जावी हाउस ।

पौडेल, हिमराज (२०६८), महिला सशक्तिकरणका लागि पैतृक सम्पत्ति, महिलाहरुको समान अधिकार सम्बन्धी एक समाजशास्त्रीय एजेन्डा ।

थापा, कृष्ण बहादुर (१९८५), वीमन एण्ड सोसियल चेब्ज इन नेपाल, काठमाडौं: प्रकाशक अम्बिका थापा ।

नेपाल जनगणना (२०७८), नेपाल सरकार ।

राष्ट्रिय योजना आयोग (२०६४), नेपाल सरकार ।

सुवेदी, रामचन्द्र (२०६४), अरुणोदय, नेपाल राष्ट्र बैंक कर्मचारी संघ केन्द्रिय समितिद्वारा  
प्रकाशित

सुवेदी, विष्णु (२०६५), नेपालको राष्ट्रिय नीतिहरुको विश्लेषणात्मक संहिताकरण, काठमाडौँ:  
पैरवी प्रकाशन ।

श्रेष्ठ, गुणकुमार, श्रेष्ठ प्रेमकुमार र अधिकारी टोपबहादुर (२०६६), घरबगैचा व्यवस्थापन,  
प्रतिभाटोल, नयाँगाउँ, पोखरा, सिप हस्तान्तरणद्वारा सशक्तिकरण(नेप्ट) ।

अंग्रेजी सन्दर्भ सूची

Agrawal, Bina (1998). *A field of one's own gender and land rights in South Asia*,  
Cambridge University.

Benett, Lynn (1977). *Dangerous wives and sacred sisters social an symbolic roles of  
high caste women in Nepal*. A PhD. Dissertation Colombia University.

Care, C.I.(2015).*Nepal, Gender relations in Nepal overview*. Updated Report.

GON, G.O. (2072). *Constitution of Nepal*, Kathmandu: Nepal Low Commission.

Ritzer, George (1996). *Modern sociological theory*, New Delhi: MC Graw Hill  
Company.

Shtrii, Shakti(2001), *Woman and children of Nepal(in figures 2001)*, Calendar.

## परिशिष्टाइकहरू

अनुसुची क

(वैयक्तिक घटना अध्ययन)

घटना अध्ययन-१

मिति: २०७८/१०/०३

पोखरा महानगरपालिका बागमारा-३३ निवासी ४५ वर्षिया घटना अध्ययन १ उनी एक मेहनती किसान हुन् । १५ वर्ष अघि डाँडागामबाट भरेकी उनी ६ जनाको परिवार धानेकी छन् । ४ जना छोराछोरीहरूलाई पढाउँनको निम्न बागमाराको चैनपुर भरेकी उनी व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतीमा लागेको १० वर्ष भन्दा माथि भयो । पहिले पहिले आफूलाई खानाको रूपमा मात्र लगाउँदै आएको तर पछि अरुले व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गरेको देखि त्यही अनुरूप आफूले पनि तरकारी उत्पादन गर्दै आएको बताउँछन् ।

सामान्य लेखपढ गर्न मात्र जानेको घरायसी समस्याको कारणले गर्दा पढन पाइएन त्यसैले बालबच्चा पढाउँन तल चैनपुर भरेको बताइन् । श्रीमान् विदेश जानुभयो उहाँले कमाएको पैसाले जग्गा किन्यौ । ३ रोपनी उहाँ गएपछि कमाएर पठाएको पैसाले घर बनाउँदै ठिक्क भयो । घर खर्चमा पनि समस्या आउन थाल्यो । वरपरका छिमेकीले तरकारी फलाएर बेचेको देख्दा मलाई पनि तरकारी खेती गर्न मन लागेर बाँकी जग्गामा तरकारी लगाउन थाले । मैले आजसम्म तालिम लिएको छैन । आफ्नै ज्ञानले साथीहरूसँग सिकेर लगाउँछौ । जग्गा थोरै छ । केटाकेटी पढने भन्दै खासै सहयोग गर्दैनन् । छिमेकीहरूसँग पर्म गरेर काम गर्दौ । वर्षमा ४०-५० हजार सम्मको आम्दानी हुन्छ । पहिले पहिले घर घरमा तरकारी बेच्न जानु पर्यो । अहिले व्यापारीहरू घरमा नै आएर तरकारी लैजान्छन् । त्यसैले सस्तोमा लैजान्छन् । उनीहरुको मूल्यम नै हामीले तरकारी दिनु पर्दछ । बिहानै उठेर मण्डीमा बेच्न लैजान गाडीको राम्रो सुविधा छैन । आफ्नो गाडी छैन । यही आएकोलाई दिदाँ राम्रो मूल्य पाइदैन । किसानहरुले उचित मूल्य पाइदैन । बजारमा त्यही तरकारी महँगोमा बेच्दा नरमाइलो लाग्छ । त्यही पनि तरकारी खेतीले गर्दा पैसा भइराख्छ । सहकारीमा बचत गरेकी छु । छोराछोरीलाई चाहिदा दिने गरेकी छु । अहिले कोरोनाले गर्दा व्यवसायलाई असर परेको छ । राम्रो मूल्य नि दिदैनन् । कहिले त लिन नि आउँदैनन् । कुहिएर जानु भन्दा त्यही भए पनि ठिक लाग्छ भन्ने उनको भनाई छ ।

## घटना अध्ययन - २

मिति : २०७८/१०/०३

बागमारा वडा नं. ३३ निवासी ३७ वर्षिया घटना अध्ययन २ को परिवार मध्यम खालको छ। हाल ३ छोरा, छोरी, श्रीमान् र आफू सहित ५ जनाको परिवार छ। उहाँले १२ कक्षासम्म पढनु भएकोले अन्य महिलाहरुको अनुपातमा शिक्षित महिलाहरु मध्येमा पर्दिन्।

बागमारा क्षेत्र पहिल्यैदेखि नै तरकारी खेतीको लागि उर्वर भूमि भएकोले त्यहाँका मानिसहरुले पहिलेदेखि नै तरकारी खेतीमा निर्भर हुने गरेको पाइन्छ। त्यसैले त्यहाँ बिहे गरेर आउने प्राय जसो बुहारीहरु घर भित्रिए देखि नै तरकारी खेती गर्दै आएको उहाँको भनाइ छ। आजसम्म कुनै तालिम नलिएको लगाउँदै जाँदा अनुभवले सिकाउँदै जाँदो रहेछ। श्रीमान्‌ले किराना पसलको साथसाथै फेस हाउस पनि राख्नु भएको छ। हामी दुवै जना मिलेर दोकान, खेतबारीमा मिलेर काम गर्दौँ। अहिले सम्म कुनै ऋण लिएको छैनौँ। यही तरकारी बेचेको पैसाले घर खर्च चलाउँछौ। पसलको आम्दानी बचत हुन्छ। कहिले काही पसलमा नै लगानी नि गर्दौँ। श्रीमान् श्रीमति मिलेर काम गर्ने हुँदा सजिलो छ। तरकारी बेच्न मण्डीमा १२ बजे उठेर जानु पर्दै। मेरो त श्रीमान् जानु हुन्छ। प्राय जसो म उहाँले नभ्याउँदा मात्र हो जाने। बजारको समस्या छ, तरकारीको उचित मूल्य छैन। राती राती गरेर ठाउँ कुर्नुको लागि मात्र जानुपर्दै नन्हे बेच्ने ठाउँ नै पाइदैन। तरकारीहरु भेनमा हालेर लैजाने हो। भाँडा महँगो छ। फेरि मण्डीमा पनि भाँडा तिर्नुपर्दै, डोको २० रुपियाँ। यसले गर्दा किसानहरुलाई मर्का पर्दै। अहिले नि भने मल आएको छैन भन्छन्, मारमा त किसान नै पर्दिन्। तरकारी खेतीबाट वार्षिक ३ लाख सम्म आम्दानी हुन्छ, तर खर्च पनि हुन्छ। यसो दुःख सुःख गरेर जोगाएर अहिले सम्म ५ तोला जति सुन जोडेको छु। बैंकमा ५ लाख जति छ। बचत अरु त घर खर्च यता उता गर्दै सकिन्छ। अलि अलि आम्दानी भए पछि समाजमा हेर्ने नजर नै फरक हुँदो रहेछ। आम्दानी भए पछि परिवारले नि सहयोग गर्ने, छरछिमेकले पनि सोध्ने, साथ दिने, इज्जत हुने गर्दो रहेछ।

## घटना अध्ययन - ३

मिति : २०७९/१/३

बागमारा-३३, कालिकास्थानकी खत्री ३५ वर्ष भइन्। एस. एल. सी. सम्म पढेकी उनी १ छोरा, १ छोरी, श्रीमान् र आफू सहित ४ जनाको परिवार छ।

मेरो श्रीमान् विदेशमा कार्यरत हुनुहुन्छ। म पोखरामा भाडामा कस्मेटिक पसल सञ्चालन गरे तर व्यवसायबाट त्यति राम्रो आम्दानी नभएको र छोरा पाएको हुँदा स्वास्थ्य अवस्थाले दिएन त्यसैले पोखरा छोडेर गाउँमा नै फर्के। त्यसपछि वि.सं. २०७४ साल देखि तरकारी खेती गर्न थाले। व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गर्न थाले पछि श्रीमानको पैसा बचत हुन्छ। आफ्नो घर खर्च, केटाकेटीको खर्चमा खर्च हुन्छ। छोराछोरीलाई नजिकै बोर्डिङमा पढाएकी छु। तरकारी खेतीको आजसम्म कुनै तालिम लिएको छैन आफै देखेर नि जानिदो रहेछ। गर्दा गर्दा अहिले तालिम लिएको भन्दा बढी जानि जानेकी भइएको रहेछ। व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतीबाट खाडी मुलुकमा गएर कमाउने बुढाले भन्दा घरमा बसेर तरकारी खेती गर्ने बुढीले बढी कमाउँछन्। श्रीमान् विदेश गए पछि यो व्यवसाय नगरम छोडौँ जस्तो लागेन भनेर सोध्दा कहाँ छोड्नु हुँदो दिन दिनै पैसा आउँछ भनेर भन्तु भयो।

राति नै १२ बजे उठेर तरकारी बेच्न पोखराको मण्डी बजार आउनु हुन्छ। उहाँ र म विहान भर तरकारी बेचेर ११ बजे घर फर्किन्छौ। घरमा गएर पकाएर खाँदा १२ बज्छ। रातीको निन्दा पुऱ्याएर बेलुका ४ बजे फेरी बारीमा गई काम गरी भोलिको लागि तरकारी टिपेर ठिक्क पाढ्यौ। यसरी नै दिनचर्या वित्छ।

व्यवसाय गर्नु अघि र पछिको अवस्था कस्तो थियो? भनेर सोध्दा खासै फरक त छैन तर मानिससँग आम्दानीको स्रोत भए पछि व्यवहारमा अलि फरक पाइदो रहेछ। मान्छेको हेर्ने दृष्टिकोणमा फरक महसुस गरेकी छु। आफ्नो हातमा पैसा भए पछि बिरामी हुँदा अरुको आसमा बस्नु नपर्दो रहेछ। बुढाहरुले नि मेरो पैसामा बसेर खाएकी छस् भन्ने जस्ता शब्दहरु सुन्नु नपर्ने हुँदा खुशी लाग्छ।

व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतीबाट मैले वार्षिक ३ लाख सम्म आम्दानी गर्ने गरेकी छु। श्रीमान्‌को पैसा बैंकमा जम्मा गरेकी छु। घर खर्च गरेर बाँकी भएको पैसाले चाहि मलाई

सुन लगाउन सौख छु । त्यसैले छोराछोरीलाई आफूलाई गहना जोड्ने गरेकी छु । अहिलेसम्म ऋण गर्नुपरेको छैन त्यही नै ठूलो त हो । अहिले आफै तरकारी उत्पादन गर्दू र बेच्छु । तरकारी लगाउँदा खेताला हाल्छौ अहिले खेताला अलि महज्जो भएको छ । समयमा मल बिउँ पाइदैन, बर्खामा त पानीको समस्या हुँदैन । हिउँदमा चाहि अलि समस्या हुन्छ । सिचाइको लागि धाराको पानी हाल्नु पर्दा महज्जो हुन्छ । खेतालाको ज्याला, मल, बिउँ, ढुवानी खर्च, मण्डीको भाडा गर्दा किसानलाई त सधैँ मार नै पर्दै । यहाँ त सस्तो बजार भाउभन्दा कम मूल्यमा बेच्नु पर्दै । त्यही तरकारी बजारमा जाँदा आकाश जमिनको फरक हुन्छ । कुन तरकारीको कति भाउ भयो, कुन तरकारीमा नाफा बढी भयो भनेर टिपेर राख्ने गरेकी छु ।

वि.सं. २०७७ सालमा वडाबाट एउटा स्प्रे र टनेलको ५०% पैसा अनुदान पाए । दुःख सुःख नै जिन्दगी रहेछ । दुःख गरेर नै पछि सुःख पाइएला । छोराछोरी राम्रो पढ्दै छन् । अलि अलि बचत भएको छ । दुवै जनाको बचतको पैसाले लेखनाथमा एउटा घडेरी जोडेकी छु । साथमा पैसाको अभाव हुँदैन । स्वास्थ्य अवस्था नि राम्रो छ । अरुको भर पर्नु पर्दैन । मण्डीमा ल्याएको तरकारी सबै विक्रैन । बाँकी भोलिपल्ट बेच्छौ । अनि बाँकी भएको यही फालेर जान्छौ । कोही कोही सस्तोमा लैजान आउनु भयो भने दिन्छौ । नत्र त यही फाल्छौ । फर्काएर लैजान गाहो फेरी गाडीमा भाडा तिर्नुपर्दा घाटा हुन्छ ।

त्यसैले फाल्छौ यही । तरकारी बाहेक सबै किन्तु पर्दै । अलि अलि मात्र हुन्छ । अन्न बाली भएको जग्गामा तरकारी खेती नै गरिन्छ । आफ्नो तरकारी बेचेर कहिले काहि नौलो तरकारी काउली, बन्दाहरु लाउने गरेकी छु । कति खानु त्यही घिरैला, फर्सी, लौका । तरकारीको लागि कम्पोष्ट मल बनाउने, विषादि बनाउने र बारीमा उत्पादनकै काम गर्ने मेरो बानी नै परिसकेको छ । अहिले मेरो जीवनस्तरमा धेरै परिवर्तन भएको छ । छरछिमेकमा वादविवाद छलफल हुँदा आफूले जाने बुझेका कुरा सरसल्लाह पनि दिन्छु । यसरी तरकारी उत्पादन सँगै आर्थिक सुधार भएको, चेतनामा विकास भएको र आत्मनिर्भर बन्न सकेको उनको अनुभव रहेको छ ।

## घटना अध्ययन - ४

मिति : २०७९/१/३

बागमारा -३३ स्थाई घर भएकी ४६ वर्षिय अधिकारी व्यवसायिक तरकारी खेतीमा लागेको ३० वर्ष भयो । १६ वर्षको उमेरमा विवाह गरेकी अधिकारी २ छोरी र १ छोरा गरी ३ जना सन्तान छन् । सानो छदा उचित शिक्षा नपाएपनि एस.एल.सी. सम्म पढेकी उनी सामान्य हिसाब किताब गर्न सक्ने भएकी छिन् । आफ्नो परिवारका साथै व्यवसायिक तरकारी उत्पादन गरी आम्दानीको मुख्य स्रोत बनाएकी छिन् ।

उनका अनुसार श्रीमान् शिक्षक हुनुहुन्थ्यो, सासु ससुरा खेती किसानी गर्नु हुन्थ्यो । खान लाउनको दुःख सो थिएन तर यहाँ तरकारी उत्पादन राम्रो हुने भएकोले विवाह गरेर आए देखि नै यही व्यवसाय गर्दै आए । पहिले पहिले घरघरमा डोकामा तरकारी बेच्न जानुपर्थ्यो तर अहिले पोखराको सब्जी मण्डीमा बेच्न थाल्यौ । घरघरमा डुलेर सब्जी बेच्नु पर्दा साहै दुःख हुन्थ्यो तर अहिले मण्डीमा बेच्न पाउँदा सहज भएको छ । श्रीमान्‌को तलबको भरमा मात्र छोराछोरी पढाउ, घर खर्च चलाऊ गाहो हुने भएकाले म यसै खेतीतर्फ आकर्षित भए । यस व्यवसायबाट वार्षिक आम्दानी ४ लाख जति हुन्छ । यसैबाट घर खर्च, छोराछोरीलाई पढाउन र अलि अलि बचत गर्न पुगेको छ । अहिले सम्म कुनै तालिम लिएको छैन । परम्परागत रूपमा नै तरकारी खेती गर्दै आएका छौ । आफै स्वज्ञान, अरुको देखासिकी गरेर तरकारी खेती गर्दै आएका छौ । गत वर्ष २०७८ सालमा अनुदानमा टनेल पाएको थिए । दुईवटा टनेलमा तरकारी खेती गछौ । अहिले सम्म कुनै ऋण लिएको छैन । तरकारी बेचेर आएको पैसा दैनिक ३ हजार सहकारीमा जम्मा गछौ । छोराछोरीलाई बोर्डिङमा पढायौ अहिले एउटा छोरा IT पढ्दै छ । अर्को छोरी BBA पढ्दै छे । ठूली छोरी यही तरकारी खेती गरेर बचत गरेको पैसाले अष्ट्रेलिया पठायौ । अहिले सम्म यही व्यवसायले धानेको छ । श्रीमान्‌ले जागिर छोडेर किराना पसल गर्नुहुन्छ । तरकारी बेच्न राती १२ बजे उठेर जानुपर्छ । त्यसैले प्रायजसो श्रीमान् बेच्न गएर सहयोग गर्नुहुन्छ । म घरको धन्दा र बाँकी समय तरकारी खेतीमा दिन्छु ।

गत वर्ष २०७७ सालमा कोरोनाले गर्दा व्यवसाय ठप्प भयो । त्यो बेला निकै गाहो भयो । तरकारी बोटमा नै कुहिए । त्यो बेला निकै घाटा भयो । अहिले विस्तारै बजार राम्रो हुँदै गएको छ, तर पनि समयमा मल बिउँ नपाउने हुँदा गाहो हुन्छ । बजारीकरणको समस्या छ,

उचित मूल्य छैन कतिले त घरबाटै बेच्नु हुन्छ तर मूल्य नै पदैन । यहाँ पनि त्यस्तै छ । त्यही पनि घरमा खाली सुतेर बस्नु भन्दा आफूले केही इलम गर्दा अरको अगाडि हात थाप्नु नपर्ने, सबैले इज्जत गर्ने हुँदा काम गर्न मन लाग्छ । विवाह गरेर भित्रिदाको दिनदेखि यही व्यवसाय गरेको नमरिन्जेल सकिन्जेल गर्दू जस्तो लाग्छ । आफूसँग पैसा भए पछि कोहीसँग सोध्न नपर्ने, बिमारी हुँदा पनि औषधी उपचार गर्न जान सजिलो नत्र यो छोरामान्छे कमताका हुन्छन् बुढी विरामी भयो पैसा दिनुभन्दा अडकलेर दिन्छन् । आफूसँग पैसा भएपछि लैदेउ पनि भन्नु नपर्ने आफै लगि दिन्छन् आफ्नो खर्च हुन्न नि उनी भन्छन् ।

### घटना अध्ययन - ५

मिति : २०७९/१/४

बागमारा -३३ की ४० वर्षिया के.सी. टक्सारबाट बागमारा आएर ४ आना जग्गा किनी घरमात्र बनाएर १ छोरा, १ छोरी र श्रीमान् श्रीमति गरी ४ जनाको परिवार बस्दै आएकी छिन् । उनी छोराछोरी बोर्डिङमा राम्रो शिक्षाको लागि पढाउन टक्सारबाट भरेकी हुन् । उनले द कक्षा पूरा गरेकी छिन् ।

के.सी.का अनुसार छोराछोरीको उज्जवल भविष्यको लागि बागमारा भरेकी उनी मेहेनती किसान हुन् । उनी वि.सं. २०७४ सालबाट मात्र तरकारी व्यवसायमा लागेकी हुन् । श्रीमान् स्कुलमा गार्डको काम गर्नुहुन्छ, म तरकारी खेती गर्दू । आफ्नो जग्गा जम्मा ४ आना मात्र छ । त्यसमा घर बनाउदै ठिक्क भयो । अरुले तरकारी खेती गरेको देख्दा रहर लायो । केटाकेटी पनि ठूला भए त्यसैले व्यवसायिक रूपमा तरकारी खो गर्नको लागि ५ रोपनी जग्गा भाडामा लिएकी छु । यस खेतीबाट राम्रो आम्दानी भएको छ । फुर्सदको समय सुतेर बिताउनुभन्दा कार्यमूलक क्षेत्रमा लगाउँदा उता बेचेर पैसा पनि पाइयो । आफ्नो घर खर्च, छोराछोरीको पढाई खर्च यसैले धानेको छ भनेर उनी भन्छन् । परम्परागत रूपमा नै तरकारी खेती गर्दै आउनुभएको उहाँले तालिम लिनु भएको छैन । काहि कतैबाट अनुदान पाउनु भएको छ भनेर सोध्दा टाठा बाठाको लागि मात्र रहेछ, हामी जस्तालाई नदिदा रहेछन् । आफ्नो मान्छे, बोल्ने मान्छेलाई मात्र दिदा रहेछन् । आजसम्म आफ्नो लगानीमा नै सबै सामग्रीहरु किन्दै आएको छु ।

तरकारी खेती गर्नको लागि बैंकबाट ऋण लिएर सुरुवात गरे, “यत्रो धेरै ऋण लिएर अरुकोजग्गामा तरकारी खेती गरेर के उभो लाग्ला” भनेर छिमेकीहरुले भन्ने गर्थे । लगभग

५ वर्षमा ऋण सकिन लागेको छ । तरकारी व्यवसाय नि राम्रो हुँदै गएको छ । छोराछोरीले नि राम्रो पढन पाएका छन् । अहिले प्रगति देखेर सबै दङ्ग पर्छन् । पहिले सासु सुसराले गाउँमा नै आइज बुढाको तलबले आनन्दले बसेकी छे भन्ये तर अहिले व्यवसाय गरेको देखेर खुशी हुनुहुन्छ । उता गाउँमा मेरी बुहारी कति मेहेनती छे भन्दै हिडनु हुन्छ भनेर छिमेकी आफन्तले सुनाउँदा दङ्ग लाग्छ । आफूले मेहेनत गरेर व्यवसाय गरेपछि सबैको हेर्ने नजर नि फरक हुँदो रहेछ । आफूले कमाएकोबाट मासिक ५००० ढुकुटी खेल्छु । अलि अलि सहकारीमा जम्मा गरेकी छु । बाँकी ऋणको किस्ता तिर्छु । श्रीमान्को पैसामा अलि अलि मिसाएर घर खर्च, छोराछोरीको खर्च हुन्छ । आमा समूहको सदस्य पनि छु । पहिले बोल्न नि लाज लाग्यो । अहिले ४, ५ जनाको अगाडि बोल्न सकिने भएकी छु ।

#### घटना अध्ययन - ६

मिति : २०७९/१/३

भरतपोखरी बागमारा -३३ की ४२ वर्षिय सुवेदी व्यवसायिक तरकारी खेती गर्ने एक मेहेनती किसान हुन् । उनले एस.एल.सी. सम्मको शिक्षा पुरा गरेकी छन् ।

सुवेदीका अनुसार माइतमा रहँदा खासै तरकारी खेतीको बारेमा जानकारी नभएको पढने, खेल्ने गरेर दिन बित्थ्यो । खेतबारीमा भनेको धान रोप्दा मात्र गइन्थ्यो तर विवाह पश्चात श्रीमान्को घरमा तरकारी खेती गर्नु हुँदो रहेछ । यहाँ आएपछि सासु ससुराले तरकारी लगाउन सिकाउनु भयो । विस्तारै विस्तारै सिक्कै गए अधिल्लो वर्ष २०७८ सालमा आलु मात्र बेचेर मैले एक लाख कमाए । श्रीमान् विद्यालयमा गार्डको काम गर्नुहुन्छ । विहान बेलुका सहयोग गर्नुहुन्छ । २ छोरी र १ छोरा छन् । तिनीहरूले नि सकेको समयमा सहयोग गर्दछन् । अहिले हाम्रो पाँच जनाको परिवार राम्रोसँग चलेको छ । पहिले पहिले तरकारी लगाइन्थ्यो तर बेचबिखन गर्न गाहो थियो । आफू राती नै उठेर डोकोमा बेच्न हिडनु पर्यो तर अहिले यातायातको सुविधा साथै घरमा नै लिन आउँछन् । म चाहि घरबाट नै बेच्छु । व्यापारीहरु यही आउँछन् किन्न । सिधै व्यापारीहरूलाई नै बिक्री गर्दा सजिलो भएको छ । पहिले आफै लैजाँदा तरकारी सबै नबिक्ने, ओइलाउने जस्ता समस्या हुँदा व्यापार राम्रो नभएपछि पैसा पनि राम्रो हुने कुरा भएन । अहिले व्यापारीहरु नै स्वयम् आउने हुँदा सजिलो भएको छ । व्यापार राम्रो भए पछि त काम गर्न जागर पनि चल्दो रहेछ ।

उहाँले तरकारी खेतीसँगै भैसी र मौरीपालन पनि गर्दै आउनु भएको छ । तरकारीको लागि मल चाहिन्छ, त्यसैले २ ओटा भैसी पनि पालेको छु । भैसीको दुध बेच्छु । मौरीको १० ओटा घार छन् । त्यसबाट मह निकाल्छु र बेच्छु । ग्राहकहरु घरमा नै आउनु हुन्छ । यही व्यवसायबाट घर खर्च, छोराछोरीको पढाई खर्च चलेको छ । मौरीपालन गरेको त बल्ल ५ वर्ष भयो । व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतीमा लागेको लगभग १५, २० वर्ष भयो होला । ठूली छोरीको विवाह गरे यही कमाईले एउटा छोरी यही क्याम्पस पढौदै छे । छोरालाई अष्ट्रेलिया पठाए । अहिलेसम्म कुनै ऋण लागेको छैन । बैंकमा बचत भएको पैसा जम्मा गँड्हौं । सहकारीमा श्रीमान्को मेरो २, २ लाखको सेयर छ । आमा समूहमा पनि अलि अलि बचत गर्ने गरेकी छु । सुन लगभग ६ तोला जति जोडेकी छु । श्रीमान्सँग हात थाप्नु पैदैन । श्रीमान्को भन्दा मेरो आम्दानी बढी हुन्छ । आफूलाई मन लागेको लगाउन, खान, स्वास्थ्य उपचारमा खर्च गर्न पाउँछु । खुशी छु आफूले सकेको गरेर आफ्नो कमाइमा बाच्न पाउनु पनि ठूलो कुरा हो नि ।

पहिले पहिले संगोलमा हुँदा सासु ससुराले आम्दानी राख्नु हुन्थ्यो । आफ्नो कमाई भन्ने थिएन । गाहो थियो । छोराछोरीको पढाई खर्च, कापी, कलम किन्न नी गाहो हुन्थ्यो । मारदा पनि रिसाउने आफूलाई मन लागेको पनि केही लगाउन खान जान नपाइने । अरु छिमेकीले लगाएर हिडेको देख्दा नि आफूले नि कहिले यसरी लगाएर हिडन पाइने होला जस्तो लाग्थ्यो । काही घुम्न जान त परको कुरा माइतसम्म नि जाने पैसा हुँदैन थियो । आजभन्दा १५ वर्ष अघि छुटेर बस्यौ । अनि आफूले जानेको सिप त्यही तरकारी रोप्ने थियो । त्यही जानेको सिपको प्रयोग गर्दै केही सिक्दै आज यहाँसम्म आइयो । अहिले त सासु ससुरा नि दझ छन् । बुहारीले मेहनत गरेर यहाँसम्म पुरी भनेर । वि.सं. २०७७ सालमा कृषि अनुदान भनेर पानी छर्ने हजारी टयाङ्गी, पाइप, पानी तान्ने मोटर दिएको थियो । लगभग ५ रोपनी जग्गामा मौसमी तथा बेमौसमी तरकारी लगाउँछु । ३ वटा टनेल छ । वार्षिक ७, ८ लाख आम्दानी हुन्छ । तरकारी लगाउने गोडमेलको लागि खेताला पनि हाल्ने गरेकी छु । आफूले पनि सब्दो मेहेनत गर्ने गर्छु । यसरी नै आफ्नो दैनिकी चलेको छ भनेर उनी बताउँछिन् ।

भरतपोखरी बागमारा ३३ निवासी ५५ वर्षिया अधिकारी व्यवसायिक तरकारी खेती गर्ने किसान हुन् । १७ वर्ष नपुग्रदै विवाह बन्धनमा बाँधिएकी अधिकारीको २ छोरा, १ छोरी, श्रीमान् र आफू सहित ५ जनाको परिवार छ । उनले कक्षा ८ सम्म पढेकोले शिक्षित महिलाहरुमा पर्छिन् ।

खेतीपाती त पहिल्यैदेखि गर्ने गरेको तर व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गर्न थालेको १५ वर्ष भयो । तरकारी खेती गर्नुभन्दा अघि खेतीपाती गरिन्थ्यो । बारीमा तरकारी त लगाउँथ्यौ तर घरमा तरकारी खानको लाग मात्र प्रयोग गरिन्थ्यो । श्रीमान् विदेश जाने आउने गर्नुहुन्थ्यो । म सासु ससुराको रेखदेख, छोराछोरी पालनपोषण, भैंसी, बाखा, कुखुरा हेरविचार गर्दै दिन बित्थ्यो । कहिलेकाँही मेलापात जान्ये । छोराछोरी हुक्कदै गए । सासु ससुरा नि बित्नु भयो । घर वरपरका छिमेकीले तरकारी लगाएर बेचेको देख्दा रहर लागेर मैले पनि तरकारी खेती गर्दू भनेर श्रीमान्लाई भन्दा बसी बसी खान पाउँदा पाउँदा किन दु : ख गर्देस् पद्दैन भन्तु भयो । म विदेशमा दु : ख गरेर कमाएको छु, तलाई घर व्यवहार बिगार्न मन छ कि के हो भनेर गाली गर्नु भयो । त्यै पनि १ महिना जति चुप लागे पछि फेरीश्रीमान्लाई फकाएर तरकारी खेती गर्न थाले पहिले त राम्रो फलेन तर कृषि कार्यालयबाट २ दिने कृषि तालिम दिएको रहेछ । त्यहाँ गएर तालिम लिएर आएपछि अलि अलि ज्ञान भयो । त्यसपछि व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गर्न थालेको आजसम्म गर्दै छु ।

वार्षिक आमदानी ५, ६ लाख हुन्छ । श्रीमान् अहिले घरमा नै बस्नु हुन्छ । मलाई बारीमा सघाउनु हुन्छ । छोरीको विवाह गरे, उसको विवाह खर्च मैले कमाएको सम्पत्तीबाट गरिदिएको हो । ठूलो छोरा अमेरिका छ । त्यसलाई पनि जाने बेला मैले नै सहयोग गरेकी हुँ । सानो छोरा कम्प्युटर इन्जिनियर पढ्दै छ । बैंकमा अलि अलि ऋण छ । दु : ख सु : ख गरेर तिदै छु । श्रीमान्को विदेशबाट ल्याएको पैसा खासै धेरै थिएन । मैले श्रीमान्को भन्दा बढी कमाएको छु । छोरीलाई गहनाहरु बनाईदिए । बिहेको खर्च गर्दा लगभग २५ लाख सकिएको थियो । अहिले श्रीमान्ले पनि बारीमा सघाउने हुँदा सजिलो भएको छ । ४ ओटा टनेल छ । मौसमी तरकारीहरु लगाउँछु । बेमौसमी चाहिँ धेरै लगाउँदिन । व्यापारीहरु,

डोकेहरु यही घरमा नै तरकारी किन्न आउँछन् । डोकेहरले खासै भाउ दिदैनन् । व्यापारीहरुले डोकेहरले भन्दा अलि बढी मूल्य दिन्छन् । व्यापारीहरु नै यही आएर तरकारी लैजाने हुँदा बेच्नको समस्या हुँदैन तर हाम्रो र बजारको भाउ आकाश जमिनको फरक हुन्छ । उचित मूल्य पाइदैन । पहिले पहिले त आफै बेच्न जान्थे । यातायातको असुविधा राती नै उठेर तालचोक जान्थ्यै । त्यसपछि त्यहाँबाट गाडी चढेर बजार (पोखरा) जान्थ्यै । अहिले त यही घरमा नै आएर लैजान्छन् । त्यही सजिलो भएको छ । हामी बुढाबुढी मिलेर दैनिक ५ घण्टा जति तरकारी बारीमा काम गर्छौं । घर खर्च छोराको पढाई खर्च गरेर बाँकी भएको बैकको ऋण तिछौं । अलि अलि सहकारीमा बचत पनि गर्नै गरेकी छु । मासिक ५,००० को छिमेकीहरु मिलेर ढुकुटी पनि खेल्छौं । व्यवसायिक तरकारी खेती गरेपछि आर्थिक रूपमा चाँहि बलियो भएका छौं । कोहीसँग ऋण मागे मनि पत्याउँछन् । आफूसँग आम्दानीको बाटो भएपछि चाँहि आत्मविश्वास बढ्दो रहेछ । व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गर्नुभन्दा पहिले १ रूपैयाँको लागि पनि श्रीमान्‌को भर पर्नु पर्थ्यो । “माइत जाँदा नि पैसा नभएर गाडी नचढी हिडेर गएकी थिए । त्यसैले आफ्नो कमाई हुनु पर्दो रहेछ कोहीको अगाडि हात थाप्नु नपर्ने, अहिले तरकारी बेचेर आएको पैसा मेरो खातामा बचत हुन्छ । छरछिमेक पनि योसँग पैसा छ भने व्यवहार नै अकै गर्दा रहेछ । समाजमा पनि हेपिएर बस्नु नपर्ने श्रीमान्‌हरुले पनि नहेप्ने रहेछन् । पहिले त्यही श्रीमान्‌हुन् अर्काले दुःख गरेर कमाएको सम्पत्तीमा मोज गरेर बसेकी छेस् भनेर भगडा गर्थे तर अहिले केही भन्दैनन् मसँगै काम सधाउनु हुन्छ । व्यापारीहरुसँग मूल्यमा मोल गर्नुहुन्छ । बारीमा काम गर्दा दुःख हुन्छ तर पनि दुःख पछि सुःख आउँछ भन्दै काम गर्नै गरेकी छु । व्यवसायिक तरकारी खेती गर्दाका समस्याहरु के के पाउनु भयो भनेर प्रश्न सोध्दा सबैभन्दा पहिले त उचित मूल्यको अभाव छ, पर्याप्त मात्रामा सिचाई छैन, मल बिउँ पाइदैन, तरकारीमा रोग लाग्दा, किरा लाग्दा दक्ष प्राविधिकहर पाइदैन, यातायात भनेको बेला पाइदैन र भाडा महङ्गो छ ।

विभिन्न समस्याहरु हुँदा हुँदै पनि आफूले जे सक्छौ, जस्तो सक्छौ, त्यस्तै गरेर अगाडि बढेका छौं । मल, बिउँ भनेको बेला पाइदैन । अहिले पनि मल छैन भनेको छन् । हामीले परम्परागत रूपमा नै तरकारी रोप्दै आएका छौं । बिउँहरु हाइब्रिड आउँछ । आजभोलि बजारमा त्यही लगेर लगाउनी हो कहिले बेसरी राम्रो फल्छ, कहिले फल्दै फल्दैन कुनै कुनै बोटमा त अधिल्लो साल (२०७७) काक्रोको बिउँ राम्रो परेछ बेसरी फल्यो । काक्रो मात्र

बेचेर १ लाख कमाए । यसरी नै दु : ख सु : ख गरेर तरकारी खेती गरेर घर धानेकी छु । एउटा सफल व्यवसायी बन्न पाउँदा खुसी लाग्छ ।

## घटना अध्ययन - ८

मिति : २०७९/१/५

भरतपोखरी बागमारा ३३ निवासी ३७ वर्षिया सुवेदी मेहेनती किसान हुन् । उनी १२ कक्षा पास गरेकी शिक्षित किसान हुन् । व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतीमा लागेको १५ वर्ष भएछ । २ छोरी, १ छोरा र श्रीमान् श्रीमति गरेर ५ जनाको परिवार छ ।

वि.सं. २०६४ सालमा विवाह गरेर बागमाराको कालिकास्थानमा भित्रिएकी हुन् । घरमा भित्रिए देखि नै खेतीपातीमा लागेकी उनी सोही वर्षदेखि नै व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गर्दै आएको बताउँछिन् । उनले वरपरका छरछिमेकी सबै जनाले तरकारी रोपेको देखेर आफूलाई नि रहर लागेर तरकारी व्यवसाय गरेको उनी भन्छिन् । “नौलो बुहारी कहाँ तरकारी व्यवसायमा लागेको मान्छेले के भन्नलाई छोरी मान्छे घरको कामकाज गर्ने हो बाहिर हिड्नु हुँदैन यस्ताले कसरी घर व्यवहार धान्छन्” जस्ता कुरा सुन्नु परेको तर श्रीमान्‌को कमाई पनि आफ्नो मोजमस्तीमा साथीभाई घुमफिरमा उडाउने हुँदाँ छोराछोरीको स्कूल फि समेत तिर्न धौ धौ परेको हुनाले श्रीमान्‌लाई सोध्यै नसोधी तरकारी खेती गर्न थाले । तरकारी पनि राम्रै उत्पादन भएको थियो । यहाँ तरकारी बेच्न सजिलो छैन । आफू जान राती राती गरेर जानु पर्छ । श्रीमान्को साथ नहुँदाँ र श्रीमान्‌ले बाहिर हिड्डुल गर्न नदिदाँ यही गाडी लिएर आउने व्यापारीलाई सस्तो मूल्यमा तरकारीहरु बेचिदिए । त्यसबाट आएको पैसाले घर व्यवहार छोराछोरीको स्कूल फि तिर्दा ठिक्क भयो । बिस्तारै यसरी नै तरकारी खेतीबाट आम्दानी हुँदै गएपछि श्रीमान्‌ले पनि साथ दिई जानु भयो । पहिले सधैँ यही कुरामा भगडा हुन्यो भने अहिले दुवै जना मिलेर व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतीमा लागेका छौँ । लगभग ३ रोपनी जग्गामा तरकारी लगाउँछौ । आम्दानी पनि मासिक २ लाख जति हुन्छ । राम्रो छ । तालिम लिनु भएको छ भनेर प्रश्न गर्दा तालिम त लिएको छैन तर तालिम लिएकाले भन्दा बढी गछौ भनेर भन्नु भयो । सस्तो मूल्यमा तरकारी व्यापारीहरुलाई बेच्नु पर्दा चाहिँ मन दुख्छ । कहिले काहिँ धेरै पानीले पनि तरकारी कुहिन्छ जसले गर्दा घाटा पर्छ । मेहेनत अनुसारको मूल्य पाइदैन आफै बेच्न जान सजिलै बजार नपाइने हुँदा सस्तो मूल्यमा तरकारी बेच्ने गरेको बताउनु हुन्छ ।

व्यवसायिक तरकारी खेती गर्नुभन्दा अघि र पछिको अवस्थामा के फरक पाउनु भयो भन्दा धेरै फरक पाएको छु नि गाउँघरमा इज्जत नै अर्कै दिन्छन् पहिले कसैले वास्ता गर्दैन थिए । अहिले सरसापटको लागि पनि पत्याउँछन् । आमा समूहमा सचिवको पदमा राखेका छन् । साथीहरुको अगाडि बसेर बोल्न सक्ने भएको छु । आफ्नो घर व्यवहार आनन्दले धानेकी छु । श्रीमान्‌को सपोर्ट पाएको छु । छोरा छोरी बोर्डिङ स्कूल पढ्छन् । आफ्नो नाममा बचत गरेकी छु । यस व्यवसायिक तरकारी खेती गरेपछि मेरो दैनिकी परिवर्तन भएको छ भनेर बताउनु हुन्छ ।

## अनुसुची ख

कृषकहरुको लागि अन्तवार्ता अनुसुची:-

उत्तरदाताको नाम र थर :-.....

उमेर :-..... भाषा :-.....

धर्म :-..... जात :-.....

१) वैवाहिक स्थिति ?

क) विवाहित ख) अविवाहित ग) एकल घ) अन्य.....

२) तपाईंको परिवारको संरचना कस्तो छ ?

क) एकात्मक ख) संयुक्त

३). तपाईंको परिवारमा कति जना सदस्य हुनुहुन्छ ?

क) जम्मा .....

४) तपाईंको शिक्षाको अवस्था ?

क) निरक्षर ख) साक्षर (सामान्य लेखपढ) ग) नि. मा. वि.

घ) मा. वि. ड) मा. वि. भन्दा माथि

५) तपाईंको घरमा खेती योग्य जमिन कति छ ?

क) ० देखि १ ख) १ देखि ३ रोपनी ग) ३ देखि ५ रोपनी

घ) ५ रोपनी भन्दा माथि ड) कति पनि छैन

६) यदि जग्गा छैन भने कसरी तरकारी खेति गर्नु भएको छ ?

क) भाडामा ख) अदियामा

७) तपाईंको जग्गा जमिन कसको नाममा छ ?

क) श्रीमान् र श्रीमती ख) बुवाआमा ग) अन्य.....

८). तपाईंको कृषि पेशा बाहेक अन्य पेशा छ ?

क) छ ..... ख) छैन

९) तपाईंको जग्गामा के के लगाउनु हुन्छ ?

क) अन्नबाली ख) तरकारी ग) फलफूल घ) अन्य.....

- १०) व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेती गर्न लाग्नु भएको कति भयो ?  
 क) ० देखि १ वर्ष                  ख) १ देखि २ वर्ष  
 ग) २ देखि ३ वर्ष                  घ) ३ देखि ४ वर्ष  
 ड) ४ देखि ५ वर्ष                  च) ५ वर्ष भन्दा बढी
- ११) व्यवसायिक रूपमा तरकारी खेतीतर्फ किन आकर्षित हुनुभयो ?  
 क) अरुको देखेर      ख) बेरोजगारी भएर ग) आफै ज्ञानले      घ) अन्य
- १२) खेतबारिमा कति महिना तरकारी लगाउनुहुन्छ ?  
 क) ३ महिना                  ख) ६ महिना                  ग) वर्षै भरि
- १३) तपाईं कुन तरकारी उत्पादन गर्नुहुन्छ ?  
 क) मौसमी                  ख) बेमौसमी                  ग) दुवै
- १४) कुन तरकारी बाली लगाउँदा बढी आम्दानी हुन्छ ?  
 क) मौसमी                  ख) बेमौसमी
- १५) तरकारी उत्पादनबाट वार्षिक कति आम्दानी हुन्छ ?  
 क) ०-१० हजार      ख) १०-२० हजार      ग) २० - ३० हजार  
 घ) ३०-४० हजार      ड) ४० - ५० हजार      च) ५० हजार भन्दा माथि
- १६) तरकारी उत्पादनबाट हुने आम्दानी के मा खर्च गर्नु हुन्छ ?  
 क) घरायसी खर्च                  ख) शिक्षा                  ग) स्वास्थ्य  
 घ) पुन उत्पादनमा लगानी      ड) अन्य.....
- १७) आम्दानीको खर्च गर्ने निर्णय कसले गर्दछ ?  
 क) तपाईं स्वयम्                  ख) श्रीमान्                  ग) परिवारमा सबैको सल्लाहमा
- १८) तरकारी उत्पादनमा क - कसले सहयोग गर्नुहुन्छ ?  
 क) महिला (आफू मात्र)      ख) पर्म लगाएर      ग) परिवारका अन्य सदस्यहरूले  
 घ) पुरुष (लोगने)                  ड) ज्यालादारी
- १९) कति घण्टा खेतबारीमा समय विताउनुहुन्छ ?  
 क) ० - २ घण्टा                  ख) २ - ४ घण्टा ग) ४ - ६ घण्टा  
 घ) ६ - ८ घण्टा                  ड) ८ घण्टा भन्दा बढी
- २०) तरकारी उत्पादन सम्बन्धी तालिम पाउनु भएको छ ?  
 क) छ                  ख) छैन

- २१) तालिम प्राप्त गर्नु भएको भए कसले दिएको थियो ?  
 क) जिल्ला कृषि कार्यालय      ख) गैर सरकारी संस्था  
 ग) आमा समूह                          घ) सहकारी                          ड) अन्य.....
- २२) तपाईं कस्तो मल बिऊ र प्रविधिको प्रयोग गर्नुहुन्छ ?  
 क) परम्परागत      ख) आधुनिक                          ग) दुवै
- २३) उपकरणको प्रयोगमा कत्तिको समस्या परेको छ ?  
 क) छ    ख) छैन
- २४) विउबिजनमा कत्तिको गुणस्तर पाउनु भएको छ ?  
 क) छ    ख) छैन                                  ग) अन्य.....
- २५) विउबिजन कत्तिको सहज रूपमा पाउनुभएको छ ?  
 क) छ    ख) छैन                                  ग) अन्य.....
- २६) रासायनिक मल र प्राङ्गारिक मल पर्याप्त रूपमा पाउनु भएको छ ?  
 क) छ    ख) छैन                                  ग) अन्य .....
- २७) तरकारी खेतीमा अनुदान पाउनु भएको छ ?  
 क) छ    ख) छैन
- २८) यदि पाउनु भएको छ भने कति पाउनु भएको छ ?  
 क) १ हजार देखि ५ हजार                          ख) ५ हजार देखि १०,०००  
 ग) १० हजार देखि १५०००                          घ) १५ हजार देखि २००००  
 ड) २० हजार देखि २५०००                          च) अन्य.....
- २९) तरकारी खेती गर्नको लागि कामदारहरु कत्तिको सहज रूपमा पाउनु भएको छ ?  
 क) सहज रूपमा      ख) असहज                          ग) अन्य .....
- ३०) खेतबारीमा सिचाइ सुविधा छ ?  
 क) पर्याप्त                                  ख) अपर्याप्त                          ग) अलिअलि
- ३१) सिचाइको स्रोत के हो ?  
 क) कुलो    ख) खानेपानीको धारा                          ग) स्थानीय मूल                          घ) अन्य ..
- ३२) तरकारी उत्पादनबाट जम्मा हुने आम्दानी बचत गर्नु भएको छ ?  
 क) छ    ख) छैन

- ३३) यदि बचत गर्नु भएको छ भने कहाँ गर्नु भएको छ ?  
 क) समूहमा            ख) सहकारीमा            ग) बैड्कमा            घ) अन्य.
- ३४) बचत कसको नाममा छ ?  
 क) महिला (स्वयम्) ख) श्रीमान्            ग) अन्य.....
- ३५) बचत गर्नुभएको पैसाले केमा लगानी गर्नुभएको छ ?  
 क) शेयरमा लगानी            ख) जग्गा जमिन जोडेको  
 ग) गरगहना किनबेच            घ) अन्य.....
- ३६) तरकारी उत्पादन गर्नुभन्दा पहिले र अहिले केही फरक महसूस गर्नुभयो ?  
 क) छ                                  ख) छैन
- ३७) फरक पाउनुभयो भने के के पाउनुभयो ?  
 क) आत्म सम्मानमा वृद्धि            ख) पारिवारिक प्रक्रियामा सहभागिता  
 ग) आर्थिक स्तरमा वृद्धि            घ) अन्य.....
- ३८) बिक्री नभएका तरकारीहरु के गर्नुहुन्छ ?  
 क) कोल्ड स्टोरमा राख्ने            ख) सुकाएर राख्ने  
 ग) मलको रूपमा प्रयोग गर्ने            घ) अन्य ...
- ३९) तपाईंको कृषि फर्म दर्ता छ ?  
 क) छ                                  ख) छैन
- ४०) तपाईं कुनै संस्थामा आबद्ध हुनुहुन्छ ?  
 क) आमा समूह            ख) कृषक समूह            ग) टोल विकास संस्था            घ) अन्य...
- ४१) तरकारी उत्पादन पछि तपाईंमा के के परिवर्तन भए जस्तो लाग्छ ?  
 क) आर्थिक प्रगति                                  ख) समाजमा मान सम्मान  
 ग) शिक्षा र स्वास्थ्यमा सुधार            घ) आत्मनिर्भर
- ४२) तरकारी उत्पादन पछिको तरकारी बेचविखन कसरी गर्नुहुन्छ ?  
 क) स्वयम्                                  ख) श्रीमान्                          ग) घरमा लिन आउँछन्  
 घ) दुवै ( श्रीमान् र श्रीमति )            ड) अन्य.....
- ४३) तरकारीको मूल्य निर्धारण कसले गर्नुहुन्छ ?  
 क) महिला                                  ख) पुरुष                                  ग) दुवै                                  घ) अन्य.....

- ४४) तरकारी बेचबिखन कसलाई गर्नु हुन्छ ?  
क)व्यापारीलाई      ख)मण्डीलाई    ग)स्वयम् उपभोक्तालाई    घ) अन्य....
- ४५) तरकारी बेचबिखनमा विचौलियाले गर्दा कत्तिको समस्या हुन्छ ?  
क) हुन्छ                  ख) हुदैन
- ४६) यदि समस्या परेको छ भने के के परेको छ ?  
क) मूल्य निर्धारणमा      ख) बजारीकरणमा                  ग) अन्य.....
- ४७) तरकारी उत्पादन गर्ने कममा कुन - कुन समस्या भोग्नुभयो ? उल्लेख गर्नुहोस् ।
- .....  
.....  
.....
- ४८) यदि समस्या भोगेको भए ती समस्याको समाधान कसरी गर्नु भयो ?
- .....  
.....  
.....

## अनुसुची ग

अध्ययनक्रमका तस्वीरहरु



(वडा नं. ३३ को महिला कृषकसँग अन्तरवार्ता लिदै शोधकर्ता)



(महिला कृषक तरकारी वारीमा)



(महिला कृषक तरकारी वारीमा)



(शोधकर्ताले तरकारीवारीको अवलोकन)



(वडा नं. ३३ को महिला कृषकसँग अन्तरवार्ता लिई शोधकर्ता)